सम्पादकीय

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उच्च शान

क़ैसर रूम जैसे महान बादशाह ने इच्छा की कि काश मुझे उनसे मिलना नसीब होता और मैं उनके पांव धोया करता।

सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने ख़ैरुल बशर, अफ़ज़लुर्रसुल, सब नबियों का सरदार और ख़ातमुन्नबिय्यीन बनाकर मबऊस फ़रमाया। आप सृष्टि के जन्म का मूल हैं। हदीस क़ुदसी है कि हे मुहम्मद अगर तुझे पैदा करना मक़सूद ना होता तो मैं कायनात को पैदा ना करता। आप ने ख़ुद फ़रमाया اَنَاسَیِّدُوُلْدِ اٰدَمَ मैं नस्ल आदम का सरदार हूँ। अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में अपनी मुहब्बत हासिल करने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी को ज़रूरी क़रार दिया है। इसी तरह अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में आप के कर्म को अपना कर्म और आप की बैअत को अपनी बैअत क़रार देता है। आप के बहुत उच्च आचरण पर होने की गवाही देता है और आप को रूहानी दुनिया का चमकता हुआ सूरज बताता है। जहां तक मानव जाति से आप (स) की मुहब्बत का प्रश्न है ,तो वह इतनी अधिक थी कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हे मुहम्मद क्या तू इस ग़म में अपने आप को हलाक कर लेगा कि ये लोग क्यों ईमान नहीं लाते। ईमान न लाने के कारण नतीजा में जिस उच्च हस्ती की मार्फ़त से वे वंचित थे ग़म दरअसल आप को उन की इस महरूमी का था। हक़ीक़त यह है कि अल्लाह तआला से आप की मुहब्बत और मानव जाति से आप की हमदर्दी का सही अंदाज़ा लगाना और आप की उच्च शान को समझना किसी के सामर्थ्य की बात नहीं।

जितना आप का उच्च मुक़ाम था उतना ही आप से दुश्मनी सबसे ज़्यादा की गई। सबसे अधिक गालियां आप को दी गईं। सबसे ज़्यादा एतराज़ आप पर किए गए। करोड़ों किताबें इस्लाम और इस्लाम के धर्म के संस्थापक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात और क़ुरआन करीम के ख़िलाफ़ प्रकाशित की गईं। तीन हज़ार बल्कि इस से भी अधिक आरोप किए गए। नापाक हमले और बहुत अधिक दिलों को पीड़ा देने वाली गालियों में पादरी साहिबों का नम्बर सब से पहला था। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"वास्तव में पादरी साहिब तिरस्कार और धृष्टता और गालियां देने में प्रथम नंबर पर हैं। हमारे पास ऐसे पादरियों की किताबों का एक भण्डार है जिन्होंने अपनी लेखनी को सैंकड़ों गालियों से भर दिया है।

(नूरुल क़ुरआन नंबर 2,रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 9, पृष्ठ 375)

आप फ़रमाते हैं :

"मैं दावा के साथ कहता हूँ कि मुस्लिम की हदीस की इच्छा के अनुसार जो अभी मैं वर्णन कर आया हूँ अगर हम हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के जन्म से से आज तक उन लेखिनयों के माध्यम से जो कि हमें मिले हैं दुनिया के समस्त ऐसे लोगों की हालत पर नज़र डालें जिन्होंने दज्जालियत का अपने ज़िम्मा काम लिया था तो इस ज़माना के पादरियों की दज्जालियत की तुलना हरगिज़ हम को नहीं मिलेगी।

(इज़ाला औहाम, रुहानी ख़ज़ायन, जिल्द 3 , पृष्ठ 362)

किताब "किताबुल बरिया में आप फ़रमाते हैं :

"बहुत से पादरी इस समय ब्रिटिश इंडिया में ऐसे हैं कि जिनका दिन रात पेशा ही यह है कि हमारे नबी और हमारे सय्यद मौला आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां देते रहें। सब से गालियां देने में पादरी इमादुददीन अमृतसरी का नंबर बढ़ा हुआ है वह अपनी किताबों "तहक़ीक़ुल ईमान" इत्यादि में खुली-खुली आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां देता है।

(किताबुल बरिया, रूहानी ख़ज़ायन ,जिल्द 13,पृष्ठ 120)

इस के बाद आपने कई एक पादरियों के नाम गिनवाए और उनकी किताबों का ज़िक्र किया जिनमें उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सख़्त से सख़्त गालियां दी हैं।

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर होने वाले एतराज़ का ना सिर्फ मुंह तोड़ जवाब दिया और ईसाई पादरियों का मुंह बंद कर दिया बल्कि आपका ज़िन्दा नबी होना और क़यामत तक आपके रूहानी फ़ैज़ का जारी रहना साबित कर दिखाया। एक के बाद एक शौकत वाले चैलेंज के साथ जिस शानदार रंग में आपने अपने आक़ा तथा मुताअ की रूहानी ज़िन्दगी का सबूत दिया है इस का उदाहरण पिछले तथा वर्तमान लोगों में हरगिज़ पेश नहीं किया जा सकता। पादरी अब्दुल्लाह आथम को आप ने पेशगोई के बाद जहन्नुम तक पहुंचा दिया जिस ने अपनी किताब "अंदरूना बाइबल" में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दज्जाल कहा था। लेखराम जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बिना रोक टोक गालियां दिया करता था,के बारे में आपने हलाकत की पेशगोई की जो बहुत शानदार अंदाज़ में पूरी हुई और आर्यों के घर-घर में मातम पड़ गया। अलेगज़नडर डोई आफ़ अमरीका जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को झूठा और झूठ घड़ने वाला समझता था और आप को गंदी और फूहड़ गालियां दिया करता था,के बारे में आपने पेशगोई फ़रमाई कि वह मेरी ज़िन्दगी में ही हसरत और अपमान के साथ मरेगा और ऐसा ही हुआ।

ऐसे ही एक मौक़ा पर जबकि एक पादरी ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात अक़्दस पर घिनौने एतराज़ात किए आपने उस को बहुत ही शानदार ख़ूबसूरत बड़ा ही तर्कपूर्ण और खामोश करने वाला जवाब दिया ऐसा जवाब जो दिल की गहराईयों में उतर जाने वाला जवाब है। जिस से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की महानता तथा शान और आपके उच्च मुक़ाम का पता चलता है। सय्यदना मसीह मौऊद

शेष पृष्ठ 27 पर

विषय सूची

1	सम्पादकीय	1
2	पवित्र क़ुरआन	2
3	हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सुनहरे उपदेश	4
4	मल्फ़ूज़ात- हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम	5
5	ख़िताब हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाह तआला जलसा सालाना कादीयान 2018 ई	6
6	नबियों का सरदार पुस्तक से एक ईमान वर्धक अध्याय	14
7	आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर के मुखिया के रूप में आदर्श	18
8	सीरत आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मानवता की रोशनी में	19
9	दरूद शरीफ की बरकतें तथा रूहानी प्रभाव	24

☆ ☆ ☆

ख़त्मे नबुव्वत के अर्थ हैं कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्थान सब नबियों से उत्तम तथा अफज़ल है

आपकी तसदीक़ के बग़ैर और आपकी शिक्षा की गवाही के बग़ैर कोई आदमी नबुव्वत या विलायत के मुक़ाम तक नहीं पहुंच सकता

وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ
اَفَا۠ئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ وَ مَنْ يَّنْقَلِبْ
عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَ سَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ

(सूरह आले इम्रान आयत 145)

अनुवाद :: और मुहम्मद नहीं है मगर एक रसूल । यक़ीनन इस से पहले रसूल गुज़र चुके हैं। अत: क्या अगर यह भी वफ़ात पा जाए या क़त्ल हो जाए तो तुम अपनी एड़ियों के बल फिर जाओगे ?और जो भी अपनी एड़ियों के बल फिर जाएगा तो वे हरगिज़ अल्लाह को कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेगा और अल्लाह यक़ीनन शुक्र गुज़ारूँ को बदला देगा।

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलराबे रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं :

इस कुरआन मजीद की आयत में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वफ़ात का स्पष्ट ऐलान किया गया है। जैसा कि फ़रमाया कि मुहम्मद भी अल्लाह के रसूल हैं और रसूल से बढ़कर कुछ नहीं और आप से पहले जितने रसूल थे सब वफ़ात पा चुके हैं। "ख़ला" का लफ़्ज़ जब मुतलक़ तौर पर किसी के बारे में बोला जाए तो इस से मुराद ऐसा गुज़रना नहीं जैसे कि मुसाफ़िर गुज़रता है बल्कि गुज़र जाने से मुराद है वफ़ात पा जाना। अत: अगर ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के रसूल थे तो निश्चित रूप से वफ़ात पा चुके हैं ।

(तर्जमतुल क़ुरआन हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलराबा रहमहुल्लाह पृष्ठ 108 संस्करण कादियान 2014 ई)

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَاۤ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَ لٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ
خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا

अनुवाद:: ना मुहम्मद तुम में से किसी मर्द के बाप थे ना हैं(ना होंगे)लेकिन अल्लाह के रसूल हैं बल्कि (इस से भी बढ़कर)नबियों की मुहर हैं और अल्लाह हर एक चीज़ से ख़ूब आगाह है ।

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह इस आयत की तशरीह में फ़रमाते हैं

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَا के शब्द क़ुरआन मजीद में हैं और अरबी का नियम है कि كَانَ (काना) इस्तिमरार (निरन्तरता) के अर्थ भी देता है। अत: हम ने इस्तिमरार के लिहाज़ से आयत का अनुवाद यह किया है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)ना किसी मर्द के बाप थे ना हैं ना होंगे।

नबियों की मुहर के बारे में आप ने फ़रमाया :

अर्थात आपकी तसदीक़ के बग़ैर और आपकी शिक्षा की गवाही के बग़ैर कोई आदमी नबुव्वत या विलायत के मुक़ाम तक नहीं पहुंच सकता। लोगों ने नबियों की मुहर की जगह आख़िरी नबी के अर्थ लिए हैं। मगर इस से भी हमारी पोज़ीशन में फ़र्क़ नहीं आता। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मेराज को मद्दे नज़र रखा जाए तो अंबिया का शिजरा मस्नद अहमद बिन हंबल के अनुसार इस तरह बनता है ।

सिदरुल मुनतिहा	मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम
सातवाँ आसमान	हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम
छठा आसमान	हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम
पांचवां आसमान	हज़रत हारून अलैहिस्सलाम
चौथा आसमान	हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम
तीसरा आसमान	हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम
दूसरा आसमान	हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तथा हज़रत यहया अलैहिस्सलाम
पहला आसमान	हज़रत आदम अलैहिस्सलाम

ज़मीन वाले

इस नक़्शा को देखें तो मख़लूक़ के मुक़ाम पर जो आदमी खड़ा होगा उस की नज़र सबसे पहले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पर पड़ेगी और सबसे आख़िर उस की नज़र मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पड़ेगी। मानो सब नबियों में आख़िरी नबी वह रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़रार देगा। इस के इलावा अगर इस हदीस को लें कि आदम अभी पैदा भी ना हुआ था , तब भी मैं ख़ात्मुन्नबिय्यीन था तो भी शिजरा अंबिया में रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मुक़ाम के लिहाज़ से ऊपर की जगह हासिल है। अत: जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेराज में सबसे ऊपर गए तो मुक़ाम मुहम्मदी आख़िरी नबुव्वत का मुक़ाम बना। इस तरह भी वही अर्थ ठीक रहे जो हम ने किए हैं। अर्थात ख़त्मे नबुव्वत के यह अर्थ हैं कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुक़ाम सब नबियों से अफ़ज़ल है।

(तफ़सीर सग़ीर पृष्ठ 695)

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ صَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝ وَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ اٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى
مُحَمَّدٍ وَّ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَ اَصْلَحَ
بَالَهُمْ

अनुवाद:: वे लोग जिन्होंने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका अल्लाह ने उनके कर्मों को तबाह कर दिया और जो ईमान लाए और उन्होंने ईमान के अनुसार अनुकरण किए और जो मुहम्मद (रसूलुल्लाह)पर नाज़िल हुआ ,इस पर ईमान लाए और वही उनके रब की तरफ़ से हक़ है। अल्लाह उनकी बुराइयों को ढाँप देगा और उनके हालात को दरुस्त कर देगा।

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَ الَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ
بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانًا ۫
سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي

التَّوْرٰىةِ ۚۖ وَ مَثَلُهُمْ فِی الْاِنْجِیْلِ ۚ۟ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰی عَلٰی سُوْقِهٖ یُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِیَغِیْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِیْمًا

(सूरह अलफतह 30)

अनुवादः: मुहम्मद रसूलुल्लाह और वे लोग जो उस के साथ हैं कुफ़्फ़ार के मुक़ाबला पर बहुत सख़्त हैं (और)आपस में बे-इंतिहा रहम करने वाले। तो उन्हें रुकू करते हुए और सजदा करते हुए देखेगा वे अल्लाह ही से फ़ज़ल और रज़ा चाहते हैं। सज्दों के असर से उनके चेहरों पर उनकी निशानी है। ये उनका उदाहरण है जो तौरात में है। और इंजील में उनका उदाहरण एक खेती की तरह है जो अपनी कोंपल निकाले फिर उसे मज़बूत करे फिर वो मोटी हो जाए और अपने डंठल पर खड़ी हो जाए, किसानों को ख़ुश कर दे कि उनकी वजह से कुफ़्फ़ार को क्रोध दिलाए। अल्लाह ने उनमें से उन से जो ईमान लाए और नेक कर्म किए मग़फ़िरत और बड़े बदला का वादा किया हुआ है।

हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलराबे रहमहुल्लाह इस आयत की व्याख्या में फ़रमाते हैं:

इस आयत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जो गुण वर्णन किए गए हैं उनको उन तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि तुरन्त ही कहा وَ الَّذِیْنَ مَعَهٗۤ **वल्लज़ीन मअहू** अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सद्गुण उन लोगों में भी प्रवेश करेंगे जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हैं। गुणों में सर्वप्रथम तो यह है कि اَشِدَّآءُ عَلَی الْكُفَّارِ **वे काफ़िरों के विरुद्ध बहुत कठोर हैं।** इसका यह अर्थ नहीं कि वे काफ़िरों पर अपनी कठोर-हृदयता के कारण कठोर होंगे बल्कि कुफ्र का प्रभाव स्वीकार न करने की दृष्टि से उन्हें कठोर कहा गया है। अन्यथा उनके दिल दया से भरे हुए होंगे जिसके कारण मोमिन एक दूसरे से कृपा और नम्रतापूर्वक व्यवहार करने वाले होंगे और उनके जिहाद का उद्देश्य केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति है न कि सांसारिक धन अर्जित करना। अत:एव वे अल्लाह के समक्ष रुकू करते हुए और सजद: करते हुए झुकेंगे और उससे उसका फज़्ल अर्थात् ऐसा सांसारिक धन माँगेगे जिसके साथ अल्लाह तआला की प्रसन्नता भी हो। यह उनके जिहाद के वे प्रमुख पक्ष हैं जो तौरात में उनके सम्बन्ध में वर्णन किए गए थे।

जहाँ तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुगामियों में अंत्ययुग में आने वाले मसीह और उसके मानने वालों का प्रसंग है, उनका उदाहरण इंजील में ऐसे अंकुरण के साथ दिया गया है जो क्रमश: बढ़ता है और अपने डंठल पर दृढ़ हो जाता है और उसको देख कर उसको बोने वाले अर्थात् धर्म सेवा में भाग लेने वाले बहुत प्रसन्न होंगे। और इसके परिणाम स्वरूप काफ़िरों को उन पर और भी अधिक क्रोध आएगा। इसी प्रकार अल्लाह तआला ने उनको भी जो अल्लाह तआला पर सच्चा ईमान लाएँगे और उससे क्षमा याचना करेंगे, बड़े क्षमा और अच्छा प्रतिफल प्रदान करने का शुभ-समाचार दिया है।

(तरजमतुल क़ुरआन हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलराबे रहमहुल्लाह पृष्ठ 928)

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रमहुल्लाह इस आयत की व्याख्या में फ़रमाते हैं :

इस आयत में इंजील वालों के मुक़ाबल इस्लामी हिस्सा का उदाहरण बयान किया गया है जो मसीह मुहम्मदी की जमाअत है ।

इस आयत में इस पेशगोई की तरफ़ इशारा किया गया है जो मति अध्याय 13 आयत 3 से 9 में इन शब्दों में वर्णन हुई है कि एक बोने वाला बीज बोने निकला और बोते वक़्त कुछ दाने रास्ते के किनारे गिरे और परिंदों ने आकर उन्हें चुग लिया और कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे जहां उनको बहुत मिट्टी ना मिली और गहिरी मिट्टी ना मिलने के कारण से जल्द उग आए और जब सूरज निकला तो जल गए और जड़ ना होने के कारण से सूख गए और कुछ झाड़ियों में गिरे और झाड़ियों ने बढ़कर उनको दबा लिया और कुछ अच्छी ज़मीन में गिरे और फल लाए। कुछ सौ गुना कुछ साठ गुणा कुछ तीस गुणा।

क़ुरआन मजीद की इस आयत में बताया गया है कि उम्मत मुहम्मदिया में आने वाले मसीह की क़ौम भी ऐसी ही होगी जैसे अच्छी ज़मीन में बोया हुआ दाना और अल्लाह तआला इस में ऐसी बरकत पैदा करेगा कि एक एक दाना से साठ साठ सत्तर सत्तर बल्कि सौ-सौ गुणा पैदा होगा। मगर ये फ़ौरन नहीं होगा बल्कि क्रम के साथ होगा।

(तफ़सीर सग़ीर पृष्ठ 855)

وَ مَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ (सूरह:अलअंबिय108)

अनुवाद:: और हम ने तुझे नहीं भेजा लेकिन दुनिया के लिए दया के रूप में।

فَكَیْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۭ بِشَهِیْدٍ وَّ جِئْنَا بِكَ عَلٰی هٰۤؤُلَآءِ شَهِیْدًا (सूरह अन्निसा आयत 42)

अनुवाद::तो क्या हाल होगा जब हम प्रत्येक समुदाय में से एक गवाह लेकर आएंगे और हम तुमको उन सब गवाह बनाकर लाएंगे।

وَ اِذْ قَالَ عِیْسَی ابْنُ مَرْیَمَ یٰبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَیْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ مُبَشِّرًۢا بِرَسُوْلٍ یَّاْتِیْ مِنْۢ بَعْدِی اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَیِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِیْنٌ (सूरह अस्सफ आयत 7)

अनुवादः: और याद करो जब ईसा पुत्र मर्यम ने कहा हे बनी इस्राईल नि:सन्देह में तुम्हारी तरफ अल्लाह का रसूल हूं। उस की तस्दीक करते हुए आया हूं जो तौरात में मेरे सामने है और एक महान रसूल की ख़ुश ख़बरी देते हुए जो मेरे बाद आएगा जिस का नाम अहमद होगा अत: जब वह खुले निशानों के साथ उन के पास आया तो उन्होंने कहा कि यह तो खुला खुला जादू है।

یٰسٓ ۚ وَ الْقُرْاٰنِ الْحَكِیْمِ ۙ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ۙ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ

(सूरह यासीन आयत 2 से 5)

अनुवाद: हे सरदार! हिक्मत से भरे हुए क़ुरआन की क़सम आप बेशक रसूलूं में से हैं। और सीधा रास्ता पर हैं।

☆ ☆

☆

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सुनहरे उपदेश

اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ، وَاِنَّمَا لِكُلِّ امْرِئٍ مَّا نَوٰى

(बुख़ारी बाब कैफा काना बदउल वह्य इला रसूलुल्लाह)

अनुवाद: सब कर्मों का सार निय्यतों पर होता है और प्रत्येक इन्सान को उस की निय्यत के अनुसार ही बदला मिलता है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَنْظُرُ اِلٰى اَجْسَامِكُمْ وَلَا اِلٰى صُوَرِكُمْ وَلٰكِنْ يَنْظُرُ اِلٰى قُلُوْبِكُمْ ۔

(मुस्लिम किताबुल्बिर्रे वस्सिला)

अनुवाद: अल्लाह तआला तुम्हारे जिस्मों को नहीं देखता और न तुम्हारी शक्लों को(कि सुन्दर हैं या करूप) बल्कि वह तुम्हारे दिलों को देखता है(कि इन में कितनी श्रद्धा है)

اِنَّمَا الْاَعْمَالُ كَالْوِعَاءِ اِذَا طَابَ اَسْفَلُهُ طَابَ اَعْلَاهُ وَاِذَا فَسَدَ اَسْفَلُهُ فَسَدَ اَعْلَاهُ

(इब्ने माजा अब्वाबुज़्ज़ुहद)

अनुवाद:: कर्म एक बर्तन में पड़ी चीज़ की तरह हैं जब बर्तन में पड़ी चीज़ की निचला हिस्सा अच्छा हो तो ऊपर का हिस्सा भी अच्छा होता है और जब निचला हिस्सा गन्दा और ख़राब हो जाए तो ऊपर का हिस्सा भी ख़राब हो जाता है।

اِنَّ اللّٰهَ كَتَبَ الْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّاٰتِ ثُمَّ بَيَّنَ ذٰلِكَ: فَمَنْ هَمَّ بِحَسَنَةٍ فَلَمْ يَعْمَلْهَا كَتَبَهَا اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى عِنْدَهٗ حَسَنَةً كَامِلَةً، وَاِنْ هَمَّ بِهَا فَعَمِلَهَا كَتَبَهَا اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ عِنْدَهٗ عَشْرَ حَسَنَاتٍ اِلٰى سَبْعِ مِائَةِ ضِعْفٍ اِلٰى اَضْعَافٍ كَثِيْرَةٍ، وَاِنْ هَمَّ بِسَيِّئَةٍ فَلَمْ يَعْمَلْهَا كَتَبَهَا اللّٰهُ تَعَالٰى عِنْدَهٗ حَسَنَةً كَامِلَةً، وَاِنْ هَمَّ فَعَمِلَهَا كَتَبَهَا اللّٰهُ سَيِّئَةً وَّاحِدَةً

(मुस्लिम किताबुल ईमान बाब इज़ा हम्मल अब्दो)

अनुवाद: अल्लाह तआला ने नेकियां तथा बुराइयों दोनों लिख रखी हैं। और प्रत्येक को स्पष्ट कर दिया है। अत: जो आदमी नेकी का इरादा करे और उसे न कर सके तो उसे एक पूरी नेकी का सवाब मिलता है और अगर वह निय्यत के बाद नेकी करे तो अल्लाह तआला दस से सात सौ गुणा तक बल्कि उस से अधिक उस के हिसाब में लिख लेता है। अगर कोई आदमी बुराई का इरादा करे परन्तु उस को करने से रुका रहे तो अल्लाह तआला अपने पास उस की एक पूरी नेकी लिख लेता है। हां अगर कोई जान बूझ कर कोई बुराई करे तो अल्लाह तआला के यहां उस की एक बुराई गिनी जाती है।

كُلُّ اَمْرٍ ذِيْ بَالٍ لَمْ يُبْدَأْ فِيْهِ بِالْحَمْدِ اَقْطَعُ ۔ وَفِيْ رِوَايَةٍ كُلُّ كَلَامٍ لَا يُبْدَأُ فِيْهِ بِحَمْدِ اللّٰهِ فَهُوَ اَجْزَمُ ۔

(इब्ने माजा अब्वाबुन्निकाह)

अनुवाद: प्रत्येक सम्मान वाला काम अगर ख़ुदा तआला के प्रशंसा के बिना शुरु किया जाए तो वह बरकत के बिना और त्रुटिपूर्ण रहता है एक अन्य रिवायत में है कि प्रत्येत बात(और तक़रीर इत्यादि) अगर ख़ुदा तआला की प्रशंसा के बिना शुरु की जाए तो बरकत से ख़ाली और प्रभाव रहित होती है।

مَنْ لَا يَشْكُرِ النَّاسَ لَا يَشْكُرِ اللّٰهَ

(तिर्मिज़ी)

अनुवाद: जो आदमी अदमियों को शुक्रिया अदा नहीं करता वह ख़ुदा तआला का शुक्रिया भी अदा नहीं करता।

مَنْ سَرَّهٗ اَنْ يُّحِبَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ اَوْ يُحِبَّهُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ فَلْيَصْدُقْ حَدِيْثَهٗ اِذَا حَدَّثَ وَلْيُؤَدِّ اَمَانَتَهٗ اِذَا اؤْتُمِنَ وَلْيُحْسِنْ جِوَارَ مَنْ جَاوَرَهٗ ۔

(मिश्कात बाबुश्फकत)

अनुवाद: अगर तुम अल्लाह और उस के रसूल के साथ वास्तव में मुहब्बत करते हो और चाहते हो कि अल्लाह का रसूल भी तुम्हारे साथ मुहब्बत करे तो उस के लिए तुम्हें यह करना चाहिए कि हमेशा सच बोलो, जब तुम्हारे पास अमानत रखी जाए तो उस में कभी ख़यानत न करो और अपने पड़ोसी से अच्छा व्यवहार करो।

اَفْضَلُ الذِّكْرِ: لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَفْضَلُ الدُّعَاءِ: اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۔

(तिर्मज़ी किताबुद्दअवात)

अनुवाद: बेहतरीन बात अल्लाह तआला की तौहीद है अर्थात इस बात का इक़रार करना कि अल्लाह कि सिवा कोई उपास्य नहीं और बेहतरीन दुआ अल्हम्दो लिल्लाह है।

مَثَلُ الَّذِيْ يَذْكُرُ رَبَّهٗ وَالَّذِيْ لَا يَذْكُرُهٗ مَثَلُ الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ ۔ وَرَوَاهُ مُسْلِمٌ فَقَالَ مَثَلُ الْبَيْتِ الَّذِيْ يُذْكَرُ اللّٰهُ فِيْهِ وَالْبَيْتِ الَّذِيْ لَا يُذْكَرُ اللّٰهُ فِيْهِ مَثَلُ الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ

(बुख़ारी किताबुद्दअवात)

अनुवाद: ज़िक्रे इलाही करने वाले और ज़िक्रे इलाही न करने वालों का उदाहरण ज़िन्दा तथा मुर्दा की तरह है अर्थात दो ज़िक्रे इलाही करता है वह ज़िन्दा है और जो नहीं करता वह मुर्दा है। मुस्लिम की रिवायत में है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि वे घर में अल्लाह तआला का ज़िक्र होता है और वे घर जिन में अल्लाह तआला का ज़िक्र नहीं होता उन का उदाहरण ज़िन्दा तथा मुर्दा की तरह होता है।

مَنْ كَانَ يُحِبُّ اَنْ يَّعْلَمَ مَنْزِلَتَهٗ عِنْدَ اللّٰهِ تَعَالٰى فَلْيَنْظُرْ كَيْفَ مَنْزِلَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عِنْدَهٗ فَاِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى يُنْزِلُ الْعَبْدَ مِنْهُ حَيْثُ اَنْزَلَهٗ مِنْ نَّفْسِهٖ ۔

(कशीरिया बाबुज़्ज़िक्र पृष्ठ 111)

अनुवाद: जो आदमी यह चाहता है कि उसे उस सम्मान का ज्ञान हो जो अल्लाह तआला के यहां उस को है तो वह यह देखे कि अल्लाह तआला के बारे में उस का विचार क्या है क्योंकि अल्लाह तआला अपने बन्दे का उसी तरह सम्मान करता है जैसी उस के दिल में अल्लाह तआला का सम्मान है।

يُصْبِحُ عَلٰى كُلِّ سُلَامٰى مِنْ اَحَدِكُمْ صَدَقَةٌ فَكُلُّ تَسْبِيْحَةٍ صَدَقَةٌ، وَكُلُّ تَحْمِيْدَةٍ صَدَقَةٌ وَكُلُّ تَهْلِيْلَةٍ صَدَقَةٌ ، وَكُلُّ تَكْبِيْرَةٍ صَدَقَةٌ ، وَاَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ صَدَقَةٌ ، وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ صَدَقَةٌ ، وَيُجْزِئُ مِنْ ذٰلِكَ رَكْعَتَانِ يَرْكَعُهُمَا مِنَ الضُّحٰى

(मुस्लिम किताबुस्सलात)

अनुवाद: तुम्हारे शरीर का हर हिस्सा नेकी तथा सदक़ा में शामिल हो सकता है हर तस्बीह सदक़ा है अल्हम्दो लिल्लाह कहना सदक़ा है ला इलाहा इल्लल्लाह कहना सदक़ा है नेकी का हुक्म देने सदक़ा है बुराई से रोकना भी सदक़ा है और चाशत के समय दो रकअतें नमाज़ पढ़ना इन सब नेकियों के बराबर है।

☆ ☆ ☆

फ़ारान की चोटियों से सिराज मुनीर का प्रादुर्भाव सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश

फ़ारान की चोटियों से सिराजे मुनीर का प्रादुर्भाव

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

" जब अल्लाह तआला ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना को तारीकी और गुमराही में भरा हुआ पाया और हर तरफ़ से अन्धकार और ज़ुल्मत की घनघोर घटा दुनिया पर छा गई। उस समय इस अन्धकार को दूर करने और गुमराही को हिदायत और नेकी से तबदील करने के लिए एक सिराज मुनीर फ़ारान की चोटियों पर चमका अर्थात आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मबऊस हुए।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 83,प्रकाशन 2018 ई कादियान)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बेनज़ीर मुक़ाम

"हमारे नबी करीम सारी दुनिया के इन्सानों की रुहानी तरबीयत के लिए आए थे इसलिए यह रंग हुज़ूर अलैहिस्सलाम वस्सलाम में अत्यधिक कमाल में मौजूद था और यही वह मर्तबा है जिस पर क़ुरआन करीम ने कई स्थानों पर हुज़ूर के बारे में गवाही दी है और अल्लाह तआला के गुणों के मुक़ाबला और इसी रंग में आँ हज़रत की सिफ़तों का ज़िक्र फ़रमाया है।

مَآ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِيۡنَ (अलअंबिया:108) और ऐसा ही फ़रमाया قُلۡ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّىۡ رَسُوۡلُ اللّٰهِ اِلَيۡكُمۡ جَمِيۡعَا (अल-अराफ़:159) क़ुरआन शरीफ़ के दूसरे स्थानों पर ध्यान देने से पता लगता है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने अनपढ़ फ़रमाया है इसलिए कि अल्लाह तआला के सिवाए आपका कोई उस्ताद ना था मगर इस के बादजूद के आप अनपढ़ थे .....क़ुरआन करीम को देखकर हैरत होती है कि इसी अनपढ़ ने किताब और हिक्मत ही नहीं बतलाई बल्कि तज़किया नफ़स की राहों से वाक़िफ़ किया और यहां तक कि اَيَّدَهُمۡ بِرُوۡحٍ مِّنۡهُ (अलमुजादल :23) तक पहुंचा दिया। देखो और ध्यान से देखो कि क़ुरआन शरीफ़ हर तरीका के इच्छुक को अपने लक्ष्य तक पहुँचाता और हर सच्चाई और सदाक़त के प्यासे को तृप्त करता है लेकिन ख़्याल तो करो कि यह हिक्मत और मारफत का दरिया सदाक़त और नूर का चश्मा किस पर नाज़िल हुआ? इसी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पुर जो एक तरफ़ तो अनपढ़ कहलाता है और दूसरी तरफ़ वे कमाल और हक़ीक़तें उस के मुँह से निकल रहे हैं कि दुनिया के इतिहास में इस का उदाहरण पाया नहीं जाता। (वही पृष्ठ 104)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अख़लाक़ी चमत्कार

हुज़ूर सय्यदुर मर्सलीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अख़लाक़ी चमत्कार में से एक यह भी है कि एक बार आप एक दरख़्त के नीचे सोए पड़े थे कि अचानक एक शोर तथा पुकार से जाग गए तो क्या देखते हैं कि जंगली गंवार तलवार खींच कर ख़ुद हुज़ूर पर आ पड़ा है। उसने कहा। हे मुहम्मद ! (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) बता इस वक़्त मेरे हाथ से तुझे कौन बचा सकता है? आप ने पूरे संतोष और आराम से जो हासिल थी फ़रमाया कि अल्लाह। आपका यह फ़रमाना आम इन्सानों की तरह ना था। अल्लाह जो ख़ुदा तआला का एक व्यक्तगित नाम है और जो सारे सम्पूर्ण सिफ़तों का सार है। ऐसे तौर पर आपके मुँह से निकला कि दिल से निकला और दिल पर ही जा कर ठहरा। कहते हैं कि इस्मे आज़म(सब से बड़ा नाम) यही है और इस में बड़ी बड़ी बरकते हैं लेकिन जिसको वह अल्लाह याद ही ना हो वह इस से क्या फ़ायदा उठाएगा। अत: ऐसे तौर पर अल्लाह का लफ़्ज़ आप के मुँह से निकला कि इस पर रोब तारी हो गया और हाथ काँप गया। तलवार गिर पड़ी। हज़रत ने वही तलवार उठा कर कहा कि अब बता। मेरे हाथ से तुझे कौन बचा सकता है? वह कमज़ोर दिल वाला जंगली किस का नाम ले सकता था। आख़िर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने उत्तम अख़लाक़ का नमूना दिखाया और कहा जा तुझे छोड़ दिया और कहा कि बहादुरी और वीरता मुझ से सीख। इस अख़लाक़ी चमत्कार ने इस पर ऐसा प्रभाव किया कि वह मुसलमान हो गया। (वही ,पृष्ठ 86)

सब इज़्ज़तों से बढ़कर रसूलुल्लाह की इज़्ज़त है जिसका सारी इस्लामी दुनिया पर असर है

सब इज़्ज़तों से बढ़कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त है। जिसका सारी इस्लामी दुनिया पर असर है। आप ही की ग़ैरत ने फिर दुनिया को ज़िंदा किया। अरब जिन में व्यभिचार, शराब और जंग लड़ने के सिवा कुछ रहा ही ना था और हुक़ूक़ुल इबाद का ख़ून हो चुका था। हमदर्दी और मानव जाति की भलाई का नामोनिशान तक मिट चुका था और ना सिर्फ हुक़ूक़ुल ईबाद ही तबाह हो चुके थे बल्कि हुक़ूक़ अल्लाह पर इस से भी ज़्यादा अन्धेरा छा गया था। अल्लाह तआला के गुणों को पत्थरों, बोटियों और सितारों को दी गई थीं। किस्म किस्म का शिर्क फैला हुआ था। आजिज़ इन्सान और इन्सान की शर्मगाहों तक की पूजा दुनिया में हो रही थी। ऐसी मकरूह (घृणित) हालत का नक़्शा अगर ज़रा देर के लिए एक नेक फ़ितरत इन्सान के सामने आ जाए तो वह एक ख़तरनाक ज़ुल्मत और ज़ुलम तथा अत्याचार के भयानक और ख़ौफ़नाक नज़ारा को देखेगा। फ़ालिज (पक्षघात) एक तरफ़ गिरता है, मगर यह फ़ालिज ऐसा फ़ालिज था कि दोनों तरफ़ गिरा था। पूर्ण फ़साद दुनिया में छा चुका था। ना पानी में अमन तथा सलामती थी और ना धरती पर सुकून तथा राहत। अब इस अन्धकार और हलाकत के ज़माना में हम रसूलुल्लाह सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम को देखते हैं। आपने आकर कैसे सम्पूर्ण रूप से इस तराज़ू के दोनों पहलू ठीक फ़रमाए कि हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल इबाद को अपने असली केन्द्र पर क़ायम कर दिखाया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अख़लाक़ी ताक़त का कमाल उस वक़्त ज़ेहन में आ सकता है। जबकि उस ज़माना की हालत पर निगाह की जाए। मुख़ालिफ़ों ने आपको और आपके अनुयायियों को जिस क़दर तकलीफ़ें पहुंचाईं और उसके मुक़ाबला में आपने ऐसी हालत में जब कि आप को पूरा अधिकार और ताकत हासिल थी। उनसे जो कुछ सुलूक किया, वह आपकी उच्च शान को ज़ाहिर करता है। अबुजहल और इस के दूसरे दोस्तों ने कौन सी तकलीफ़ थी जो आप पर जान कुरबान करने वाले सेवकों को नहीं दी। ग़रीब मुसलमान औरतों को ऊंटों से बांध कर विपरीत दिशा में दौड़ाया और वह चीरी जाती थीं। केवल इस गुनाह पर कि वह لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ला इलाहा इल्लल्लाह को क्यों मानती हैं। मगर आप ने इस के मुक़ाबला पर सब्र बर्दाश्त से काम लिया। और जबकि मक्का फ़तह हुआ, तो لَا تَثۡرِيۡبَ عَلَيۡكُمُ الۡيَوۡمَ (सूरह यूसुफ़:93) कह कर माफ़ फ़रमाया। यह किस क़दर अख़लाक़ी कमाल है। जो किसी दूसरे नबी में नहीं पाया जाता। اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ

(वही पृष्ठ 484)

☆ ☆ ☆

हम यक़ीन कामिल से कह सकते हैं कि हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उच्च शान और उच्च मुक़ाम की पहचान हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी अलैहिस्सलाम ने ही प्रदान फ़रमाई है।

जब हम आप के इश्क़े रसूल के बारे में बेशुमार तहरीरें देखते हैं, अरबी फ़ारसी और उर्दू में आपकी किताबें उपदेश और मंजूम कलाम को देखते हैं तो साफ़ ज़ाहिर हो जाता है कि आप अलैहिस्सलाम के आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशक़ तथा मुहब्बत के मुक़ाम तक कोई नहीं पहुंच सकता।

आप का अरबी कलाम क़सीदों की शक्ल में भी ऐसा है जिसे पढ़ कर अरब भी सिर धुनते हैं कि ऐसा इशक़ तथा मुहब्बत से भरपूर कलाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रशंसा में हम ने ना कभी पढ़ा है ना सुना।

हमें किसी हुकूमत और किसी आलमे दीन, तथा कथित आलमे दीन की सनद की ज़रूरत नहीं कि हम मुसलमान हैं या नहीं या किसी फ़ार्म पर लिखने से हम मुसलमान या ग़ैर मुस्लिम नहीं बन जाते।

सिर्फ और सिर्फ एक सनद हमें चाहिए और वह अल्लाह तआला की रज़ा है कि अल्लाह तआला हम से राज़ी हो और वह उसी वक़्त हमें वह सनद प्रदान फ़रमाएगा जब हम हक़ीक़त में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत का हक़ अदा करने वाले बनेंगे, आप की पैरवी करने वाले बनेंगे।

यह साल भी समापन को पहुंच रहा है कुछ देशों में चौबीस घंटे और कुछ में दो दिन और दो रातें बाक़ी हैं अतः इन आख़री दिनों को भी दुरूद से भर दें और नए साल का स्वागत भी दुरूद और सलाम से करें। ताकि हम जल्द शीघ्र अति शीघ्र उन बरकतों को हासिल करने वाले हूँ जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात से जुड़ी हैं।

ज़माने के इमाम हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अपने आक़ा के इशक़ में डूबी हुई तहरीरों की दृष्टि से नबी अकरम की सदाक़त, आप के उच्च स्थान और रूहानी कामल के बारे में तर्कों तथा दिल पर प्रभाव करने वाला वर्णन

दुरूद शरीफ़ के विरद से नबी अकरम की बरकतों वाली से जुड़ी बरकतों से फ़ैज़ पाने के तहरीक़

कादियान दारुल अमान में जमाअत अहमदिया मुस्लिमा भारत के जलसा सालाना के अवसर पर 30 दिसंबर 2018 ई को सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ का ताहिर हॉल बैतुल फुतूह लंदन से एम टी ए के संचार साधन से सीधे समापन भाषण।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

आज इस साल के जलसा सालाना कादियान का यह आख़िरी दिन है और आख़िरी सेशन है और इस वक़्त दुनिया के विभिन्न देशों से आए हुए लगभग अठारह उन्नीस हज़ार अहमदी इस बस्ती में जमा हैं जो ज़माने के इमाम और मसीह मौऊद और महदी माहूद की बस्ती है। वह मसीह मौऊद और महदी माहूद जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई और अल्लाह तआला के वादा के अनुसार इस ज़माने में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लाए धर्म की तजदीद (सुधार) के लिए मबऊस हुए। आप ने जहां इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा के अनुसार बंदे को ख़ुदा तआला के क़रीब करने के रास्ते दिखाए और क़ुरआन करीम की ख़ूबसूरत शिक्षा को दुनिया पर स्पष्ट फ़रमाया वहां आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वाला वसल्लम की शान और महान मुक़ाम के बारे में दुनिया को बता कर ना सिर्फ नेक फ़ितरत और ग़ैरों के इस्लाम पर हमलों से परेशान मुसलमानों के ईमानों को मज़बूत किया बल्कि हर इस्लाम के मुख़ालिफ़ और आप सल्लल्लाहो अलैहि वाला वसल्लम की ज़ात पर एतराज़ करने वाले का मुँह बंद करवाया और इस्लाम के मुख़ालफ़ीन को आपकी दलीलों से भरे हमलों से फ़रार का रास्ता धारण करने के इलावा कोई रास्ता ना रहा। आप अलैहिस्सलाम का इश्क़े रसूल का वह मुक़ाम था जहां तक कोई नहीं पहुंचा और ना पहुंच सकता है। इसी इश्क़ की कैफ़ीयत और अल्लाह तआला के इस वजह से आप से सुलूक और इनामों की बारिश का ज़िक्र करते हुए आप फ़रमाते हैं कि:

"एक रात इस विनीत ने इतनी प्रचुरता से दुरूद शरीफ़ पढ़ा कि दिल तथा जान इस से सुगंधित हो गए। इसी रात ख़्वाब में देखा कि फरिश्ते

पवित्र पानी की शक्ल पर नूर की मुशकें इस आजिज़ के मकान में लिए आते हैं।" साफ़ और सुथरे पानी की मुशकें लेकर आए हैं और एक ने उनमें से कहा कि ये वही बरकतें हैं जो तूने मुहम्मद की तरफ़ भेजी थीं सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। फिर फ़रमाते हैं कि एक बार इलहाम हुआ जिसके अर्थ यह थे कि आकाश के लोग ख़ुसूमत में हैं अर्थात अल्लाह तआला का इरादा धर्म को जीवित करने के लिए जोश में है लेकिन अभी तक आकाश में जीवित करने वाले आदमी का निर्धारण नहीं हुआ इसलिए मतभेद में हैं। फ़रमाया कि "इसी समय ख़्वाब में देखा कि लोग एक मुह्यी (जीवित करने वाले) को तलाश करते फिरते हैं और एक आदमी इस विनीत के सामने आया और इशारा से इस ने कहा هٰذَا رَجُلٌ يُحِبُّ رَسُوْلَ الله अर्थात यह वह आदमी है जो रसूलुल्लाह से मुहब्बत रखता है और इस कथन से यह अभिप्राय था कि पहली शर्त इस ओहदा की मुहब्बते रसूल है। अत: वह इस आदमी में पाई जाती है।"

(बराहीन अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 1,पृष्ठ 598 ,हाशिया का हाशिया नंबर 3)

आप फ़रमाते हैं "अत: अल्लाह तआला ने इश्क़े रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वजह से मुझे यह मक़ाम प्रदान फ़रमाया और आप की ये बातें सुनकर होना तो ये चाहिए था कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ऐसे सच्चे आशिक़ और इस्लाम के पुनर्जागरण के लिए भेजे गए इस फ़रिस्तादे का मुसलमान समान्य रूप से और उल्मा साथ देते लेकिन उल्मा ने या यह कहना चाहिए कि तथाकथित उल्मा ने अपनी दिली सख़्ती और जहालत और वैर की वजह से आप पर यह इल्ज़ाम लगाना शुरू कर दिया और अब तक लगाते चले जा रहे हैं कि नऊज़-बिल्लाह आप आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान को कम करने वाले हैं अत: काफ़िर हैं और आप के मानने वाले भी काफ़िर हैं। लेकिन इस के विपरीत जब हम आप के इश्क़े रसूल के बारे में बेशुमार तहरीरें देखते हैं, अरबी फ़ारसी और उर्दू में आप की किताबें, उपदेश और मंज़ूम कलाम को देखते हैं तो साफ़ ज़ाहिर हो जाता है कि आप अलैहिस्सलाम के आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इश्क़ तथा मुहब्बत के मुक़ाम तक कोई नहीं पहुंच सकता। आपका हर लफ़्ज़ अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इश्क़ में फ़ना होने का सबूत है और यही बात जब नेक फ़ितरत उल्मा (उल्मा में से भी नेक फ़ितरत हैं, विभिन्न देशों में भी हैं) और आम मुसलमानों पर ज़ाहिर होती है तो आप अलैहिस्सलाम की बैअत में आ जाते हैं आप की ग़ुलामी में आते हैं और इस तरह हक़ीक़ी तौर पर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में आते हैं। आप अलैहिस्सलाम अपने एक फ़ारसी कलाम में फ़रमाते हैं, एक शेअर है कि

बाद अज़ ख़ुदा ब इश्क़े मुहम्मद मुख़मरम गर
कुफ्र ईं बवद बख़ुदा सख़्त काफ़रम

(इज़ाला औहाम हिस्सा 1,रुहानी ख़ज़ायन, भाग 3,पृष्ठ 185)

कि मैं तो ख़ुदा तआला के इश्क़ के बाद मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इश्क़ में डूबा हुआ हूँ। अगर ख़ुदा तआला और इस के रसूल से यह इश्क़ कुफ्र है तो ख़ुदा की क़सम में सबसे बड़ा काफ़िर हूँ। इसी तरह आप का अरबी कलाम क़सीदों की शक्ल में भी ऐसा है जिसे पढ़ कर अरब भी सिर धुनते हैं कि ऐसा इश्क़ तथा मुहब्बत में डूबा हुआ कलाम आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की प्रशंसा में हम ने ना कभी पढ़ा है ना सुना। अल्लाह तआला करे कि दुनिया के मुसलमान इस आशिक़ रसूल को पहचानें और मुसलमान मुस्लेहत की वजह से या उल्मा (बुरे उलमाए कहना चाहिए) के ख़ौफ़ की वजह से अल्लाह तआला के भेजे हुए इस आशिक़ रसूल के इनकार से अल्लाह तआला की नाराज़गी मोल लेने वाले ना बनें।

बुरे उलमा पर मुझे एक लतीफ़ा भी याद आ गया। पिछले दिनों सोशल मीडीया पर एक मौलाना अहमदियों के ख़िलाफ़ भी बोल रहे थे और कुफ्र के फ़तवे भी लगा रहे थे और अपनी जहालत की वजह से या अपने बोलने में यह भी फ़र्मा दिया उन्होंने और कई बार कहा कि अमुक मौलाना जो हमारे बड़े मौलवी हैं और बुरे उलमा में उनकी गिनती होती है उन्होंने भी यह फ़तवा दिया हुआ है कि यह (अहमदी) काफ़िर हैं। बहरहाल उनका शुक्रिया। हम तो पहले ही कहते हैं कि ये फ़तवे बुरे उलमा के ही हैं, कोई हक़ीक़ी आलिम ऐसे फ़तवे नहीं दे सकता। बहरहाल चाहे ये कहें या ना कहें अल्लाह तआला के भेजे हुए के ख़िलाफ़ फ़तवे देकर उनकी गिनती बुरे उलमा में ही होती है।

इस वक़्त में इस आशिक़ रसूल की आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इश्क़ और मुहब्बत में बयान की हुई बातें और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम तथा शान दिखाने वाली कुछ तहरीरें पेश करूँगा जिसका प्रत्येक शब्द अहमदियों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वस्सलाम को काफ़िर कहने वालों के मुँह पर एक थप्पड़ है।

इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि सब नबियों से अफ़ज़ल नबी और दुनिया के सब से मुरब्बी आज़म आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"असल हक़ीक़त यह है कि सब नबियों से अफ़ज़ल वह नबी है कि जो दुनिया का सब से बड़ा मुरब्बी है अर्थात वह आदमी कि जिसके हाथ से सब से बड़ा दुनिया के फ़साद का सुधार हुआ जिसने खोई हुई, तथा न पाई जाने वाली तौहीद को फिर ज़मीन पर क़ायम किया। वह तौहीद जो दुनिया से गुम हो गई थी, जिसका नाम तथा निशान नहीं था इस को क़ायम किया जिसने सारे झूठे धर्मों को तर्कों और दलील से पराजित कर के प्रत्येक गुमराह की शंकाओं को मिटाया। जिसने प्रत्येक नास्तिक की शंकाओं को दूर किया और नजात का सच्चा ..... सच्चे उसूलों की शिक्षा से पुन: प्रदान फ़रमाया।" फ़रमाते हैं "अत: इस दलील से कि इस का फ़ायदा और लाभ सबसे ज़्यादा है इस का दर्जा और रुत्बा भी सबसे ज़्यादा है। अब इतिहास बतलाता है। आसमानी किताब गवाह है और जिनकी आँखें हैं वे आप भी देखते हैं कि वो नबी जो इस नियम के कारण के सब नबियों से उत्तम ठहरता है वह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं।"

(बराहीन अहमदिया भाग 2, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 1,पृष्ठ 97 , हाशिया नंबर 6)

फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई और आप के सर्वोत्तम होने की एक दलील देते हुए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस ज़माना में प्रादुर्भाव हुए थे कि जब सारी दुनिया में शिर्क और गुमराही और सृष्टि पूजा फैल चुकी थी और सारे लोगों ने सच्चे उसूलों को छोड़ दिया था और सीधे रास्ते को भूल भुला कर प्रत्येक फ़िर्क़ा ने अलग अलग बिद्अतों का रास्ता ले लिया था। अरब में बुतपरस्ती का बहुत ज़ोर था। फ़ारस में आग की पूजा का बाज़ार गर्म था। हिंद में बुतों की पूजा के अतिरिक्त और सैंकड़ों तरह की सृष्टि की पूजा फैल गई थी। और उन्हें दिनों में कई पुराण और पुस्तक के माध्यम से जिनकी दृष्टि से सैंकड़ों ख़ुदा के बंदे ख़ुदा बनाए गए और अवतार की पूजा की बुनियाद डाली गई लिखी जा चुकी थी और पादरी बोरट साहिब के कथन के अनुसार..... यहां लिखने में भूल लगती है। असल नाम है जान डेविन पोर्ट (John Davenport), फ़रमाते हैं और कई विद्वान अंग्रेज़ों के इन दिनों में ईसाई मज़हब से ज़्यादा और कोई मज़हब ख़राब ना था। और पादरी लोगों की बुरी आदतों और बुरी आस्थाओं से मज़हब ईसवी पर एक सख़्त धब्बा लग चुका था और

मसीही आस्थाओं ने एक ना दो बल्कि कई चीज़ों ने ख़ुदा का स्थान ले लिया था। अत: आंहज़रत का ऐसी आम गुमराही के वक़्त में प्रादुर्भाव होना कि जब ख़ुद हालत मौजूदा ज़माना की एक सम्माननीय इलाज करने वाले और सुधारक को चाहते थे और रब्बानी हिदायत की पूर्ण ज़रूरत थी और फिर ज़हूर फ़र्मा कर एक दुनिया को तौहीद और नेक कर्मों से प्रकाशित करना और शिर्क और सृष्टि पूजा का जो सब बुराइयों को मां है विनाश फ़रमाना इस बात पर साफ़ दलील है कि आं हज़रत ख़ुदा के सच्चे रसूल और सब रसूलों से अफ़ज़ल थे।

(बराहीन अहमदिया भाग 2 ,रुहानी ख़ज़ायन,भाग 1,पृष्ठ 112-113, हाशिया नंबर 10)

एक तरफ़ तो तौहीद और नेक कर्मों को स्थापित फरमाया और दूसरी तरफ़ जो सृष्टि पूजा और शिर्क था इस को मिटाया। फ़रमाया कि "ये चीज़ें जो हैं ये हर किस्म की बुराइयों की माँ हैं। ख़ुद पादरी जो हैं उन्होंने इस को स्वीकार किया कि उस ज़माने में ये शिर्क इस तरह फैला हुआ था जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्रादुर्भाव हुए।"

फिर इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला के नूरूं को हासिल करने वाले थे और सारे नबियों से इस बारे में कामिल थे, हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"चूँकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी भीतरी पवित्रता, दिल के खुले होने में तथा लज्जा और शर्म तथा सच्चाई एंव सफाई और अल्लाह तआला पर भरोसे तथा वफादारी तथा अल्लाह तआला के इश्क की सारी अनिवार्य बातों में सारे सब नबियों से बढ़कर और सबसे अफ़ज़ल तथा उत्तम तथा सम्पूर्ण तथा पवित्र थे इसलिए सम्मान वाले ख़ुदा ने उनको कमालों के सार से सब से अधिक लाभान्वित किया। वे सारे कमाल जो एक इन्सान में हो सकते थे उनमें सबसे ज़्यादा आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मुअत्तर क्या, वह ख़ुशबू आप में पैदा की और वह सीना और दिल जो सारे अव्वलीन तथा आख़रीन के सीना तथा दिल से बड़ा, पवित्र और मासूम तथा रोशन एवं इश्क़ में डूबा हुआ था वह इसी योग्य ठहरा कि उस पर ऐसी वही नाज़िल हो कि जो सारे अव्वलीन तथा आख़रीन की वहियों से मज़बूत सम्पूर्ण तथा सर्वोच्च एवं उत्तम हो कर अल्लाह तआला की सिफ़तों के दिखलाने के लिए एक निहायत साफ़ और खुला और बड़ा आईना हो ऐसी वही नाज़िल हुई जो कमाल तक पहुंची हुई है,जो बलंद तरीन मुक़ाम तक पहुंची हुई है और जो कामिल और मुकम्मल है ताकि अल्लाह तआला के गुण, अल्लाह तआला की सिफ़तें दिखाई जाएं और आप फ़रमाते हैं कि दिखाने का एक आईना था। आप पर वह वह्य उतरी और फिर वहां से रीफ़लीकट (reflect) हो कर दुनिया में पहुंची। फ़रमाया अत: यही कारण है कि क़ुरआन शरीफ़ ऐसे उच्च कमालों को रखता है जो उस की तेज़ रोशनी तथा तेज़ किरणों के आगे सारी पिछले सहीफ़ों की चमक समाप्त हो रही है। कोई ज़हन ऐसी सदाक़त निकाल नहीं सकता जो पहले ही से इस में वर्णन ना हो। कोई फ़िक्र ऐसे अक्ल के तर्क प्रस्तुत नहीं कर सकता जो पहले ही से इस ने वर्णन ना की हो। अर्थात हर चीज़ क़ुरआन करीम में मौजूद है जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुआ। कोई तक़रीर ऐसा दृढ़ असर किसी दिल पर डाल नहीं सकती जैसे मज़बूत और बरकतों वाला असर लाखों दिलों पर वह डालता आया है। जो क़ुरआन करीम को समझने की कोशिश करते हैं। वे निसन्देह अल्लाह तआला के उच्च सम्पूर्ण गुणों का एक निहायत मुसफ़्फ़ा (साफ सुथरा) आईना है जिस में से वह सब कुछ मिलता है जो एक सालिक को मदारिज आलीया मार्फ़त तक पहुंचने के लिए आवश्यक है।

(सुर्मा चश्म आर्या,रुहानी ख़ज़ायन, भाग 2,पृष्ठ 71-72 हाशिया)

अत: ये है आप का नुक्ता नज़र। इस शिक्षा से बाहर कोई चीज़ है ही नहीं। तो फिर किस तरह ये आरोप लगाया जा सकता है कि नऊज़ बिल्लाह आप आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और क़ुरआन करीम के दर्जा को कम करने वाले हैं। आप फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला की मार्फ़त सिर्फ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जुड़ने से ही मिल सकती है, आप पर उतरी हुई शरीयत को समझने से ही मिल सकती है।

फिर यह बयान फ़रमाते हुए कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दृढ़ प्रभाव डालने वाली क़ुव्वते क़ुदसिया थी वही चीज़ थी जिसने सहाबा कराम की रुहानी तरक़्क़ी को उच्च मुक़ाम तक पहुंचाया। आप फ़रमाते हैं:

"यह बात किसी समझदार पर छुपी नहीं होगी कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़ाद बूम अर्थात वतन, पैदाइश की जगह एक सीमित द्वीप वाला देश है जिसको अरब कहते हैं जो दूसरे मुल्कों से हमेशा बे-तअल्लुक़ रह कर मानो एक तन्हाई के कोने में पड़ा रहा है। इस देश का आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़हूर से पहले बिलकुल वहशयाना और दरिंदों की तरह ज़िन्दगी व्यतीत करना और धर्म और ईमान और अल्लाह तआला के हकूक और बन्दों के हकूक से बे-ख़बर होना और सैंकड़ों वर्षों से बुतपरस्ती तथा अन्य नापाक ख़्यालात में डूबे चले आना और अय्याशी और मदमस्ती और शराब पीने और जूआ खेलने इत्यादि दुराचार के तरीक़ों में चरम स्तर तक पहुंच जाना और चोरी और डाका मारना और ख़ून करना और बेटियों को मारना अर्थात बच्चों को, लड़कियों को क़तल कर देना और यतीमों का माल खा जाना और बेगानों के हुक़ूक़ दबा लेने को कुछ गुनाह ना समझना। अत: प्रत्येक बुरी हालत और प्रत्येक तरह का अंधेरा और हर किस्म की ज़ुल्मत तथा ग़फ़लत आम तौर पर सारे अरबों के दिलों पर छाया हुआ होना एक ऐसी मशहूर घटना है कि कोई द्वेष वाला मुख़ालिफ़ भी बशर्ते के कुछ ज्ञान रखता हो इस से इनकार नहीं कर सकता।" फ़रमाते हैं "और फिर यह बात भी प्रत्येक इन्साफ करने वाले पर ज़ाहिर है। जो इन्साफ़ से काम लेने वाला है इस पर यह ज़ाहिर है कि वही जाहिल और वहशी और गन्दी फितरत वाले लोग इस्लाम में दाख़िल होने और क़ुरआन को क़बूल करने के बाद कैसे हो गए और कैसे कलाम इलाही के प्रभाव और मासूम नबी की सोहबत ने बहुत ही थोड़े समय में उनके दिलों को सम्पूर्ण रूप से तब्दील किया कि वह जहालत के बाद धर्म के मआरिफ़ से माला-माल हो गए और दुनिया की मुहब्बत के बाद इलाही मुहब्बत में ऐसे खोए गए। पहले तो दुनिया की मुहब्बत थी लेकिन इस के बाद अल्लाह तआला की मुहब्बत में ऐसे खो गए कि अपने वतनों अपने मालों अपने अज़ीज़ों अपनी इज़्ज़तों अपनी जान के आरामों को अल्लाह जल्ला शानहो के राज़ी करने के लिए छोड़ दिया। अत: ये दोनों सिलसिले उनकी पहली हालत और इस नई ज़िन्दगी के जो बाद इस्लाम में उन्हें नसीब हुए क़ुरआन शरीफ़ में ऐसी स्पष्टता से वर्णन हैं कि एक सालिह और नेक दिल आदमी पढ़ने के वक़्त बे-इख़्तियार रोने लग जाता है। अत: वह क्या चीज़ थी जो उनको इतनी जल्दी एक संसार से दूसरे संसार की तरफ़ खींच कर ले गई। वह दो ही बातें थीं। एक यह कि वह नबी मासूम अपनी क़ुव्वत क़ुदसिया में निहायत ही प्रभाव वाला था ऐसा कि ना कभी हुआ और ना होगा। दूसरी ख़ुदा क़ादिरो मुतलक़ हय्य कय्यूम के पाक कलाम की ज़बरदस्त और अजीब तासीरें थीं कि जो एक बड़े गिरोह को हज़ारों ज़ुल्मतों से निकाल कर नूर की तरफ़ ले आईं। निसन्देह यह कुरान की तासीरें चमत्कार हैं। ग़ैरमामूली हैं क्योंकि कोई दुनिया में बतौर उदाहरण नहीं बतला सकता कि कभी किसी किताब ने ऐसी तासीर की। कौन इस बात का सबूत दे सकता है कि किसी किताब ने ऐसी अजीब तबदील तथा

सुधार किया जैसा क़ुरआन शरीफ़ ने की।

(सुर्मा चशम आर्या ,रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 2,पृष्ठ 76 से 78 हाशिया)

फिर इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि जो नूर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मिला वह और किसी को नहीं मिला हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वस्सलाम फ़रमाते हैं:

"वह उच्च स्तर का नूर जो इन्सान को दिया गया अर्थात इन्सान कामिल को वह फरिश्तों में नहीं था। सितारों में नहीं था। चान्द में नहीं था। सूर्य में भी नहीं था। वह ज़मीन के समुंद्रों और दरियाओं में भी नहीं था। वह लअल और याक़ूत और ज़मुर्रद और अल्मास और मोती में भी नहीं था। अत: वह किसी ज़मीन की औऱ आसमान की चीज़ में नहीं था सिर्फ इन्सान में था अर्थात कामिल इन्सान में जिसका उत्तम और सम्पूर्ण और उच्च और सर्वोत्तम व्यक्ति हमारे सय्यद मौला सय्यदुल अंबिया सय्यदुल अलाहया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं। अत: वह नूर उस इन्सान को दिया गया और योगय्ता के अनुसार उसके सारी साथ वालों को भी अर्थात उन लोगों को भी जो किसी क़दर वही रंग रखते हैं। जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी करने वाले हैं, जो हक़ीक़त में आपके उस्वा (आदर्श) पर चलने वाले हैं। और फ़रमाया कि यह उच्च शान और अकमल और उत्तम तौर पर हमारे सय्यद हमारे मौला हमारे हादी नबी उम्मी सादिक़ मसदूक़ मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में पाई जाती थी जैसा कि ख़ुद ख़ुदा तआला क़ुरआन करीम में फरमाता है।

قُلْ اِنَّ صَلَاتِیْ وَ نُسُکِیْ وَ مَحْیَایَ وَ مَمَاتِیْ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۶۳﴾ لَا شَرِیْکَ لَہٗ ۚ وَ بِذٰلِکَ اُمِرْتُ وَ اَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِیْنَ

(सूरह अन्आम 163-164)

وَ اَنَّ ھٰذَا صِرَاطِیْ مُسْتَقِیْمًا فَاتَّبِعُوْہُ ۚ وَ لَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِکُمْ عَنْ سَبِیْلِہٖ ؕ (सूरह अन्आम 154)

قُلْ اِنْ کُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰہَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْکُمُ اللّٰہُ وَ یَغْفِرْ لَکُمْ ذُنُوْبَکُمْ ؕ وَ اللّٰہُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ (सूरह आले इम्रान 32)

فَقُلْ اَسْلَمْتُ وَجْھِیَ لِلّٰہِ (सूरह आले इम्रान 21)

وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ (सूरह अलमोमिन 67)

फ़रमाया अर्थात उनको कह दे कि मेरी नमाज़ और मेरी उपासना में चेष्ठा अर्थात इबादत करने में जद्दोजहद और कोशिश और मेरी क़ुर्बानियां और मेरा ज़िन्दा रहना और मेरा मरना सब ख़ुदा के लिए और इस की राह में है। वही ख़ुदा जो सारे आलिमों का रब है जिसका कोई शरीक नहीं और मुझे इस बात का हुक्म दिया गया है और मैं अव्वलुल मुस्लिमीन (सब से पहला मुस्लिम) हूँ। अर्थात आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने फ़रमाया यह ऐलान कर दो कि मैं अव्वलुल मुस्लिमीन हूँ अर्थात दुनिया के आरम्भ से उसके अख़ीर तक मेरे जैसा और कोई कामिल इन्सान नहीं जो ऐसा उच्च दर्जा का फ़ना फ़िल्लाह हो। जो ख़ुदा तआला की सारी अमानतें उस को वापस देने वाला हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वस्सलाम फ़रमाते हैं इस आयत में उन नादान मोहिदों का रद्द है जो यह आस्था रखते हैं जो हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दूसरे अंबिया पर पूर्ण रूप से फ़ज़ीलत प्रमाणित नहीं। अर्थात यह कि आप दूसरे नबियों पर मुकम्मल तौर पर फ़ज़ीलत रखते हैं यह साबित नहीं होती। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इन नादान मोहिदों का रद्द इस में पाया गया है कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दूसरे नबियों पर सम्पूर्ण फ़ज़ीलत साबित नहीं और कमज़ोर हदीसों को पेश कर के कहते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस बात से मना फ़रमाया है कि मुझ को यूनुस बिन मती से भी ज़्यादा फ़ज़ीलत दी जाए। यह नादान नहीं समझते कि अगर वे हदीस सही भी हो तब भी वे बतौर विनम्रता और विनय के है जो हमेशा हमारे सय्यद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आदत थी। हर एक बात का एक मौक़ा और स्थान होता है। फ़रमाते हैं हर एक बात का एक मौक़ा और स्थान होता है। अगर कोई नेक अपने ख़त में अल्लाह का सब से तुच्छ लिखे तो इस से यह नतीजा निकालना कि यह आदमी वास्तव में सारी दुनिया यहां तक कि बुत परस्तों और सारे फ़ासिक़ों से बुरा है और ख़ुद स्वीकार करता है कि वह अल्लाह के बन्दों में सब से तुच्छ है। अर्थात सब लोगों से, अल्लाह तआला के सब बंदों से तुच्छ है किस क़दर अज्ञानता और नफ़स की शरारत है। यह तो आजज़ी का इज़हार है जो कोई आदमी अपने ख़त में करता है।

फ़रमाया कि ध्यान से देखना चाहिए कि जिस हालत में अल्लाह जल्ला शानहो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम अव्वलुल मुस्लमीन रखता है और सारे आज्ञापालन करने वालों और फ़रमांबर्दारों का सरदार ठहराता है और सबसे पहले अमानत को वापस देने वाला आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़रार देता है तो फिर क्या उस के बाद किसी क़ुरआन करीम के मानने वाले को गुंजाइश है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उच्च शान में किसी तरह की बहस कर सके। ख़ुदा तआला ने उपरोक्त आयत में इस्लाम के लिए कई स्तर रखकर

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

की मुहब्बत में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कलाम

वह पेश्वा हमारा जिस से है नूर सारा
नाम उस का है मुहम्मद(स) दिलबर मेरा यही है
सब पाक हैं पयम्बर इक दूसरे से बहतर
लेक अज़ खुदाए बरतर ख़ैरुल वरा यही है
पहलों से ख़ूब तर है ख़ूबी में इक क़मर है
उस पर हर इक नज़र है बदरुद्दुजा यही है
पहले तो रह में हारे पार उसने हैं उतारे
मैं जाऊँ उस के वारे बस ना ख़ुदा यही है
पर्दे जो थे हटाए अन्दर की रह दिखाए
दिल यार से मिलाए वो आश्ना यही है
वह यारे ला मक़ानी, वह दिलबरे निहानी
देखा है हम ने उस से बस रहनुमा यही है
वह आज शाहे दीं है, वह ताजे मुरस्लीं है
वह तय्यबो अमीं है, उस की सना यही है
हक़ से जो हुक्म आए उस ने वो कर दिखाए
वह राज़ दीं बताए नेअमुल-अता यही है
आँख उसकी दूरबीं है, दिल यार से करीं है
हाथों में शमअे दीं है अैनुज्ज़िया यही है
जो राज़े दीं थे भारे उस ने बताए सारे
दौलत का देने वाला फर्मा रवा यही है
उस नूर पर फिदा हूँ उस का ही मैं हुआ हूँ
वह है मैं चीज़ क्या हूँ बस फैसला यही है
वह दिलबरे यगाना इल्मों का है ख़ज़ाना
बाकी है सब फसाना सच बे ख़ता यही है
सब हम ने उस से पाया शाहिद है तू खुदाया
वह जिस ने हक़ दिखाया वह मह लका यही है

☆ ☆ ☆

सब स्तरों से उच्च दर्जा वही ठहराया है जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की फ़ितरत को इनायत फ़रमाया। विभिन्न दर्जे हैं इस्लाम में और सब से उच्च दर्जा आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हस्ती है क्योंकि वह दर्जा आप की फ़ितरत को अल्लाह तआला ने प्रदान फ़रमाया। سُبحَانَ اللهِ مَا اَعْظَمُ شَانَكَ يَا رسولَ الله (सुबहान अलल्लाआ मुइ अअ्ज़मु शअनक यह रसूल अलल्लाआ)

फिर फ़ारसी शेअर है

मूसा व ईसा हमा खेले तवानुद
जुमला दरीं राह तुफ़ैले तवानद

कि मूसा और ईसा सब तेरे ही लश्कर हैं, सब इस राह में तेरे माध्यम से ही हैं। जो भी मूसा और ईसा हैं वे तेरी पैरवी करने वाले ही हैं।

फिर आप फ़रमाते हैं कि बाक़ी अनुवाद यह है बाक़ी आयतों का कि अल्लाह जल्ला शानहो अपने रसूल को फ़रमाता है कि उनको कह दे कि मेरी राह जो है वही राह सीधी है अत: तुम उसी की पैरवी करो और अन्य राहों पर मत चलो कि वह तुम्हें ख़ुदा तआला से दूर डाल देंगी। उनको कह दे कि अगर तुम ख़ुदा तआला से मुहब्बत रखते हो तो आओ मेरे पीछे-पीछे चलना धारण करो अर्थात मेरे तरीक़ पर जो इस्लाम की उच्च हक़ीक़त है, क़दम मारो तब ख़ुदा तआला तुम से भी प्यार करेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा। उनको कह दे कि मेरी राह यह है कि मुझे हुक्म हुआ है कि अपना सारा वजूद ख़ुदा तआला को सौंप दूं और अपने आप को रब्बुल आलमीन के लिए विशेष कर लूं। यही मुझे हुक्म है, और मेरी पैरवी करोगे तो मुक़ाम पाओगे, सही मुसलमान बनोगे अपने आप को रब्बुल आलेमीन के लिए विशेष कर लूं अर्थात इस में फ़ना हो कर जैसा कि वे रब्बुल आलमीन है मैं ख़ादिमुल आलमीन बनूं और सम्पूर्ण रूप से उसी का और इसी की राह का हो जाऊं। अत: मैंने अपना सारा वजूद और जो कुछ मेरा था ख़ुदा तआला का कर दिया है अब कुछ भी मेरा नहीं जो कुछ मेरा है वे सब उस का है।

(आईना कमालात इस्लाम,रुहानी ख़ज़ाइन भाग 5 पृष्ठ 160 से 165)

यह है वह उच्च शान जो इस उद्धरण में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वस्सलाम ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बयान फ़रमाई।

फिर इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के कामिल मज़हर (प्रतिद्युतक) हैं, हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"क़ुरआन शरीफ़ में कई स्थानों पर इशारों तथा स्पष्ट रूप से बयान हुआ है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के सर्वोत्तम मज़हर हैं। अर्थात अल्लाह तआला की ज़ात के कामिल मज़हर हैं। और उनका कलाम ख़ुदा का कलाम और उनका ज़हूर ख़ुदा का ज़हूर और उन का आना ख़ुदा का आना है अत: क़ुरआन शरीफ़ में इस बारे में एक यह आयत भी है وَ قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَ زَهَقَ الْبَاطِلُ ؕ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا (बनी इस्राईल:82) कह हक़ आया और बातिल भाग गया और बातिल ने भागना ही था। फ़रमाते हैं हक़ से मुराद इस जगह अल्लाह जल्ला शानहो और क़ुरआन शरीफ़ और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और बातिल से मुराद शैतान और शैतान का गिरोह और शैतानी शिक्षाएं हैं। अत: देखो अपने नाम में ख़ुदा तआला ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क्योंकर शामिल कर लिया और आंहज़रत का ज़हूर फ़रमाना ख़ुदा तआला का ज़हूर फ़रमाना हुआ। ऐसा जलाली ज़हूर जिस से शैतान अपने सारे लश्करों के भाग गया और इस की शिक्षाएं ज़लील और हक़ीर हो गईं और इस के गिरोह को बड़ी भारी शिकस्त आई। इसी सारगर्भिता की वजह से सूरत आले इमरान तीसरे में विस्तार से यह बयान है कि सारी नबियों से वादा तथा इक़रार लिया गया कि तुम पर वाजिब तथा लाज़िम है कि अज़मत तथा जलालीयत शान ख़त्मुर-रुसुल पर जो मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं ईमान लाओ और उनकी इस अज़मत और जलालीयत की इशाअत करने में सम्पूर्ण जान से मदद करो। इसी वजह से हज़रत आदम सफ़ी उल्लाह से लेकर हज़रत मसीह कलीमुल्लाह जितने नबी तथा रसूल गुज़रे हैं वे सब के सब अज़मत तथा जलालत आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इक़रार करते आए हैं।

(सुर्मा चश्म आर्या,रुहानी ख़ज़ाइन ,भाग 2 ,पृष्ठ 277 से 280 हाशिया)

फिर आपके उच्च स्तर की शान बयान करते हुए कि जिस तरह हमारा ख़ुदा अकेला माबूद है हमारा रसूल भी अकेला इताअत के करने के योग्य है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वस्सलाम अपनी किताब में फ़रमाते हैं, इस की अरबी इबारत यह है कि:

"اَمَّا بَعْدُ فَيَقُوْلُ عَبْدُ اللهِ الْاَحَدِ اَحْمَدُ عَافَاهُ اللهُ وَاَيَّدَ ... وَمَا فَهَّمَنِيْ اِلَّا رَبِّيَ الَّذِيْ هُوَ خَيْرُ الْمُفَهِّمِيْنَ ... وَعَلَّمَنِيْ فَاَحْسَنَ تَعْلِيْمِيْ ... وَاَوْحٰى اِلَيَّ اَنَّ الدِّيْنَ هُوَ الْاِسْلَامُ وَاَنَّ الرَّسُوْلَ هُوَ الْمُصْطَفٰى، اَلسَّيِّدُ الْاِمَامُ، رَسُوْلٌ اُمِّيٌّ اَمِيْنٌ۔ فَكَمَا اَنَّ رَبَّنَا اَحَدٌ يَسْتَحِقُّ الْعِبَادَةَ وَحْدَهٗ، فَكَذٰلِكَ رَسُوْلُنَا الْمُطَاعُ وَاحِدٌ لَا نَبِيَّ بَعْدَهٗ، وَلَا شَرِيْكَ مَعَهٗ، وَاَنَّهٗ خَاتَمُ النَّبِيِّيْنَ۔"

अनुवाद यह है कि इस के बाद ख़ुदाए वाहिद का बंदा अहमद कहता है (ख़ुदा उसे आफ़ियत में रखे और ताईद में रहे).... कि केवल ख़ुदा के मुझ को किसी ने नहीं समझाया और वह सब समझाने वालों से बेहतर है ..... और उसने मुझ को सिखलाया और अच्छा सिखलाया .....और मुझे इलहाम किया कि अल्लाह का धर्म इस्लाम ही है और सच्चा रसूल मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सरदार तथा इमाम है जो रसूल उम्मी अमीन है। अत: जैसा कि इबादत सिर्फ़ ख़ुदा के लिए प्रमाणित है और वह अकेला तथा साझीरहित है इसी तरह हमारा रसूल इस बात में वाहिद है कि उसकी पैरवी की जाए और इस बात में वाहिद है कि वह ख़ातमुल अंबिया है।

(मिनर्नुरहमान,रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 9,पृष्ठ 156-157, 161, 164)

यह इल्ज़ाम लगाते हैं कि जी दावे से पहले कुछ कहा और बाद में कुछ कहा तो यह सारी इबारत तो दावा के बाद 1895 ई की है।

फिर इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि इन्सानी कमालातों का अपनी ज़िन्दगी के माध्यम से नमूना दिखाने वाले सिर्फ़ आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं, हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"मुझे बतलाया गया है कि सारे धर्मों में से इस्लाम ही सच्चा धर्म है। मुझे फ़रमाया गया है कि सारी हिदायतों में से सिर्फ कुरआन की हिदायत ही सेहत के कामिल दर्जा पर और इन्सानी मिलावटों से पवित्र है। मुझे समझाया गया है कि सारे रसूलों में से पूर्ण शिक्षा देने वाला और उच्च स्तर की पाक और हिकमत वाली शिक्षा देने वाला और इन्सानी कमालों का अपनी ज़िंदगी के माध्यम से उच्च नमूना दिखलाने वाला सिर्फ़ हज़रत सय्यदना तथा मौलाना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं।

(अर्बईन नंबर 1,रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 17,पृष्ठ 345)

आप फ़रमाते हैं :अब कहाँ हैं वह पादरी साहिबान जो कहते थे कि नऊज़ बिल्लाह हज़रत सय्यदना तथा सय्यदुल वरा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कोई पेशगोई या और कोई बात चमत्कार वाली ज़ुहूर में नहीं आया। मैं सच सच कहता हूँ कि ज़मीन पर वह एक ही इन्सान कामिल गुज़रा है जिसकी पेशगोईयां और दुआएं क़बूल होना और दूसरे चमत्कार में आना एक ऐसी बात है जो अब तक उम्मत के सच्चे अनुकरण करने वाले माध्यम से दरिया की तरह मौजें मार रहा है। आप ने तो सारे धर्मों को यह चैलेंज दिया। आप फ़रमाते हैं इस्लाम के

अतिरिक्त वे मज़हब कहाँ और किधर है जो ये आदत और ताक़त अपने अंदर रखता है और वे लोग कहाँ और किस देश में रहते हैं जो इस्लामी बरकतों और निशानों का मुक़ाबला कर सकते हैं।

(अर्बईन नंबर 1,रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 17,पृष्ठ 346)

आज भी निशान देखने हैं तो सिर्फ और सिर्फ इस्लाम में ही वे निशान नज़र आ सकते हैं, उन लोगों में नज़र आ सकते हैं जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्ची और हक़ीक़ी पैरवी करने वाले हैं। फिर आप फ़रमाते हैं :

"मानव जाति के लिए धरती पर अब कोई किताब नहीं मगर क़ुरआन। और सारे मानव जातियों के लिए अब कोई रसूल और शफ़ी नहीं मगर मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। अत: तुम कोशिश करो कि सच्ची मुहब्बत इस मान तथा सम्मान वाले नबी के साथ रखो और इस के ग़ैर को इस पर किसी प्रकार की बड़ाई मत दो ताकि आसमान पर तुम नजात पाने वाले लिखे जाओ। और याद रखू कि नजात वह चीज़ नहीं जो मरने के बाद ज़ाहिर होगी बल्कि हक़ीक़ी नजात वह है कि इसी दुनिया में अपनी रोशनी दिखलाती है। नजात प्राप्त करने वाला कौन है? वह जो यक़ीन रखता है जो ख़ुदा सच है और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस में और सारी मख़लूक़ में दरमयानी शफ़ी है। और आसमान के नीचे ना उस के बराबर कोई और रसूल है और ना क़ुरआन के बराबर कोई और किताब है। और किसी के लिए ख़ुदा ने ना चाहा कि वो हमेशा ज़िंदा रहे मगर यह चुना हुआ नबी हमेशा के लिए ज़िंदा है .... मूसा ने वो मता पाए जिसको पहली सदियां खो चुके थे और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह मता पाए जिसको मूसा का सिलसिला खो चुका था। अब मुहम्मदी (सल.) सिलसिला मूसवी सिलसिला के क़ाइम मक़ाम है मगर शान में हज़ारों दर्जा बढ़कर।"

(कशती नूह,रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 19,पृष्ठ 13-14)

आप फ़रमाते हैं हम ने ख़ुदा को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से पाया। फ़रमाया कि

"उस क़ादिर और सच्चे और कामिल ख़ुदा को हमारी रूह और हमारा ज़र्रा ज़र्रा वजूद का सजदा करता है जिसके हाथ से हर एक रूह और हर एक ज़र्रा मख़लूक़ात का अपनी सारी क़ुव्वतों के साथ प्रकट हुआ। और जिसके वजूद से हर एक वजूद क़ायम है। आप फ़रमाते हैं उस क़ादिर और सच्चे और कामिल ख़ुदा को हमारी रूह और हमारा ज़र्रा ज़र्रा वजूद का सजदा करता है जिसके हाथ से हर एक रूह और हर एक ज़र्रा मख़लूक़ात का अपनी सारी क़ुव्वत के प्रकट हुआ और जिसके वजूद से हर एक वजूद क़ायम है। और कोई चीज़ ना उस के ज्ञान से बाहर है और ना उस के सामर्थय से। ना उस के ख़लक़ से। और हज़ारों दुरूद और सलाम और रहमतें और बरकतें उस पाक नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हूँ जिसके माध्यम से हम ने वह ज़िन्दा ख़ुदा पाया। जो आप कलाम कर के अपनी हस्ती का आप हमें निशान देता है और आप आदत से हट कर निशान दिखला कर अपनी पुरातन और कामिल ताक़तों और कुव्वतों का हम को चमकने वाला चेहरा दिखाता है। अत: हमने ऐसे रसूल को पाया जिसने ख़ुदा को हमें दिखलाया। और ऐसे ख़ुदा को पाया जिसने अपनी कामिल ताक़त से हर एक चीज़ को बनाया। इस की क़ुदरत क्या ही अज़मत अपने अंदर रखती है जिसके बग़ैर किसी चीज़ ने नक़्श वजूद नहीं पकड़ा। और जिसके सहारे के बग़ैर कोई चीज़ क़ायम नहीं रह सकती। वह हमारा सच्चा ख़ुदा बेशुमार बरकतों वाला है। और बेशुमार क़ुदरतों वाला और बेशुमार हुस्न वाला और बेशुमार एहसान वाला। इस के सिवा कोई और ख़ुदा नहीं।"

(नसीमे दावत, रुहानी ख़ज़ाइन, पृष्ठ 363)

इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि मुझे जो कुछ मिला आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से मिला। आप फ़रमाते हैं:

"मैं इसी की अर्थात अल्लाह तआला की क़सम खा कर कहता हूँ कि जैसा कि उसने इब्राहीम अलैहिस्सालम से बातचीत की । और फिर इस्हाक अलैहिस्सालम से और इस्माईल अलैहिस्सलाम से और याक़ूब अलैहिस्सलाम से और यूसुफ़ अलैहिस्सालम से और मूसा से और मसीह इब्ने मरियम से और सब के बाद हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ऐसा हमकलाम हुआ कि आप पर सबसे ज़्यादा रोशन और पाक वह्य नाज़िल की ऐसा ही उसने मुझे भी अपने मुकालमा मुख़ातबा का शरफ़ बख़्शा। मगर यह सम्मान मुझे केवल आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी से हासिल हुआ। अगर मैं आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत ना होता और आपकी पैरवी ना करता तो अगर दुनिया के सारे पहाड़ों के बराबर मेरे कर्म होते तो फिर भी में कभी यह सम्मान मुकालमा वमख़ातबा(वार्तालाप) हरगिज़ ना पाता। क्योंकि अब केवल मुहम्मदी नबुव्वत के सब नबुव्वतें बंद हैं। शरीयत वाला नबी कोई नहीं आ सकता और बग़ैर शरीयत के नबी हो सकता है मगर वही जो पहले उम्मती हो।"

(तजल्लियात-ए-अलहाईह, रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 20,पृष्ठ 411-412)

फिर आप फ़रमाते हैं: मैं अपने सच्चे और कामिल इल्म से जानता हूँ कि कोई इन्सान इस नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी के अतिरिक्त ख़ुदा तक नहीं पहुंच सकता और ना मार्फ़त कामला का हिस्सा पा सकता है। और मैं इस जगह यह भी बतलाता हूँ कि वह क्या चीज़ है कि सच्ची और कामिल पैरवी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद सब बातों से पहले दिल में पैदा होती है। अत: याद रहे कि वह नेक दिल है अर्थात दिल से दुनिया की मुहब्बत निकल जाती है और दिल एक चिरस्थायी और लाज़वाल लज़्ज़त का इच्छुक हो जाता है। फिर बाद उस के एक साफ और कामिल मुहब्बत इलाही इस के कारण इस नेक दिल को हासिल होती है और ये सब नेअमतें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी से बतौर विरासत मिलती हैं। जैसा कि अल्लाह तआला ख़ुद है।

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِىْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ

(आले इम्रान:32) अर्थात उनको कह दे कि अगर तुम ख़ुदा से मुहब्बत करते हो तो आओ मेरी पैरवी करो ताकि ख़ुदा भी तुम से मुहब्बत करे।

(हक़ीक़तुल वह्य, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 22,पृष्ठ 64-65)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत और पैरवी इन्सान को ख़ुदा का प्यारा बना देती है, इस बारे में मज़ीद फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने अपना किसी के साथ प्यार करना इस बात से शर्त वाला किया है कि ऐसा आदमी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी करे।

एक साहिब के आरोप के जवाब में आप ने यह फ़रमाया कि अगर कोई कहे कि सार तो नेक कर्म करना है तो फिर नाजी और मक़बूल बनने के लिए पैरवी की क्या ज़रूरत है? इस का जवाब यह है कि नेक कामों का घटित होना ख़ुदा तआला की तौफ़ीक़ पर आधारित है। अत: जबकि ख़ुदा तआला ने एक को अपनी अज़ीमुश्शान मस्लिहत से इमाम और रसूल मुक़र्रर फ़रमाया और इस की इताअत के लिए हुक्म दिया तो जो आदमी इस हुक्म को पाकर पैरवी नहीं करता उस को नेक कर्मों की तौफ़ीक़ नहीं दी जाती। अल्लाह तआला के भेजे हुए की पैरवी करना बहरहाल ज़रूरी है। सिर्फ अपने कर्म काम नहीं आते और सब से बढ़कर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी ज़रूरी है।

फ़रमाते हैं अत: मेरा यह व्यक्तिगत तजुर्बा है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चे दिल से पैरवी करना और आप से मुहब्बत रखना अंजामकार इन्सान को ख़ुदा का प्यारा बना देता है। इस तरह पर

कि ख़ुद उस के दिल में मुहब्बते इलाही की एक सोज़िश पैदा कर देती है। तब ऐसा आदमी हर एक चीज़ से दिल दुखी हो कर ख़ुदा की तरफ़ झुक जाता है और इस का प्रेम तथा शौक़ सिर्फ़ ख़ुदा तआला से बाक़ी रह जाता है। तब मुहब्बत इलाही की एक ख़ास तजल्ली उस पर पड़ती है और उस को एक पूरा रंग इशक़ और मुहब्बत का देकर दृढ़ जज़बा के साथ अपनी तरफ़ खींच लेती है। तब जज़बात नफ़सानीया पर वह ग़ालिब आ जाता है और इस का समर्थन और नुसरत में हर एक पहलू से ख़ुदा तआला के चमत्कार निशानों के रंग में ज़ाहिर होते हैं।

(हक़ीक़तुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 22,पृष्ठ 67-68 हाशिया)

फ़रमाते हैं कि "आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तवज्जा तो ऐसी है कि वह नबी बनाती है। आप फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को साहिब ख़ातिम बनाया। अर्थात आपको इफ़ाज़ा-ए-कमाल के लिए मुहर दी जो किसी और नबी को हरगिज़ नहीं दी गई। इसी वजह से आपका नाम ख़ातमुन्नबिय्यीन ठहरा। अर्थात आपकी पैरवी कमालाते नबुव्वत प्रदान करती है और आपकी तवज्जा रुहानी नबी बनाने वाली है और यह क़ुव्वत क़ुदसिया किसी और नबी को नहीं मिली। यही अर्थ इस हदीस के हैं कि عُلَمَاءُ أُمَّتِيْ كَأَنْبِيَاءِ بَنِيْ إِسْرَائِيْل अर्थात मेरी उम्मत के उल्मा बनी इस्राईल के नबियों की तरह होंगे और बनी इस्राईल में यद्यपि बहुत नबी आए मगर उनकी नबुव्वत मूसा की पैरवी का नतीजा ना था बल्कि वे नबुव्वतें बराह रास्त ख़ुदा की एक मुहब्बत थीं। हज़रत मूसा की पैरवी का इस में एक मात्र कुछ दख़ल ना था।

(हक़ीक़तुल वह्य, रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 22,पृष्ठ 100 हाशिया)

अत: मैं अब उल्मा को कहता हूँ कि हे तथाकथित उल्माओ ! सोचो और ग़ौर करो कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात को नबी तराश का मुक़ाम देने से आप की शान बढ़ती है या घटती है? लेकिन तुम इस बात पर ग़ौर नहीं करोगे क्योंकि दुनियावी लाभ इस से प्रभावित होते हैं। लेकिन हम पूर्ण यक़ीन से कह सकते हैं कि हमें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उच्च शान और उच्च मुक़ाम का इदराक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी अलैहिस्सलाम ने ही प्रदान फ़रमाया है। अत: हर अहमदी विशेष रूप से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद तथा सलाम भेजने को फ़र्ज़ करे ताकि इन बरकतों से हम लाभान्वित हो सकें जो आप की बरकतों वाली ज़ात से सच्चा सम्बन्ध रखने से जुड़ी हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वस्सलाम आप की ज़ात पर दरूद भेजने की एहमीयत पर ध्यान दिलाते हुए फ़रमाते हैं कि

"हमारे सय्यद मौला हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ही सिदक़ तथा वफ़ा देखिए। आप ने हर एक किस्म की बुरी तहरीक का मुक़ाबला किया। तरह-तरह की मुसीबतों तथा तकलीफ़ उठाए लेकिन परवाह ना की। यही सिदक़ तथा वफ़ा था जिस के कारण अल्लाह तआला ने फ़ज़ल किया। इसीलिए तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

(अलअहज़ाब 57)अनुवाद. अल्लाह तआला और उस के सारे फ़रिश्ते रसूल पर दुरूद भेजते हैं हे ईमान वालो! तुम दुरूद तथा सलाम भेजो नबी पर।

फ़रमाया कि इस आयत से ज़ाहिर होता है कि रसूल अकरम के कर्म ऐसे थे कि अल्लाह तआला ने उनकी प्रशंसा या गुणों को सीमित करने के लिए कोई ख़ास लफ़्ज़ ना फ़रमाया। सीमित नहीं किया। लफ़्ज़ तो मिल सकते थे लेकिन अल्लाह तआला ने ख़ुद इस्तेमाल ना किए। अर्थात आप के नेक कर्मों की तारीफ़ सीमा से बाहर थी। अल्लाह तआला उस की हद मुक़र्रर नहीं करना चाहता था। इस किस्म की आयत किसी और नबी की शान में इस्तेमाल ना की। फ़रमाया कि आपकी रूह में वह सिदक़ तथा वफ़ा था और आप के कर्म ख़ुदा की निगाह में इस क़दर पसंदीदा थे कि अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए यह हुक्म दिया। कि भविष्य में लोग शुक्रगुज़ारी के तौर पर दरूद भेजें।

(मलफ़ूज़ात ,भाग 1,पृष्ठ 37-38, प्रकाशन1985 ई ,प्रकाशन यू के)

फिर इस बात को बयान फ़रमाते हुए, और अधिक खोलते हुए कि दरूद किस उद्देश्य से पढ़ना चाहिए, आप फ़रमाते हैं कि

दरूद शरीफ़ ..... इस उद्देश्य से पढ़ना चाहिए कि ताकि ख़ुदा तआला अपनी कामिल बरकतें अपने नबी करीम पर नाज़िल करे और इस को सारे संसार के लिए बरकतों का स्रोत बनाए और इस की बुज़ुर्गी और इस की शान तथा शौकत इस दुनिया और उस दुनिया में ज़ाहिर करे। यह दुआ सच्चे दिल से होनी चाहिए। अर्थात दिली जोश से होनी चाहिए। जैसे कोई अपनी मुसीबत के वक़्त सच्चे दिल से दुआ करता है। ख़ास ध्यान से दुआ करता बल्कि इस से भी ज़्यादा व्याकुलता तथा वेदना के साथ की जाए और कुछ अपना हिस्सा नहीं रखना चाहिए कि इस से मुझ को यह सवाब होगा या यह दर्जा मिलेगा बल्कि ख़ालिस यही लक्ष्य चाहिए कि अल्लाह तआला की पूर्ण बरकतें हज़रत रसूल मक़बूल पर नाज़िल हों और उस का जलाल दुनिया और आख़िरत में चमके और इसी मतलब पर हिम्मत चाहिए और दिन रात निरन्तर ध्यान देना चाहिए यहां तक कि कोई मुराद अपने दिल में इस से ज़्यादा ना हो।

(मुक्तूबात अहमद ,भाग 1,पृष्ठ 523 ,मकतूब मीर अब्बास अली साहिब के नाम, मकतूब नंबर 10)

फिर हमें दरूद शरीफ़ पढ़ने की नसीहत करते हुए आप फ़रमाते हैं कि:

"दरूद शरीफ़ ..... बहुत अधिक पढ़ो। मगर ना रस्म और आदत के तौर पर बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुस्न और एहसान को समक्ष रखकर और आपके मदारिज और मुरातिब की तरक़्क़ी के लिए, और आपकी कामयाबियों के लिए।"

(मलफ़ूज़ात ,भाग 9 ,पृष्ठ 23,प्रकाशन 1985 ई, प्रकाशक यु. के)

आप की कामयाबियां क्या हैं? कि हक़ीक़ी इस्लाम का दुनिया में फैलना और क़ायम होना, इस्लाम के नाम पर आजकल जो बुराई और फ़साद फैले हुए हैं उनका ख़ात्मा करना। अत: आज हर अहमदी का फ़र्ज़ है कि ऐसी हालत अपने पर तारी करे और इस तरह दुआएं करे और दरूद भेजे और यही हमारे लिए माध्यम है कि दआओं के माध्यम से दुनिया के फसादों का ख़ातमा हम करें।

फिर एक अवसर पर अपने एक मुरीद को दरूद पढ़ने की तरफ़ ध्यान दिलाते हुए आप ने फ़रमाया:

"आप दुरूद शरीफ़ के पढ़ने में बहुत ही ध्यान दें और जैसा कोई अपने प्यारे के लिए वास्तव में बरकत चाहता है ऐसे ही शौक़ और इख़लास से हज़रत नबी करीम के लिए बरकत चाहें और बहुत ही विनय से चाहें और इस विनय और दुआ में कुछ बनावट ना हो बल्कि चाहिए कि हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सच्ची दोस्ती और मुहब्बत हो और फ़िल-हक़ीक़त रूह की सच्चाई से वे बरकतें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए मांगी जाएं कि जो दुरूद शरीफ़ में वर्णित हैं ..... और ज़ाती मुहब्बत की यह निशानी है कि इन्सान कभी ना थके और ना कभी दुखी हो और ना नफ़सानी उद्देश्यों का दख़ल हो और केवल इसी उद्देश्य के लिए पढ़े कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ख़ुदावंद करीम की बरकतें प्रकट हों।"

(मुक्तूबात अहमद, भाग 1,पृष्ठ 534-535 ,मकतूब बनाम मीर अब्बास अली साहिब ,मकतूब नंबर 18)

दरूद शरीफ़ पढ़ने की हिक्मत के बारे में एक जगह आप ने बयान फ़रमाया कि:

"यद्यपि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को किसी दूसरे की दुआ की ज़रूरत नहीं लेकिन इस में एक निहायत गहरा भेद है। बड़ा गहरा राज़ है जो आदमी ज़ाती मुहब्बत से किसी के लिए रहमत और बरकत चाहता है वह व्यक्तिगत मुहब्बत के कारण इस आदमी के वजूद का एक भाग हो जाता है और चूँकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर फ़ैज़ान हज़रत अहदीयत के बे-इंतिहा हैं इसलिए दरूद भेजने वालों को कि जो ज़ाती मुहब्बत से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए बरकत चाहते हैं बे-इंतिहा बरकतों से अपने जोश के अनुसार हिस्सा मिलता है मगर बग़ैर रुहानी जोश और ज़ाती मुहब्बत के ये फ़ैज़ान बहुत ही कम ज़ाहिर होता है।

(मक्तूबात अहमद, भाग 1,पृष्ठ 535 ,मकतूब बनाम मीर अब्बास अली साहिब, मकतूब नंबर 18)

अत: बहुत अधिक व्यक्तिगत जोश और मुहब्बत की भावना के साथ दरूद भी भेजना चाहिए। अल्लाह तआला दरूद शरीफ़ पढ़ने के बारे में यह जोश हम में पैदा फ़रमाए और हम हक़ीक़ी रंग में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजने वाले हों और उन कामयाबियों और विजयों को देखने और इस का हिस्सा पाने वाले हों जिनका अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया हुआ है और जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ के माध्यम से इस ज़माने में मुक़द्दर की गई हैं। हमें किसी हुकूमत और किसी आलमे दीन, तथाकथित आलमे दीन के प्रमाण की ज़रूरत नहीं कि हम मुसलमान हैं या नहीं या किसी फ़ार्म पर लिखने से हम मुसलमान या ग़ैर मुस्लिम नहीं बन जाते। सिर्फ और सिर्फ एक सनद हमें चाहिए और वह अल्लाह तआला की रज़ा है कि अल्लाह तआला हम से राज़ी हो और वह उसी वक़्त हमें वह सनद प्रदान फ़रमाएगा जब हम हक़ीक़त में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत का हक़ अदा करने वाले बनेंगे, आपकी पैरवी करने वाले बनेंगे। हमारे दरूद आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक पहुंच कर फिर हमें भी इन बरकतों का हिस्सादार बनाएंगे जिनका अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वादा फ़रमाया हुआ है। अल्लाह तआला हमें उस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

अब इस तरह यह साल भी समापन को पहुंच रहा है। कुछ मुल्कों में चौबीस घंटे और कुछ में दो दिन और दो रातें बाक़ी हैं। अत: इन आख़िरी दिनों को भी दुरूद से भर दें और नए साल का स्वागत भी दरूद और सलाम से करें ताकि हम शीघ्रता से उन बरकतों को हासिल करने वाले हूँ जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात से जुड़ी हैं। अल्लाह तआला हमें उस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए, हर मुख़ालिफ़ से हमें बचाए और उनकी बुराइयां उन पर उलटाए।

अब हम दुआ करेंगे। दुआ में शामिल हो जाएं मेरे साथ। (दुआ)

(दुआ के बाद हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया) इस वक़्त जलसा सालाना कादियान में हाज़िरी जो है मैंने अठारह उन्नीस हज़ार बताई थी,exact जो फिगर (figure)सामने आए हैं उस के अनुसार इस वक़्त वहां 18864 की हाज़री है और 48 देशों की नुमाइंदगी हो रही है। अल्लाह तआला इन सबको इस जलसा की बरकतों से फ़ैज़ उठाने की तौफ़ीक़ दे और वहां जो मेहमान आए हुए हैं, विभिन्न देशों से आए हुए हैं, पाकिस्तान से आए हुए हैं अल्लाह तआला इन सब को ख़ैरीयत से अपने अपने देशों में लेकर जाए और अपनी हिफ़ाज़त में रखे। यहां यू.के की जो हाज़री है इस वक़्त वह 5365 है और औरतों की तक़रीबन 2400 और मर्दों की 2600। अब यह कादियान वाले जो उन्होंने अपना अगला प्रोग्राम पेश करना है वह करना शुरू कर दें।

☆ ☆ ☆

सलाम

बहज़ूर सय्यदुल अनाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

हज़रत डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माइल साहिब रज़ि

बदर गाहे ज़ी शाने ख़ैरुल अनाम
शफीउल वरा मरजअ ख़ासो आम
बसद इजज़ो मिन्नत बसद इहतराम
यह करता है अर्ज़ आप का इक ग़ुलाम
कि ऐ शाहे कौनीन आली मकाम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

हसीनान आलम हुए शरमगीं
जो देखा वह हुस्न और वह नूर जबीं
फिर उस पर वह अख़लाके अकमल तरीं
कि दुश्मन भी कहने लगे आफरीं
ज़हे ख़ुलके कामिल ज़हे हुसने ताम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

ख़लाइक़ दिल थे यकीं से तही
बुतों ने थी हक की जगह घेर ली
ज़लालत थी दुनिया पे वह छा रही
कि तौहीद ढूंढे से मिलती न थी
हुआ आप के दम से इसका क़याम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

मुहब्बत से घायल किया आप ने
दलायल से कायल किया आप ने
जहालत को ज़ायल किया आप ने
शरीयत को कामिल किया आप ने
बयां कर दिए सब हलाल व हराम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

नबुव्वत के थे जिस कदर भी कमाल
वह सब आप में जमा थे ला मुहाल
सिफाते जमाल और सिफाते जलाल
हर इक रंग है बस अदीमुल मिसाल
लिया ज़ुल्म का अफ़ू से इंतकाम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

मुकद्दस हयात और मुतह्हर मज़ाक
इताअत में सकता इबादत में ताक
सवारे जहां गीर यकराँ बुराक
कि बगुज़शत अज़ कैसर नीली रवाक
मुहम्मद ही नाम और मुहम्मद ही काम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

अलमदारे उश्शाके ज़ाते यगाँ
सिपहदारे अफवाजे कुद्दुसिया
मआरिफ़ का इक कुलज़ुम बेकरां
इफ़ाज़ात में ज़िन्दा ए जावेदां
पिला साकिया आबे कौसर का जाम
अलैकस्सलातो अलैकस्सलाम

☆ ☆ ☆

हे अल्लाह के रसूल! मेरे मां-बाप आप पर बलिहारी। जब आप सुरक्षित हैं तो कोई मरे मझे परवाह नहीं।

ईसाई जगत मरयम मगदलीनी (MAGDALENE) और उसकी साथी स्त्रियों की उस वीरता पर गर्व करता है। कि वह मसीह की क़ब्र पर प्रातःकाल शत्रुओं से छुप कर पहुँची थी। मैं उन से कहता हूँ आओ तनिक मेरे प्रियतम के वफ़ादारों और प्राण बलिदान करने वालों को देखो किन परिस्थितियों में उन्होंने उस का साथ दिया और किन अवस्थाओं में उन्होंने एकेश्वरवाद के ध्वज को फहराया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि की " नबियों का सरदार" का ईमान वर्धक अध्याय

काफ़िरों की सेना ने बदर की रणभूमि से भागते हुए यह घोषणा की थी कि अगले वर्ष हम पुनः मदीना पर आक्रमण करेंगे तथा मुसलमानों से अपनी पराजय का बदला लेंगे। अतः एक वर्ष के पश्चात् वे पुनः पूरी तैयारी करके मदीना पर आक्रमणकारी हुए। मक्का वालों की यह दशा थी कि उन्होंने बदर के युद्ध के पश्चात् यह घोषणा कर दी थी कि किसी व्यक्ति को अपने पुरुषों पर रोने की आज्ञा नहीं तथा जो व्यापारिक काफ़िले आएंगे उनकी आय भावी युद्ध के लिए सुरक्षित रखी जाएगी। अतः बड़ी तैयारी के पश्चात् तीन हज़ार से अधिक सैनिकों के साथ अबू सुफ़यान मदीना पर आक्रमणकारी हुआ। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहबारज़ि. से परामर्श किया कि क्या हमें शहर में ठहर कर मुक़ाबला करना चाहिए या बाहर निकलकर? आप का अपना विचार यही था कि शत्रु को आक्रमण करने दिया जाए ताकि युद्ध के आरम्भ करने का वही उत्तरदायी हो और मुसलमान अपने घरों में बैठ कर आसानी से सामना कर सकें, परन्तु वे मुसलमान युवक जिन्हें बदर के युद्ध में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ था और जिनके हृदयों में एक पीड़ा थी कि काश ! हमें भी ख़ुदा के मार्ग में शहीद होने का अवसर प्राप्त होता। उन्होंने आग्रह किया कि हमें शहीद होने से क्यों वंचित किया जाता है। अतः आप ने उनकी बात स्वीकार कर ली।

परामर्श करते समय आप ने एक स्वप्न भी सुनाया। फ़रमाया— स्वप्न में मैंने कुछ गाएं देखी हैं तथा मैंने देखा कि मेरी तलवार का सिरा टूट गया है और मैंने यह भी देखा कि वे गाएं ज़िब्ह की जा रही हैं और फिर यह कि मैंने अपना हाथ एक मज़बूत और सुरक्षित कवच के अन्दर डाला है और मैंने यह भी देखा कि मैं एक मेंढे की पीठ पर सवार हूँ। सहाबा रज़ि. ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! आप ने इन स्वप्नों की क्या ता'बीर की? आपने फ़रमाया गाय के ज़िब्ह करने की ता'बीर यह है कि मेरे कुछ सहाबा रज़ि. शहीद होंगे और तलवार का सिरा टूटने से अभिप्राय यह मालूम होता है कि मेरे प्रियजनों में से कोई प्रमुख व्यक्ति शहीद होगा अथवा कदाचित मुझे ही इस युद्ध में कोई कष्ट पहुँचे तथा कवच के अन्दर हाथ डालने का अभिप्राय मैं यह समझता हूँ कि हमारा मदीना में ठहरना अधिक उचित है और मेंढे पर सवार होने वाले स्वप्न की ता'बीर से यह प्रतीत होता है कि काफ़िरों के सरदार पर हम विजयी होंगे अर्थात् वह मुसलमानों के हाथ से मारा जाएगा। यद्यपि इस स्वप्न में मुसलमानों पर यह स्पष्ट कर दिया गया था कि उनका मदीना में रहना अधिक उचित है परन्तु चूंकि स्वप्न की ता'बीर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अपनी थी, इल्हामी नहीं थी, आपने बहुमत को स्वीकार कर लिया और यूद्ध के लिए बाहर जाने का निर्णय कर दिया। जब आप बाहर निकले तो युवकों के अपने हृदय में लज्जा का आभास हुआ। उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल ! जो आप का परामर्श है वही उचित है, हमें मदीना में ठहर कर शत्रु का सामना करना चाहिए। आप ने फ़रमाया ख़ुदा का नबी जब कवच धारण कर लेता है तो उतारा नहीं करता। अब चाहे कुछ भी हो हम आगे ही जाएंगे। यदि तुम ने धैर्य से काम लिया तो ख़ुदा की सहायता तुम्हारे साथ होगी। यह कह कर आप एक हज़ार सेना के साथ मदीना से निकले और थोड़ी दूर जाकर रात व्यतीत करने के लिए डेरा डाल दिया। आप का सदैव यह नियम था कि आप शत्रु के पास पहुँच कर अपनी सेना को कुछ समय विश्राम करने का अवसर दिया करते थे, ताकि वे अपने सामान आदि तैयार कर लें। प्रातःकाल की नमाज़ के समय जब आप निकले तो आप को ज्ञात हुआ कि कुछ यहूदी भी अपने समझौता किए हुए क़बीलों की सहायता के बहाने आए हैं। चूंकि यहूदियों के षड्यंत्रों की जानकारी आप को हो चुकी थी। आप ने फ़रमाया इन लोगों को वापस कर दिया जाए। इस पर अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल जो मुनाफ़िक़ों (द्वैमुखी लोगों) का सरदार था वह भी अपने तीन सौ साथियों को लेकर यह कहते हुए वापस लौट गया कि अब यह लड़ाई नहीं रही, यह तो विनाश को निमंत्रण देना है; क्योंकि स्वयं अपने सहायकों को युद्ध से रोका जाता है। परिणामस्वरूप मुसलमान मात्र सात सौ रह गए जो शत्रु सेना की संख्या के चौथाई भाग से भी कम थे और युद्ध सामग्री की दृष्टि से और भी निर्बल; क्योंकि शत्रु सेना में सात सौ कवचधारी थे और मुसलमानों में मात्र एक सौ कवचधारी। शत्रु सेना में दो सौ घुड़सवार थे परन्तु मुसलमानों के पास केवल दो घोड़े थे। अस्तु आप 'उहद' के स्थान पर पहुँचे। वहाँ पहुँच कर आपने एक दर्रे की सुरक्षा के लिए पचास सैनिक नियुक्त किए और सैनिकों के अफ़सर को निर्देश दिया कि दर्रा इतना महत्त्वपूर्ण है कि चाहे हम मौत के घाट उतार दिए जाएँ या विजयी हो जाएँ तुम यहाँ से न हटना। इस के बाद आप शेष छः सौ पचास सैनिक लेकर शत्रु का सामना करने के लिए निकले, जो अब शत्रु की संख्या से लगभग पांचवां भाग थे। युद्ध हुआ तथा अल्लाह तआला की सहायता और सहयोग से थोड़ी ही देर में साढ़े छः सौ मुसलमानों के मुकाबले में मक्का का तीन हज़ार अनुभवी सैनिक दल सर पर पैर रख कर भागा।

विजय : पराजय के आवरण में

मुसलमानों ने उन का पीछा करना आरम्भ किया। यह देख कर दर्रे की सुरक्षा पर नियुक्त सैनिकों ने अपने अफ़सर से कहा कि अब तो शत्रु पराजित हो चुका है, अब हमें भी जिहाद का पुण्य प्राप्त करने दिया जाए। अफ़सर ने उन्हें इस बात से रोका तथा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदेश स्मरण कराया परन्तु उन्होंने कहा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो कुछ फ़रमाया था केवल ज़ोर देने के लिए फ़रमाया था अन्यथा आप का अभिप्राय यह तो नहीं हो सकता था कि शत्रु भाग भी जाए तो भी यहां खड़े रहो। यह कहते हुए उन्होंने दर्रा छोड़ दिया और रणभूमि में कूद पड़े। भागती हुई सेना में से ख़ालिद बिन वलीद जो बाद में इस्लाम के महान सेनापति सिद्ध हुए की दृष्टि ख़ाली दर्रे पर पड़ी जहां केवल कुछ सैनिक अपने अफ़सर के साथ खड़े थे। ख़ालिद ने अपनी (काफ़िरों की) सेना के अन्य सेनापति उमर बिन अलआस को आवाज़ दी और कहा कि पीछे पहाड़ी दर्रे पर तनिक दृष्टि डालो। उमर बिन अलआस ने जब दर्रे पर दृष्टि डाली तो समझा कि मुझे जीवन का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हो रहा है। दोनों सेनापतियों ने अपनी भागती हुई सेना को संभाला और इस्लामी सेना को भारी क्षति पहुँचाते हुए पर्वत पर चढ़ गए, वहां दर्रे की सुरक्षा के लिए थोड़े से मुसलमान खड़े रह गए थे, उनको टुकड़े-टुकड़े करते हुए पीछे से इस्लामी सेना पर टूट पड़े। उनके विजय-नाद को सुनकर शत्रु की भागती सेना रणभूमि की ओर लौट पड़ी। यह आक्रमण ऐसा अचानक हुआ तथा काफ़िरों का पीछा करने के कारण मुसलमान इतने बिखर गए कि उन लोगों के मुक़ाबले में कोई समुचित इस्लामी सेना नहीं थी। रणभूमि में अकेला-अकेला सैनिक दिखाई दे रहा था, जिन में से कुछ को उन लोगों ने मार दिया, शेष इस असमंजस में थे कि यह हो क्या गया है पीछे की ओर दौड़े। कुछ सहाबा दौड़ कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चारों ओर एकत्र हो गए जिनकी संख्या अधिक से अधिक तीस थी। काफ़िरों ने उस स्थान पर भयंकर आक्रमण किया जहां रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े थे। सहाबा एक के बाद एक आप की रक्षा करते हुए मारे जाने लगे। कृपाणधारियों के अतिरिक्त धनुषधारी ऊँचे टीलों पर खड़े होकर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर अंधाधुंध वाण-वर्षा कर रहे थे। उस समय तल्हा रज़ि. ने जो क़ुरैश में से थे तथा मक्का के मुहाजिरों में से थे, यह देखते हुए कि शत्रु सब के सब तीर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुख की ओर फेंक रहा है अपना हाथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुख के आगे खड़ा कर दिया। वाण-वर्षा में जो तीर लक्ष्य पर गिरता था वह 'तल्हा रज़ि.' के हाथ पर गिरता था, परन्तु प्राणों की बाज़ी लगाने वाला वफ़ादार सिपाही अपने हाथ को कोई हरकत नहीं देता था। इस प्रकार तीर पड़ते गए और तल्हारज़ि. का हाथ घावों से छलनी हो कर बिल्कुल बेकार हो गया और उनका एक ही हाथ शेष रह गया। वर्षों बाद इस्लाम की चौथी ख़िलाफ़त के युग में जब मुसलमानों में गृह-युद्ध आरम्भ हुआ तो किसी शत्रु ने व्यंग के तौर पर तल्हा को टुण्डा कहा। इस पर एक अन्य सहाबी ने कहा हाँ टुण्डा ही है परन्तु कैसा मुबारक टुण्डा है। तुम्हें ज्ञात है तल्हा का यह हाथ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुख की रक्षा में टुण्डा हुआ था। उहद के युद्धोपरान्त किसी व्यक्ति ने तल्हारज़ि. से पूछा कि जब वाण हाथ पर लगते थे तो क्या आप को दर्द नहीं होता था और क्या आप के मुख से उफ़ नहीं निकलती थी? तल्हा रज़ि. ने उत्तर दिया दर्द भी होता था और उफ़ भी निकलना चाहती थी परन्तु मैं उफ़ करता नहीं था ताकि ऐसा न हो कि उफ़ करते समय मेरा हाथ हिल जाए और तीर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुख पर आ लगे।

परन्तु ये कुछ लोग इतनी विशाल सेना का कब तक मुक़ाबला कर सकते थे क़ाफ़िरों की सेना का एक गिरोह आगे बढ़ा और उस ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास के जवानों को धकेला कर पीछे कर दिया। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां अकेले पर्वत की भांति खड़े थे कि बड़े ज़ोर से एक पत्थर आप के खोद (Security Cap लोहे की टोपी) पर लगा ख़ोद की कील आप के सर पर घुस गई और आप बेहोश होकर उन सहाबा रज़ि. के शवों पर जा पड़े जो आप के चारों ओर लड़ते हुए शहीद हो चुके थे। इस के बाद कुछ अन्य सहाबा रज़ि. आप के शरीर की रक्षा करते हुए शहीद हुए और उनके शव आप के शरीर पर जा गिरे। काफ़िरों ने आप के शरीर को शवों के नीचे दबा हुआ देख कर समझा कि आप मारे जा चुके हैं। अत: मक्का की सेना स्वयं को पुनर्गठन के उद्देश्य से पीछे हट गई। जो सहाबा आप के पास खड़े थे और जिन्हें काफ़िरों की सेना का रेला ढकेल कर पीछे ले गया था उनमें हज़रत उमर रज़ि. भी थे। जब आप ने देखा कि रणभूमि समस्त लड़ने वालों से साफ हो चुकी है तो आप को विश्वास हो गया कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद हो गए हैं और वह व्यक्ति जिस ने बाद में एक ही समय में क़ैसर तथा किस्रा का मुकाबला बड़ी बहादुरी से किया था और उस का हृदय कभी नहीं घबराया और न भयभीत हुआ था। वह एक पत्थर पर बैठकर बच्चों की भांति रोने लग गया, इतने में मालिक रज़ि. नामक एक सहाबी जो इस्लामी सेना की विजय के समय पीछे हट गए थे; क्योंकि वह निराहार थे और रात से उन्होंने कुछ नहीं खाया था। जब विजय हो गई तो कुछ खजूरें लेकर पीछे की ओर चले गए ताकि उन्हें खाकर अपनी भूख दूर करें। वह विजय की ख़ुशी में टहल रहे थे कि टहलते-टहलते हज़रत उमर रज़ि. तक जा पहुँचे और उमर रज़ि. को रोते देख कर हैरान हुए और आश्चर्य से पूछा उमर आप को क्या हुआ? इस्लाम की विजय पर आप को प्रसन्न होना चाहिए या रोना चाहिए? उमर ने उत्तर में कहा मालिक! कदाचित तुम विजय के तुरन्त बाद पीछे हट आए थे, तुम्हें मालूम नहीं कि काफ़िरों की सेना पहाड़ी के पीछे से चक्कर काटकर इस्लामी सेना पर टूट पड़ी और चूंकि मुसलमान अस्त-व्यस्त हो चुके थे, उनका मुकाबला कोई न कर सका। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुछ सहाबा के साथ उन के मुक़ाबले के लिए खड़े हुए और मुक़ाबला करते-करते शहीद हो गए। मालिक रज़ि. ने कहा— उमर यदि यह बात सही है तो आप यहां बैठे क्यों रो रहे हैं, जिस लोक में हमारा प्यारा गया है हमें भी तो वहीं जाना चाहिए। यह कहा और वह अन्तिम खजूर जो आप के हाथ में थी जिसे आप मुख में डालने ही वाले थे उसे यह कहते हुए फेंक दिया कि हे खजूर! मालिक और स्वर्ग के मध्य तेरे अतिरिक्त और कौन सी वस्तु रोक है यह कहा और तलवार लेकर शत्रु की सेना में घुस गए। तीन हज़ार सेना के मुकाबले में एक व्यक्ति कर ही क्या सकता था, परन्तु एक ख़ुदा की उपासना करने वाली भावना बहुतों पर भारी होती है। मालिकरज़ि. इस निर्भयता से लड़े कि शत्रु स्तब्ध रह गया परन्तु अन्ततः घायल हुए, फिर गिरे तथा गिर कर भी शत्रुओं के सैनिकों पर आक्रमण करते रहे, जिस के परिणामस्वरूप मक्का के काफ़िरों ने आप पर इतना भयानक आक्रमण किया कि युद्ध के पश्चात् आप के शव के सत्तर टुकड़े मिले, यहां तक कि आप का शव पहचाना नहीं जाता था। अन्त में आप की बहन ने एक उंगली से पहचान कर बताया कि यह मेरे भाई का शव है।

वे सहाबा रज़ि. जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चारों ओर थे और जो काफ़िरों की सेना की बहुतात के कारण पीछे

ढकेल दिए गए थे, काफ़िरों के पीछे हटते ही वे पुन: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एकत्र हो गए। उन्होंने आपके मुबारक शरीर को उठाया तथा एक सहाबी उबैदा बिन जर्राह ने अपने दांतों से आप के सर में घुसी हुई कील को ज़ोर से निकाला जिस से उनके दो दांत टूट गए। थोड़ी देर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को होश आ गया और सहाबा ने मैदान में चारों ओर लोग दौड़ा दिए कि मुसलमान पुन: एकत्र हो जाएं। भागी हुई सेना पुन: एकत्र होने लगी। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन्हें लेकर पर्वत के आंचल में चले गए। जब पर्वत के आंचल में बची हुई सेना खड़ी थी तो अबू सुफ़यान ने बड़े ज़ोर से आवाज़ दी और कहा— हम ने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मार दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू सुफ़यान की बात का उत्तर न दिया ताकि ऐसा न हो कि शत्रु वस्तु स्थिति से अवगत हो कर पुन: आक्रमण कर दे और घायल मुसलमान पुन: शत्रु के आक्रमण के शिकार हो जाएँ। जब इस्लामी सेना से इस बात का कोई उत्तर न मिला तो अबू सुफ़यान को विश्वास हो गया कि उस का अनुमान उचित है तब उसने बड़े ज़ोर से आवाज़ देकर कहा हम ने अबू बक़र रज़ि. को भी मार दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू बकर रज़ि. को आदेश दिया कि कोई उत्तर न दें। अबू सुफ़यान ने फिर आवाज़ दी हम ने उमर रज़ि. को भी मार दिया। तब उमर रज़ि. जो बहुत जोशीले व्यक्ति थे, उन्होंने उसके प्रत्युत्तर में यह कहना चाहा कि हम लोग ख़ुदा की कृपा से जीवित हैं और तुम्हारा मुकाबला करने के लिए तैयार हैं परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रोक दिया कि मुसलमानों को कष्ट में न डालो, ख़ामोश रहो। अत: काफ़िरों को विश्वास हो गया कि इस्लाम के प्रवर्तक तथा उनके दाएं-बाएं की सेना को भी हमने मौत के घाट उतार दिया है। इस पर अबू सुफ़यान और उसके साथियों ने ख़ुशी से जयघोष किया اُعْلُ هُبَل اُعْلُ هُبَل 'हमारी सम्माननीय मूर्ति हुबुल की जय हो' कि उसने आज इस्लाम का अन्त कर दिया है। वही रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो अपनी मृत्यु की घोषणा पर, अबू बकर रज़ि. की मृत्यु की घोषणा पर तथा उमर रज़ि. की मृत्यु की घोषणा पर ख़ामोश रहने का उपदेश दे रहे थे ताकि ऐसा न हो कि घायल मुसलमानों पर काफ़िरों की सेना फिर से आक्रमण न कर दे और मुट्ठी भर मुसलमान उसके हाथों शहीद हो जाएं। अब जब कि एक ख़ुदा की प्रतिष्ठा का प्रश्न उत्पन्न हुआ और मैदान में द्वैतवाद का जयघोष किया गया तो आपकी आत्मा व्याकुल हो उठी तथा आपने अत्यन्त जोश के साथ सहाबा की ओर देखते हुए फ़रमाया तुम लोग उत्तर क्यों नहीं देते। सहाबा ने कहा हे अल्लाह के रसूल! हम क्या कहें? फ़रमाया कहो اَللّٰهُ اَعْلٰى وَاَجَلُّ (अल्लाहो आ'ला व अजल्ल) तुम झूठ बोलते हो कि हुबुल की शान ऊँची हुई। ख़ुदा एक है उसका कोई साथी नहीं, वह प्रतिष्ठावान है तथा बड़ी शान वाला है। और इस प्रकार आपने अपने जीवित होने की सूचना शत्रुओं को पहुँचा दी। इस वीरता और निर्भीकतापूर्ण उत्तर का प्रभाव काफ़िरों की सेना पर इतना गहरा पड़ा कि इसके बावजूद कि उनकी आशाएं इस उत्तर से मिट्टी में मिल गईं तथा इसके बावजूद कि उन के सामने मुट्ठी भर मुसलमान खड़े थे जिन पर आक्रमण करके उन्हें मार देना सांसारिक दृष्टि से बिल्कुल संभव था वे दोबारा आक्रमण करने का साहस न कर सके और उन्हें जिस सीमा तक विजय प्राप्त हुई थी उसी की खुशियां मनाते हुए मक्का को प्रस्थान किया। उहद के युद्ध में स्पष्ट विजय के पश्चात् एक पराजय का रूप देखने को मिला परन्तु यह युद्ध वास्तव में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई का एक महान चमत्कार पूर्ण प्रमाण था। इस युद्ध में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार मुसलमानों को पहले सफलता प्राप्त हुई फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार आप के प्रिय चाचा हम्ज़ा रज़ि. युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए, फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार स्वयं आप भी घायल हुए और बहुत से सहाबा शहीद हुए। इसके अतिरिक्त मुसलमानों को ऐसी आत्मीय शुद्धि और ईमान के प्रदर्शन का अवसर प्राप्त हुआ, जिस का उदाहरण इतिहास में और कहीं नहीं मिलता। इस वफ़ादारी और ईमान के प्रदर्शन की कुछ घटनाएं तो पहले वर्णन हो चुकी हैं एक अन्य घटना भी उल्लेखनीय है जिस से ज्ञात होता है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की संगति ने सहाबा रज़ि. के हृदयों में कितना दृढ़ ईमान पैदा कर दिया था। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुछ सहाबा को साथ लेकर पर्वत के आंचल की ओर चले गए और शत्रु पीछे हट गया तो आप ने कुछ सहाबा रज़ि. को आदेश दिया कि वे मैदान में जाएं और घायलों को देखें। एक सहाबी मैदान में खोज करते-करते एक घायल अन्सारी के पास पहुँचे। देखा तो उन की दशा बड़ी दयनीय थी और वह प्राण त्याग रहे थे। यह सहाबी उन के पास पहुँचे और उन्हें अस्सलामो अलैकुम कहा। उन्होंने कांपता हुआ हाथ मिलाने के लिए उठाया और उन का हाथ पकड़ कर कहा— मैं प्रतीक्षा कर रहा था कि कोई भाई मुझे मिल जाए। उन्होंने उस सहाबी से पूछा कि आपकी दशा तो ख़तरनाक विदित होती है। क्या कोई सन्देश है जो आप अपने परिजनों को देना चाहते हैं? उस मरणासन्न सहाबी ने कहा हाँ ! मेरी ओर से मेरे परिजनों को सलाम कहना कि मैं तो मर रहा हूँ परन्तु अपने पीछे ख़ुदा तआला की एक पवित्र अमानत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अस्तित्व तुम में छोड़े जा रहा हूँ। हे मेरे भाइयो और सम्बन्धियो ! वह ख़ुदा का सच्चा रसूल है। मैं आशा करता हूँ कि तुम उसकी रक्षा में अपने प्राण न्योछावर करने से संकोच नहीं करोगे तथा मेरी इस वसीयत को स्मरण रखोगे (मुअत्ता तथा ज़रक़ानी) मरने वाले मनुष्य के हृदय में अपने परिजनों को पहुँचाने के लिए हज़ारों सन्देश पैदा होते हैं परन्तु ये लोग मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की संगति में अपने आप को इतना विस्मृत कर चुके थे कि न उन्हें अपने पुत्र याद आ रहे थे, न पत्नियां। न, धन-दौलत याद आ रही थी, न संपत्तियां। उन्हें यदि कुछ स्मरण था तो केवल मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अस्तित्व ही स्मरण था। वे जानते थे कि संसार की मुक्ति इस व्यक्ति के साथ है। हमारे मृत्योपरान्त यदि हमारी सन्तानें जीवित रहीं तो वे कोई बड़ा कार्य नहीं कर सकतीं परन्तु यदि इस मुक्तिदाता की सुरक्षा में उन्होंने अपने प्राण दे दिए तो यद्यपि हमारे अपने वंश मिट जाएंगे परन्तु संसार जीवित हो जाएगा, शैतान के पंजे में फंसा हुआ मनुष्य फिर मुक्ति पा जाएगा; क्योंकि हमारे वंशों के जीवन से हज़ारों गुना अधिक मूल्यवान लोगों का जीवन और मोक्ष है।

अस्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने घायलों और शहीदों को एकत्र किया घायलों की मरहम-पट्टी की गई तथा शहीदों को दफ़्न करने का प्रबंध किया गया। उस समय आप को मालूम हुआ कि मक्का के अत्याचारी काफ़िरों ने कुछ मुसलमान शहीदों के नाक-कान काट दिए हैं। अत: ये लोग जिनके नाक-कान काटे गए थे उन में स्वयं आप के चाचा हम्ज़ा रज़ि. भी थे। आप को यह द्रश्य देख कर बहुत दु:ख हुआ तथा आप ने फ़रमाया— काफ़िरों ने स्वयं अपने कर्म से अपने लिए इस बदले को उचित बना दिया है जिसे हम

अनुचित समझते थे। परन्तु ख़ुदा तआला की ओर से उस समय आप को वह्यी (ईशवाणी) हुई कि काफ़िर जो कुछ करते हैं उन्हें करने दो, तुम दया और न्याय का आंचल हमेशा थामे रखो।

उहद के युद्ध से वापसी तथा मदीना वासियों की त्याग-भावनाएं

जब इस्लामी सेना वापस मदीना की ओर लौटी तो उस समय तक रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शहीद होने तथा इस्लामी सेना के अस्त-व्यस्त होने का समाचार मदीना पहुँच चुका था। मदीने की स्त्रियां और बच्चे पागलों की भांति आगे बढ़ते हुए उहद की ओर भागे चले जा रहे थे। अधिकांश को तो मार्ग में सूचना मिल गई और वे रुक गए परन्तु बनू दीनार क़बीले की एक महिला पागलों की तरह आगे बढ़ते हुए उहद तक जा पहुँची। जब वह पागलों की भांति उहद के मैदान की ओर जा रही थी, उस महिला का पति, भाई तथा पिता उहद में मारे जा चुके थे तथा कुछ कथानकों में है कि एक बेटा भी मारा गया था। जब उसे उसके बाप के मारे जाने की सूचना दी गई तो उसने कहा— मुझे यह बताओ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है ? चूंकि सूचना देने वाले रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर से संतुष्ट थे वे बारी-बारी उसे उसके भाई, पति और पुत्र की मृत्यु की सूचना देते चले गए परन्तु वह यही कहती चली जाती थी مَافعل رَسُوْل الله صَلَّى اللهُ عَلَيه وَسَلَّم (मा फ़अला रसूलुल्लाहे सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) अरे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह क्या किया। देखने में यह वाक्य ग़लत मालूम होता है और इसी कारण इतिहासकारों ने लिखा है कि इसका तात्पर्य यह था कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से क्या हुआ परन्तु वास्तविकता यह है कि यह वाक्य ग़लत नहीं अपितु स्त्रियों की सामान्य बोल-चाल के अनुसार बिल्कुल सही है। एक स्त्री की संवेदनाएं बहुत तीव्र होती हैं और वह प्राय: मृत्कों को जीवित समझ कर बात करती हैं। उदाहरणतया कुछ स्त्रियों के पति और पुत्रों का निधन हो जाता है तो उनके निधन पर आर्तनाद में से सम्बोधित हो कर वे इस प्रकार की बातें करती रहती हैं कि मुझे किस पर छोड़ चले हो? बेटा इस बुढ़ापे में मुझ से क्यों मुख मोड़ लिया? शोकातुर अवस्था में यह अद्भुत रहस्यमय भावोद्रेक का प्रदर्शन मानव प्रकृति की यथार्थता है।

इसी प्रकार रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु का समाचार सुन कर उस स्त्री का हाल हुआ। वह आपको मृतक रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थी और दूसरी ओर इस सूचना का खण्डन भी नहीं कर सकती थी। इसलिए शोक के तीव्र संवेग में यह कहती जाती थी अरे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह क्या किया अर्थात् ऐसा वफ़ादार व्यक्ति हमें यह आघात पहुँचाने पर क्योंकर सहमत हो गया।

जब लोगों ने देखा कि उसे अपने पिता, पति और भाई की कोई परवाह नहीं तो वे उसकी सच्ची भावनाओं को समझ गए तो उन्होंने कहा कि अमुक की मां ! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो जिस प्रकार तू चाहती है ख़ुदा की कृपा से कुशलपूर्वक हैं। इस पर उसने कहा मुझे दिखाओ वह कहां हैं? लोगों ने कहा आगे चली जाओ, वह आगे खड़े हैं। वह महिला भाग कर आप तक पहुँची तथा आप के आंचल को पकड़ कर बोली हे अल्लाह के रसूल ! मेरे मां-बाप आप पर बलिहारी। जब आप सुरक्षित हैं तो कोई मरे मझे परवाह नहीं। (بِاَبِیْ اَنْتَ وَاُمِّیْ یَارَسُوْلَ اللهِ لَا اُبَالِیْ اِذَا سَلِّمْتَ مِنْ عَطَبٍ)

पुरुषों ने युद्ध में ईमान का वह आदर्श प्रदर्शित किया और स्त्रियों ने वफ़ादारी का यह नमूना दिखाया जिस का उदाहरण अभी मैंने वर्णन किया है। ईसाई जगत मरयम मगदलीनी (MAGDALENE) और उसकी साथी स्त्रियों की उस वीरता पर गर्व करता है। कि वह मसीह की क़ब्र पर प्रात:काल शत्रुओं से छुप कर पहुँची थी। मैं उन से कहता हूँ आओ तनिक मेरे प्रियतम के वफ़ादारों और प्राण बलिदान करने वालों को देखो किन परिस्थितियों में उन्होंने उस का साथ दिया और किन अवस्थाओं में उन्होंने एकेश्वरवाद के ध्वज को फहराया।

इस प्रकार के त्याग की भावना का एक अन्य उदाहरण और भी इतिहास की पुस्तकों में मिलता है। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीदों को दफ़्न करके मदीना वापस गए तो फिर स्त्रियां और बच्चे स्वागत के लिए नगर से बाहर निकल आए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ऊँटनी की बाग मदीना के रईस सअद बिन मआज़ ने पकड़ी हुई थी और गर्व से आगे-आगे दौड़े जाते थे। कदाचित संसार से यह कह रहे थे कि देखा हम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कुशलपूर्वक अपने घर वापस ले आए। शहर के पास उन्हें अपनी बूढ़ी मां जिसकी दृष्टि कमज़ोर हो चुकी थी, आती हुई मिली। उहद में उसका एक बेटा उमर बिन मआज़ भी मारा गया था उसे देख कर सअद बिन मआज़ ने कहा हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ! मेरी मां !!! हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरी मां आ रही है। आप ने कहा ख़ुदा तआला की बरकतों के साथ आए। बुढ़िया आगे बढ़ी और अपनी कमज़ोर फटी आँखों से इधर-उधर देखा कि कहीं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शक्ल दिखाई दे जाए। अन्तत: रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चेहरा पहचान लिया और प्रसन्न हो गई। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया माई मुझे तुम्हारे बेटे के शहीद होने पर तुम से सहानुभूति है। इस पर उस नेक स्त्री ने कहा हुज़ूर ! जब मैंने आपको सुरक्षित देख लिया तो समझो कि मैंने कष्ट को भून कर खा लिया। "कष्ट को भून कर खा लिया" कितना विचित्र मुहावरा है, प्रेम की कितनी आगाध भावनाओं को दर्शाता है। शोक मनुष्य को खा जाता है वह स्त्री जिस की वृद्धावस्था में उसके बुढ़ापे का सहारा टूट गया किस बहादुरी से कहती है मेरे बेटे के शोक ने मुझे क्या खाना है जब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जीवित हैं तो मैं उस शोक को खा जाऊँगी। मेरे बेटे की मृत्यु मुझे मारने का कारण नहीं होगी अपितु यह विचार कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए उसने प्राण दिए मेरी शक्ति को बढ़ाने का कारण होगा। हे अन्सार ! मेरे प्राण तुम पर बलिहारी हों, तुम कितना पुण्य ले गए।

☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर के मुख़िया होने के रूप में उच्च आदर्श

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो सब से पहले घर के मुखिया होने के नाते तौहीद की स्थापना का महत्त्व अपने बीवी बच्चों पर स्पष्ट फरमा कर उस पर अमल करवाया लेकिन यह काम भी प्यार और मुहब्बत से करवाया। डंडे के जोर पर नहीं।

इर्शाद हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिल अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़

सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, ख़ुत्बः जुमअः दिनांक 19 मई 2017 ई. में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर के मुखिया के होने के हवाला से उच्च आदर्शों का वर्णन करते हुए फरमाते हैं

"इस्लाम की शिक्षा जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरी हमारी हर मामले में मार्गदर्शन करती है। अगर हम में से प्रत्येक इस मार्गदर्शन का पालन करने वाला बन जाए तो एक सुन्दर समाज स्थापित हो सकता है। आज ग़ैर मुस्लिम दुनिया जो इस्लाम और मुसलमानों के कर्म पर आपत्ति करती है इस आरोप के बजाय यह लोग इस्लाम की शिक्षा पर सही रंग में कर्म करने के कारण मुसलमानों के नमूने के उदाहरण देकर इस्लाम को मानने वाले हो जाते। कुरआन में अनगिनत आदेश दिया है लेकिन उन्हें एक जगह एक वाक्यांश में अल्लाह तआला ने यह कह कर जमा कर दिया कि لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ (अल्अहज़ाबः 22) कि वास्तव में तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में नेक नमूना हैं और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सारा जीवन घर से लेकर व्यापक सामाजिक संबंधों तक सारा कुरआन के आदेश का पालन करने वाली थी। परन्तु खेद है कि मुसलमानों की अधिकतर संख्या अल्लाह तआला के इस आदेश को पढ़ती तो है, इस बात को बड़े सम्मान के दृष्टि से देखती है परन्तु इस पर अनुकरण के समय इस का नज़र अंदाज़ कर दिया जाता है। अतः वास्तविक सफलता तभी हो सकती है जब हम हर मामले में आदर्श को अपने सामने रखें। कई बार व्यक्ति बड़े बड़े मामलों में तो बड़े अच्छे नमूने दिखा रहा होता है, लेकिन ज़ाहिरी तौर पर छोटी दिखने वाली बातों को इस तरह नज़र अंदाज कर दिया जाता है जैसे उनका महत्त्व ही कोई न हो। जबकि इसके विपरीत आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें इन बातों से बहुत ध्यान अपने उपदेशों में भी और अपने नमूने भी दिलवाई है।

अतः अगर अपने जीवन को हम शांतिमय करना चाहते हैं यदि हम अल्लाह तआला के फज़लों को प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें उन्हीं आदर्शों को अपनी जीवन का हिस्सा बनाने की ज़रूरत है जो हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हर मामले में हमारे सामने पेश करे और फिर इस ज़माने में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम ने उन्हें खोलकर हमारे सामने रखा और उस पर अनुकरण की तरफ ध्यान दिलवाया।

मर्दों की ज़िम्मेदारियां

इस समय मैं इस बारे में मर्दों के विभिन्न हैसियतों से ज़िम्मेदारियों के मामले में कुछ कहूंगा। मर्द की घर के मुखिया के तौर पर भी ज़िम्मेदारी है। मर्द की पति के रूप में भी ज़िम्मेदारी है। मर्द बतौर पिता भी ज़िम्मेदारी है फिर संतान के रूप में स्थिति भी ज़िम्मेदारी है। अगर हर आदमी अपनी जिम्मेदारियों को समझ ले और उन्हें अदा करने की कोशिश करे तो यह समाज के व्यापक शांति की स्थापना और प्रेम और भाईचारा की स्थापना करने का साधन बन जाता है। यही बातें औलाद के प्रशिक्षण का माध्यम बनकर शांति और मानवाधिकार स्थापित करनी वाली नस्ल के फैलने का माध्यम बन जाती हैं। घरों की शान्ति इन्हीं बातों से स्थापित हो जाती हैं।

आजकल कई घरों की समस्याएं और शिकायतें सामने आती हैं जहां मर्द अपने आप को घर का मुखिया समझकर यह समझते हुए कि मैं घर का मुखिया हूँ और बड़ा हूँ और मेरे सारे अधिकार हैं न अपनी पत्नी का सम्मान करता है और उसे वैध अधिकार देता है, न ही औलाद के प्रशिक्षण का हक़ अदा करता है केवल नाम का सर्वोच्च है बल्कि ऐसी शिकायतें भी भारत से भी और पाकिस्तान से भी कुछ महिलाओं की तरफ से भी हैं कि पतियों ने पत्नियों को मार मार कर शरीर पर नील डाल दिए या घायल कर दिया। मुंह सुजा दिए बल्कि कुछ लोग तो इन देशों में रहते हुए भी ऐसी हरकतें कर जाते हैं तो बच्चों और बच्चियों पर अत्याचार की सीमा तक कुछ पिता व्यवहार कर रहे होते हैं। अगर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने के बाद भी अज्ञानी लोगों की तरह ही रहना है इन मुसलमानों की तरह रहना है जिन्हें धर्म का बिल्कुल पता नहीं है अपने बच्चों पत्नी बच्चों से वैसा ही व्यवहार करना है जो अज्ञानी लोग करते हैं फिर अपनी अवस्थाओं के बदलने का वादा करके हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का कोई फायदा नहीं।

क्या मर्द जो ख़ुदा का हक़ अदा करने की उनकी ज़िम्मेदारी है और जो व्यावहारिक हालत गुणवत्ता बढ़ाने के लिए उन पर ज़िम्मेदारी है उसे अदा कर रहे हैं यदि यह अदा कर रहे हों तो यह फिर हो ही नहीं सकता कि कभी उनके घरों में अत्याचार हो।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तौहीद की स्थापना की।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो सब से पहले घर के मुखिया होने के नाते तौहीद की स्थापना का महत्त्व अपने बीवी बच्चों पर स्पष्ट फरमा कर उस पर अमल करवाया लेकिन यह काम भी प्यार और मुहब्बत से करवाया। डंडे के जोर पर नहीं। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो घर के मुखिया होने और दुनिया के सुधार और शरीयत के स्थापना की सारी व्यस्तता होने के बावजूद अपने घर वालों के हक़ अदा किए और प्यार और नरमी और प्रेम से यह हक़ अदा किए। घर का मुखिया होने का अधिकार ऐसे अदा किया कि पहले यह एहसास दिलाया कि तुम्हारी ज़िम्मेदारी तौहीद की स्थापना है। अल्लाह तआला की इबादत है और इसलिए हज़रत आयशा कहती हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रात को नफिल के लिए उठते थे और फिर सुबह नमाज़ से कुछ पहले हमें पानी के छींटे मारकर उठाते थे कि नफिल पढ़ो। इबादत करो। अल्लाह तआला का वह हक़ अदा करो जो अल्लाह तआला का अधिकार है

(बुख़ारी किताबुल वितर हदीस 997)

शेष पृष्ठ 28 पर

तकरीर जलसा सालाना कादियान दिसम्बर 2018 ई

सीरत आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम(मानवता की रौशनी में)

मुहम्मद इनाम ग़ौरी (नाज़िर आला सदर अंजुमन अहमदिया कादियान)

अल्लाह तआला कुरआन मजीद में फरमाता है कि

وَ لَقَدۡ كَرَّمۡنَا بَنِیۡۤ اٰدَمَ وَ حَمَلۡنٰهُمۡ فِی الۡبَرِّ وَ الۡبَحۡرِ وَ رَزَقۡنٰهُمۡ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ وَ فَضَّلۡنٰهُمۡ عَلٰی کَثِیۡرٍ مِّمَّنۡ خَلَقۡنَا تَفۡضِیۡلًا

(सूरह बनी इस्राईल 71)

अनुवाद: और हम ने बनी आदम को (बहुत) सम्मान प्रदान किया है और उन के लिए ख़ुशकी और तरी में सवारी का सामान पैदा किया है और उन्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़्क़ दिया है और जो मख़लूक़ हम ने पैदा की है इस में से एक बड़ा हिस्सा पर हम ने उन्हें बड़ी फ़ज़ीलत दी है।

क़ुरआन मजीद की ऊपर वर्णन की गई आयत के बाद इसी विषय के हवाला से एक हदीस क़ुदसी है जिस में हज़रत रसूल करीम ने अल्लाह तआला के इस इरशाद के हवाले से फ़रमाया कि اَرَدۡتُ اَنۡ اُعۡرَفَ فَخَلَقۡتُ اٰدَمَ

(मुज़ीलुल ख़िफाअ वल्अलबास जिल्द 2 पृष्ठ 132 लेखक इस्माईल बिन मुहम्मद अल्अजलानी)

अर्थात अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैंने इरादा किया कि मैं पहचाना जाऊं इस उद्देश्य के लिए मैंने आदम को पैदा किया ।

एक और हदीस में आँ हज़रत सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि

خَلَقَ اللّٰهُ اٰدَمَ عَلٰی صُوۡرَتِهٖ (बुख़ारी किताबुल इस्तेज़ान)

अर्थात अल्लाह ने आदम को अपनी शक्ल तथा सूरत पर पैदा किया। अब ज़ाहिर है ख़ुदा तआला की तो कोई शक्ल तथा सूरत नहीं है। इस का मतलब यही है कि इन्सान ख़ुदा तआला की ज़ात तथा सिफ़ात को प्रकट करने वाले है। हाँ,शर्त यह है कि वह हक़ीक़ी अर्थों में इन्सान हो। अब देखना यह है कि इन्सान की हक़ीक़त क्या है? अत: याद रखना चाहिए कि इन्सान अरबी भाषा का लफ़्ज़ है अर्थात वह वजूद जिसके अंदर दो उनस अर्थात दो मुहब्बतें पाई जाती हैं। एक ख़ुदा तआला से मुहब्बत, दूसरी उसकी मख़लूक़ से मुहब्बत।

अल्लाह तआला ने हर इन्सान की फ़ित्रत में ये दो मुहब्बतें रख दी हैं यह और बात है कि किसी में इन मोहब्बतों की चमक ज़्यादा ज़ाहिर होती है और किसी में कम और किसी में अपने बुरे कर्मों की वजह से बिलकुल मद्धम पड़ जाती है जिसकी वजह से इस में और हैवान में फ़र्क़ नहीं रह जाता।

अल्लाह तआला ने बनी आदम में एक ऐसा इन्सान भी पैदा फ़रमाया जिस में ये दोनों मुहब्बतें अपने कमाल को पहुंची हुई थीं अत: वह ख़ुदा की मुहब्बत में और उसकी निकटता में ऊपर उठता चला गया यहां तक कि ख़ुदा की ज़ात में ऐसा डूब गया कि मुख़ालफ़ीन भी कह उठे कि عَشِقَ مُحَمَّدٌ رَبَّهٗ कि मुहम्मद तो अपने रब्ब का आशिक हो गया। सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम।

और फिर जब मख़लूक के तरफ ध्यान दिया तो इतना अधिक मख़लूक की सहानूभूति में डूब गए कि अर्श से रहमतुन लिल आलेमीन और रऊफुन रहीम के ख़िताब प्रदान हुए।

अत: ख़ुदा तआला और ख़ुदा की मख़लूक़ की मुहब्बत, क़ुरबत और हमदर्दी में हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा ने इंतिहाई बुलंद मुक़ाम हासिल किया जिसकी वजह से आप इंसाने कामिल कहलाए।

जमाअत अहमदिया के संस्थापक आशिक़ सादिक़ हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा के इंसान कामिल होने के बारे में बहुत अधिक बजद में डूबे हुए शब्दों में फ़रमाते हैं:

"वह उच्च स्तर का नूर जो इन्सान को दिया गया अर्थात इन्सान कामिल को वह फरिश्तों में नहीं था। सितारों में नहीं था। चान्द में नहीं था। सूर्य में भी नहीं था। वह ज़मीन के समुंद्रों और दरियाओं में भी नहीं था। वह लअल और याक़ूत और ज़मुर्रद और अल्मास और मोती में भी नहीं था। अत: वह किसी ज़मीन की औऱ आसमान की चीज़ में नहीं था सिर्फ इन्सान में था अर्थात कामिल इन्सान में जिसका उत्तम और सम्पूर्ण और उच्च और सर्वोत्तम व्यक्ति हमारे सय्यद मौला सय्यदुल अंबिया सय्यदुल अलाहया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं।"

(आईना कमालात इस्लाम,रुहानी ख़ज़ाइन , भाग 5,पृष्ठ 160 से 161)

इस इंसाने कामिल ने दुनिया में किस-किस रंग में इन्सानियत के सम्मान को क़ायम करने की कोशिश फ़रमाई आज की मजलिस में वक़्त के अनुसार इसकी एक झलक पेश करने की कोशिश करूँगा। वबिल्लाह अत्तौफ़ीक़।

सामईन किराम! सय्यदना हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा के प्रादुर्भाव से पहले इन्सानियत का कुछ सम्मान नहीं था और इन्सानी हुक़ूक़ का तो कोई विचार ही ना था। बस जिसकी लाठी उसी की भैंस का नियम लागू था। औरतें,ग़ुलाम और लौंडियां ये सब कमज़ोर वर्ग मिल्कियत के क्षेत्र में गिने जाते थे। इस ज़माने में मुल्क अरब क्या, हर सभ्य मुल्क में भी पराजित क़ौमों के क़ैदियों को ग़ुलाम बनाने का रिवाज था और फिर बिना जंग तथा झगड़े के वैसे भी ग़रीब तथा बे-सहारा मर्दों और औरतों को बेच देना और ग़ुलाम बना लेने का ज़ालिमाना तरीक़ा चला आ रहा था।

मगर आँ हज़रत ने सबसे पहले ग़ुलामों की आज़ादी का सिलसिला शुरू फ़रमाया और जब आपकी पवित्र पत्नी हज़रत ख़दीजा रज़ि अल्लाह अन्हा ने शादी के बाद अपना माल और ग़ुलाम सब कुछ आपकी ख़िदमत में पेश कर दिए तो आप ने सारे ग़ुलाम आज़ाद कर दिए। और एक आज़ाद इन्सान को केवल इसकी ग़ुरबत और बेचारगी के कारण बेच देना और ग़ुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ देना उसकी तो इस्लाम हरगिज़ इजाज़त नहीं देता । अत: आँ हज़रत ने फ़रमाया: जो आदमी किसी आज़ाद आदमी को बेचता है उसे जन्नत की हवा तक नहीं छूऊएगी।

(बुख़ारी किताबुल बेअ)

और क़ुरआन करीम की सूरा मुहम्मद की आयत नंबर 5 में यह लाज़मी क़रार दिया गया कि जो लोग जंग की सूरत में क़ैदी बन कर आएं उन को एहसान के रूप में आज़ाद करना या फिर फ़िद्या लेकर रिहा करना होगा। अत: अल्लाह तआला के इस इरशाद की तामील में आँहज़रत का उच्चतम आदर्श की बेशुमार घटनाएं हैं। सिर्फ एक घटना पेश करता हूँ।

हज़रत ज़ैद बिन हारिसा को एक ग़ुलाम की अवस्था में जब हज़रत ख़दीजा रज़ि ने आँ हज़रत की ख़िदमत में पेश कर दिया तो आप ने इन को ना सिर्फ आज़ाद कर दिया बल्कि अपना मतबन्ना (मुंह बोला बेटा) बना लिया और इतनी मुहब्बत तथा शफ़क़त का व्यवहार फ़रमाया कि जब ज़ैद के वास्तविक माता पिता तलाश करते करते उन को लेने आए तो हज़रत ज़ैद रज़ि ने अपने माता पिता के साथ जाने से इनकार कर दिया और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में रहने को प्राथमिकता दी।

और फिर उसी आज़ाद किए गए ग़ुलाम के बेटे उसामा को इतनी इज़्ज़त बख़्शी कि अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी दिनों में जो लश्कर तैयार फ़रमाया उस की कमान उन्हीं के सपुर्द फ़रमाई थी।

अत: इन्सानियत का सम्मान तो उसी अवस्था में ज़ाहिर हो सकता है कि हम क़ौम के, समाज के, कमज़ोर और पिछड़े वर्ग के साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

वरना आज की सभ्य और Civilised कहलाने वाली दुनिया में भी आए दिन हम ग़रीब नौकरों और मज़दूरों से जानवरों जैसा व्यवहार होता देखते हैं लेकिन इन्सानियत के मुहसिन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं। बुख़ारी किताबुल अतक़ की एक हदीस का अनुवाद इस तरह है:

"तुम्हारे ग़ुलाम तुम्हारे भाई हैं। अत: जब किसी आदमी के अधीन कोई ग़ुलाम हो तो उसे चाहिए कि उसे वही खाना दे जो वह ख़ुद खाता है और वही लिबास दे जो वह ख़ुद पहनता है और तुम अपने ग़ुलामों को ऐसा काम ना दिया करो जो उन की ताक़त से ज़्यादा हो। और अगर कभी ऐसा काम दो तो फिर इस काम में ख़ुद उन की मदद किया करो।"

अत: हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा के इन उपदेशों और व्यावहारिक नमूनों की आपके सहाबा कराम रज़ि पूरी इताअत तथा आज्ञापालन करते थे। हज़रत अबू ज़र रज़ि के बारे में आता है कि आपने एक लिबास पहना हुआ था जबकि उन के ग़ुलाम ने भी वैसा ही लिबास पहना हुआ था। इसी तरह सहाबा किराम अपने ग़ुलामों के साथ कहीं सफ़र पर जाते और सवारी एक होती तो बारी-बारी ख़ुद भी सवार होते और ग़ुलामों को भी सवार कराते और ख़ुद पैदल चलते।

इसी तरह समाज में औरतें भी एक बहुत कमज़ोर और पीड़ित वर्ग में गिनी जाती हैं। आँहज़रत के प्रादुर्भाव के ज़माना में तो औरतों को मानो इन्सान ही ना समझा जाता था बल्कि लड़की की पैदाइश को इतना मनहूस समझा जाता था कि जिसके घर लड़की पैदा होती वे क़ौम से मुंह छुपाए फिरता था और कुछ कठोर दिल बद-बख़्त तो बेटियों को ज़िन्दा मिट्टी में गाड़ दिया करते थे।

प्रिय पाठको! यह तो आज से चौदह सौ साल पहले ज़माना जाहलियत की बातें थीं जिन का क़ुरआन करीम और हदीसों में ज़िक्र मिलता है लेकिन आज की सभ्य दुनिया में भी देख लें इन्सानी बराबरी और मर्द और औरतों के बीच हर किस्म की अन्तर तथा मतभेद को ख़त्म करने का दावा करने वालों ने भी ये कनून बना रखे हैं कि किसी गर्भवती औरत का अल्ट्रासाऊंड करके उसके गर्भ के बारे में पता कर के कि लड़का है या लड़की है बताना क़ानूनी जुर्म गिना जाता है और अस्पतालों के बाहर इस किस्म के बोर्ड और इश्तिहार लगे देखे जा सकते हैं क्यों? इसलिए कि आज भी कुछ घराने लड़कियों की पैदाइश को मनहूस समझते हैं और अगर पता लग जाए कि गर्भ में लड़की पल रही है तो इस का गर्भपात करवाने की कोशिश की जाती है।

मगर इस मुहसिन इन्सानियत हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लड़कियों की बेहतरीन शिक्षा तथा तरबियत की तरफ ध्यान दिलाते हुए फ़रमाया:

जिसने दो बेटियों की अच्छे रंग में तर्बीयत की वह और मैं क़यामत के दिन इस तरह इकट्ठे होंगे जिस तरह दो उंगलियां आपस में मिली होती हैं। (मुस्लिम)

पत्नी से हुस्न सुलूक की नसीहत करते हुए फ़रमाया: तुम में से बेहतर वह है जो अपनी बीवी के साथ सुलूक करने में बेहतर है फिर अपना नमूना दिखाते हुए फ़रमाया: اَنَا خَيْرُكُمْ لِاَهْلِیْ देखो में अपने घर वालों के साथ सुलूक करने में तुम सबसे बेहतर हूँ। (तिर्मिज़ी)

फिर माँ की इज़्ज़त तथा सम्मान इस हद तक क़ायम फ़रमाई कि फ़रमाया: जन्नत तुम्हारी माओं के क़दमों के नीचे है।(निसाई)

फिर हर हैसियत में औरत को विरासत में हिस्सादार बनाया और मर्द को यह हक़ नहीं दिया कि उसकी इच्छा के बिना उसके माल में खर्च करे।

प्रिय पाठको! समाज में साधारण गरीब तथा मिस्कीन इतने कमज़ोर और असहाय समझे जाते हैं कि कोई उन को मुंह लगाना पसन्द नहीं करता। कोई उन्हें पास बिठाना या उन के साथ बैठना सहन नहीं करता। इन के साथ चलना भी मानो अपना अपमान समझता है।

मगर हमारे मुहसिन इन्सानियत की तो शान ही निराली थी आप प्राय यह दुआ करते थे :हे अल्लाह ! मुझे मिस्कीन बनाकर ज़िन्दा रखियो और इसी अवस्था में मिस्कीनों की जमाअत में उठाना।(तिर्मिज़ी)

हज़रत अनस रज़ि अल्लाह वर्णन करते हैं एक देहाती जिसका नाम ज़ाहिर था शक्ल तथा सूरत में बहुत सादा और भद्दा था एक बार वह बाज़ार में अपना सौदा बेच रहा था और पसीने में डूबा था आप ने पीछे से जाकर अपनी बाँहें उसकी गर्दन में डाल दीं उस को जब एहसास हुआ कि यह आं हुज़ूर हैं फिर तो वह ख़ुशी और मुहब्बत से अपनी पीठ हज़ूर के जिस्म मुबारक से रगड़ने लगा। आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाने लगे मेरा यह ग़ुलाम कौन ख़रीदेगा। वह बोला हे अल्लाह के रसूल! फिर तो आप मुझे बहुत ही बेकार सौदा पाएँगे। मुझे भला कौन ख़रीदेगा। आँ हज़रत ने फ़रमाया नहीं नहीं अल्लाह के नज़दीक तो तुम घाटे का सौदा नहीं हो। तुम्हारा बड़ा सम्मान तथा क़ीमत है।

(मस्नद अहमद,भाग नंबर 3)

आँहज़रत गरीबों तथा मिसाकीन को खाने इत्यादि की दावतों में बुलाने की बहुत ताकीद फ़रमाया करते थे और फ़रमाते थे कि वह दावत बहुत बुरी है जिसमें सिर्फ अमीरों को बुलाया जाए और गरीबों को शामिल ना किया जाए।

(बुख़ारी, किताबुन्निकाह)

सारांक्ष यह कि हुज़ूर अकरम की क्षमताएं इलाही मंशा के अनुसार इस क़दर निखर कर लोगों के सामने आईं और व्यवहार के साँचे में ढल गईं कि इन्सानियत का मक़सद मानो पूरा हो गया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जो रूहुल-क़ुदुस की तजल्ली हुई थी वह हर एक तजल्ली से बढ़कर है। रूहुल-क़ुदुस कभी किसी नबी पर कबूतर की शक्ल पर ज़ाहिर हुआ और कभी किसी नबी या अवतार पर गाय की शक्ल पर ज़ाहिर हुआ और किसी पर कछ या मच्छ की शक्ल पर ज़ाहिर हुआ और इन्सान की शक्ल का वक़्त ना आया जब तक इन्सान कामिल अर्थात हमारा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्रादुर्भाव ना हुआ। जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्रकट हो गए तो रूहुल-क़ुदुस भी आप पर कामिल इन्सान होने के कारण इन्सान की शक्ल पर ही ज़ाहिर हुआ।

(रुहानी ख़ज़ायन,भाग19,पृष्ठ 83 से 85,कश्ती नूह)

इन्सानियत,मानवता,Humanity केवल मांस हड्डी से बने शरीर का नाम नहीं कि जिसको किसी बुलंद जगह पर रखकर उसका सम्मान किया जाए या उस की पूजा की जाए बल्कि इन्सानियत नाम है इसके दिल तथा दिमाग की सोचों ओर उसकी भावनाओं तथा इहसासों का ,उसकी रूह और उसकी अख़लाक़ी और रुहानी हालतों का। अगर इन आचरणों की निगरानी की जाए और उनको बढ़ावे और तरक़्क़ी की कोशिश की जाए तो फिर कहा जा सकता है कि हाँ इस ने इन्सानियत का सम्मान क़ायम किया है। इस लिहाज़ से जब हम अपने आक़ा हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र सीरत पर नज़र डालते हैं तो ऐसे अजीब हैरत वाले नमूने नज़र आते हैं जिनकी उदाहरण कहीं और मिलना असम्भव है। एक इन्सान अपने दोस्तों ,अज़ीज़ों और

अपनी आस्था वाले लोगों व हम मज़हब लोगों के साथ तो बराबरी से व्यवहार करता है लेकिन देखना यह है कि इस का ग़ैरों बल्कि मुख़ालिफ़ों और दुश्मनों के साथ कैसा सुलूक है।

एक बार मदीना में एक यहूदी का जनाज़ा आ रहा था। नबी करीम जनाज़ा के सम्मान के लिए खड़े हो गए। किसी ने निवेदन किया कि हुज़ूर! यह यहूदी का जनाज़ा है आप ने फ़रमाया क्या इस में जान नहीं थी,क्या-वह इन्सान नहीं था?

(बुख़ारी, किताबुल जनाइज़)

हज़रत यअला बिन मुर्रा वर्णन करते हैं कि मैंने नबी करीम के साथ कई सफ़र किए। कभी एक-बार भी ऐसा नहीं हुआ कि आप ने किसी इन्सान की लाश पड़ी देखी हो और उसे दफ़न ना करवाया हो। आप ने कभी यह नहीं पूछा कि यह मुसलमान है या काफ़िर है।

अत: जंग बदर में हलाक होने वाले (24) मुशरिक सरदारों को भी आप ने ख़ुद मैदान बदर में एक गढ़े में दफ़न करवा दिया था जिसे क़लीब बदर कहते हैं।

(बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी)

जंग एहज़ाब में मुश्रकीन का एक सरदार नौफ़ल बिन अब्दुल्लाह मख़्ज़ूमी मुक़ाबला में हलाक हुआ। मुश्रिकीन मक्का जंग उहद में रसूलुल्लाह के चाचा हज़रत हमज़ह रज़ि अल्लाह के नाक कान काट कर उन की नाश का मुसला कर चुके थे और यही उनका तरीक़ था अब वह यह सोच कर भयभीत थे कि उन के सरदार से भी ऐसा ही ना किया जाए। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पैग़ाम भिजवाया कि दस हज़ार दिरहम हम से ले लें और नौफ़ल की लाश वापस कर दें।

रसूल करीम ने फ़रमाया हम मुर्दों की क़ीमत नहीं लिया करते। तुम अपनी लाश वापस ले जाओ।

(दलायलुल नबी लिल्-बीहक़ी, जिल्द 3)

मदीना में एक यहूदी लड़के को अपने घरेलू ख़िदमत के लिए आपने मुलाज़िम रखा हुआ था। जब वह बीमार हुआ तो उसकी इयादत को ख़ुद तशरीफ़ ले गए।(मस्नद अहमद बिन हनबल जिल्द 3)

आं हज़रत के एक सहाबी सुमामा बिन उसाल थे वह यमामह में रहते थे। उनकी तरफ़ से मक्का वालों को गेंहू आया करती थी। जब उन्होंने इस्लाम क़बूल किया और उन को इल्म हुआ कि मक्का वाले नबी करीम के साथ बुरा सुलूक करते हैं तो उन्होंने फ़ैसला कर लिया कि आज के बाद गेंहू का एक दाना भी उधर से मक्का में नहीं पहुँचेगा। अत: मक्का वाले मुसीबत में पड़ गए और जब सुमामा बिन उसाल मक्का आए तो उन्होंने मक्का वालों को कह दिया कि जब तक मेरे महबूब आज्ञा ना देंगे यमामा से गेंहू का एक दाना भी नहीं आएगा। तब मक्का वालों ने आँहज़रत की ख़िदमत में निवेदन किया कि आप तो सिला रहमी (ख़ूनी रिश्तेदारों से उत्तम व्यवहार) की शिक्षा देते हैं। हमारी गेंहू बंद हो गई और हम भूख की वजह से मरने लगे हैं हम पर रहम फ़रमाएं। इस पर नबी करीम ने सुमामा को हिदायत फ़रमाई कि हे सुमामा! उनकी गेंहू ना रोको। अत: मुहसिन इन्सानियत की इस शफ़क़त से मक्का वालों की गेंहू दुबारा शुरू हो गई।

(अस्सीरतुन नबविय्या ले इब्ने हश्शाम)

लाहौर से प्रकाशति होने वाले एक रिसाला सत उपदेश के सम्पादक ने 7 जुलाई 1915 ई के प्रकाशन में लिखा था:

"लोग कहते हैं इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला मगर हम उन की इस राय से सहमति का इज़हार नहीं कर सकते.....क्यों? इसलिए कि इस्लाम संस्थापक के अंदर रुहानी शक्ति थी। मनुष्य मात्र के लिए प्रेम था। इस के अंदर मुहब्बत और रहम की पवित्र भावना काम कर रही थी। नेक ख़्यालात उसकी रहनुमाई करते थे।

प्रिय पाठको ! ये उन उच्च अख़लाक़ की एक झलक थी जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन्सानियत के सम्मान के सिलसिला में दिखलाए थे। लेकिन अगर और अधिक विस्तार में जाकर जायज़ा लिया जाए तो मालूम होगा कि हर इन्सान का जिस्म और शरीर उसकी आत्मा और रूह बुनियादी तौर पर यह तक़ाज़ा करती है कि कोई उसकी भूख को दूर करे कोई उस को साफ़ पानी पिला दे कोई उस के नंग को ढाँकने का सामान कर दे और कोई उस को खुले आसमान के नीचे पड़ा ना रहने दे। अत: आज की तरक़्क़ी वाली दुनिया भी हर इन्सान की इन बुनियादी ज़रूरतों रोटी कपड़ा और मकान उपलब्ध करने को इन्सानियत की ख़िदमत का चरम समझती है। लेकिन आज भी हम सुनते और देखते हैं कि यह नारा लगाने वाली बड़ी बड़ी तरक़्क़ी करने वाली हुकूमतें भी इस मुहिम में सौ फ़ीसद कामयाब नहीं हो पातीं जबकि तरक़्क़ी होने वाले देशों में तो इस लिहाज़ से इन्सानियत लज्जित नज़र आती है।

मगर आज से चौदह सौ बरस पहले ही क़ुरआन करीम ने मानव जाति के, इन्सान के इस बुनियादी हक़ को स्वीकार करते हुए ऐलान किया कि

إِنَّ لَكَ أَلَّا تَجُوعَ فِيهَا وَلَا تَعْرَىٰ ○ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَضْحَىٰ

(सूरत ताहा 119 से120)

अर्थात हे इन्सान !तेरे लिए मुक़द्दर है कि ना तू इस में भूखा रहे और ना नंगा और यह भी कि ना तो इस में प्यासा रहे और ना धूप में जले।

अत: आँहज़रत और आप के बाद ख़ुलफ़ाए राशदीन के ज़माने में इस शिक्षा पर अमल भी करके दिखा दिया। लेकिन बद-क़िस्मती से जैसे जैसे मुस्लमान हुकूमतों के सरबराहों में इन्सानियत के सम्मान की कमी और नफ़स परसती और व्यक्तगित लाभ को प्राथमिकता ने जगह बना ली तो वहां की प्रजा भी इन्सानियत के बुनियादी बातों से वंचित होती चली गई और आज प्रजा और हुकूमतों के निगरान आपस में लड़ते हुए नज़र आते हैं ।

दूसरी तरफ़ तरक़्क़ी करने वाले देशों ने इन्सानियत की इन बुनियादी जरूरतों और उन की तकमील के लिए बड़े बड़े मंसूबे बनाए। पूंजीपति व्यवस्था के मुक़ाबला में इश्तिराकी निज़ाम सामने आया इसके बावजूद अमीरों और गरीबों के बीच बराबरी क़ायम करने की सारी कोशिशें असफल हो गईं। अमीर, अमीर तरीन और गरीबा, ग़रीब तरीन होते चले जा रहे हैं जिसकी वजह से इन्सान,इन्सान का दुश्मन हुआ जा रहा है।

अत: जब तक हर इन्सान की बुनियादी ज़रूरतों का पहचान हो कर उनको दूर करने का इंतिज़ाम नहीं होता उस वक़्त तक इन्सानियत का सम्मान क़ायम नहीं हो सकता और इन्सान अमन तथा चैन की ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकता ओर यह सिर्फ़ और सिर्फ उसी अवस्था में संभव है जब सही अर्थों में इस्लाम के आर्थिक निज़ाम पर अनुकरण किया जाए और आँहज़रत की शिक्षाओं और उच्च आचरण पर अनुकरण किया जाए।

जिस में पहला नियम यह है कि दौलत की सही रंग में विभाजन और खर्च का इंतिज़ाम किया जाए उस के लिए इस्लाम ने विरसा की तक़सीम का निज़ाम स्थापित फ़रमाया। ख़ानदान के हर व्यक्ति को चाहे वह लड़का हो या लड़की विरसा की तक़सीम में हिस्सादार ठहरा दिया। इस अवस्था में जायदादें तक़्सीम हो कर केवल चंद लोगों के क़ब्ज़े में नहीं रह सकतीं।

दूसरा नियम दौलत की सही तक़सीम के लिए यह वर्णन फ़रमाया गया कि रुपया जमा करने को मना कर दिया अत: अल्लाह तआला फ़रमाता है जो सोना और चांदी वह दुनिया में जमा करेगा उसी को आग में गर्म करके क़यामत के दिन उसे दाग़ दिया जाएगा (सूरत अत्तौब: आयत 34 से 35) मर्दों को तो विशेष रूप से रेशम और सोने के प्रयोग से मना फ़रमाया और घर में सोने चांदी के बर्तन प्रयोग करने से भी मना फ़रमाया।

तीसरा उसूल सूद को मना करने से सम्बन्ध रखता है। क्योंकि रुपया से रुपया कमाया जाता है जिससे अमीर बग़ैर किसी मेहनत तथा कोशिश के अमीर होता चला जाता है। अत: सूद एक बड़ी लानत है जो मानव जाति, इन्सान के सिरों पर छाई हुई है अगर दुनिया अमन और सुख चैन का सांस लेना चाहती है तो इस का तरीक़ा यही है कि दुनिया से सूद को मिटा दिया जाए और इस तरह दौलत को चंद हाथों में जमा होने से रोका जाए।

चौथा उसूल यह है कि मानव जाति की हंदिक हमदर्दी और ग़म दूर करने की भावनाएं उभारी जाएं। इस सिलसिला में इस्लाम की शिक्षा यह है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है:

هُوَالَّذِیْ خَلَقَ لَکُمْ مَافِی الْاَرْضِ جَمِیْعاً

(अल्बक़रा :30) वही ख़ुदा है जिसने जो कुछ ज़मीन में है तुम सब के लिए पैदा किया है। अर्थात इस दुनिया में जो कुछ है वह सब सारी मानव जाति की मजमूई सम्पत्ति है अगर ख़ुदा तआला ने किसी की ज़हनी सलाहीयत और मेहनत के नतीजा में ज़्यादा मालदार बनाया है तो वह यह यक़ीन रखे कि उसके अधिक मालों में दूसरे कम योग्यता वाले गरीबों तथा मिसकीनों का भी हिस्सा है इस के लिए इस्लाम ने ज़कात का हुकम दिया है और इस के लिए एक निसाब निर्धारित फ़रमाया है इसी तरह जो दौलत बिना खर्च के इसी तरह साल भर पड़ी रहे इस पर भी ज़कात निर्धारित की इसी तरह ज़रूरत से अधिक घरेलू ज़ेवरों पर भी ज़कात निर्धारित फ़रमाई इस तरह हमदर्दी की भावनाओं के साथ ज़रूरतमंद इन्सान की जरूरतों के पूरा करने के सामान फ़रमाए हैं।

प्रिय पाठको! इस के इलावा इन्सानियत को जो ख़तरा सम्मुख था और आज भी है वह है ज़ातों का अन्तर और रंग तथा नस्ल का भेद और फिर मज़हबी अन्तर, इस हद तक इन्सान को इन्सानियत से गिरा देते हैं कि क़त्ल तथा फसाद तक अवस्था पहुंच जाती है। इन्सानी दहशतगर्दी और ख़ुदकुश हमलों के अतिरिक्त भयंकर हथियारों और ड्रोन हमलों के नतीजा में बूढ़े, बच्चे, औरतें और मासूम जानों के क़त्ले आम की घटनाएं आए दिन हम सुनते और देखते आ रहे हैं। क़ुरआन करीम ऐसी मासूम हलाकतों को पूरी इन्सानियत की हलाकत क़रार देते हुए फरमाता है:

مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا

(सूरह अल्माइद: 33)

अर्थात जिसने भी किसी ऐसे नफ़स को क़त्ल किया जिसने किसी दूसरे की जान ना ली हो या ज़मीन में फ़साद ना फैलाया हो तो मानो उस ने सारे इन्सानों को क़त्ल कर दिया और जिसने उसे जिन्दा रखा तो मानो उस ने सारे इन्सानों को ज़िन्दा कर दिया।

अत: मुसलिम दहश्तगर्द हूँ या ग़ैर मुस्लिम,तरक़्क़ी वाले देशो के भयंकर हथियार स्पलाई करने वाले हों या तरक़्क़ी वाले देशों के,इन भयंकर हथियार को ख़रीद कर प्रयोग करने वाले हों जब तक मुहसिन इन्सानियत की इस उसूली शिक्षा पर अनुकरण ना करेंगे इन्सानियत को हमेशा ख़तरा रहेगा।

इस अमन देने पैग़ाम को लेकर हमारे प्यारे इमाम हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दुनिया के बड़े लीडरों को और बड़े बड़े महलों और पार्लयामैंट में जाकर सारे संसार के लोगों सचेत कर रहे हैं।

अत: हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने 11जून 2013 ई को इंग्लिस्तान में जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के शत वर्षीय आयोजनों के क्रम में पार्लयामैंट हाऊस लंदन में अपने ख़िताब में फ़रमाया

"हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जीवनपर्यन्त विश्व में शान्ति का प्रसार करते रहे। यही आपका महान उद्देश्य था। निस्सन्देह, एक दिन ऐसा अवश्य आएगा जब संसार के लोग इस तथ्य को समझ लेंगे और स्वीकार करेंगे कि आपने किसी प्रकार के उग्रवाद की शिक्षा नहीं दी। उन्हें यह अनुभव हो जाएगा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम केवल शान्ति, प्रेम और सहानुभूति का संदेश ले कर आए थे।...... अहमदिया मुस्लिम जमाअत इन्हीं शिक्षाओं का पालन और अनुसरण करती है। यही सहानुभूति, सहनशीलता और दया पर आधारित वह शिक्षा है जिसका हम समस्त विश्व में प्रचार और प्रसार करते हैं....

मैं पुन: यह कहता हूं कि वर्तमान युग में केवल हमारी जमाअत - अहमदिया मुस्लिम जमाअत - ही है जो इस्लाम की वास्तविक और शान्तिपूर्ण शिक्षाओं का अनुसरण और पालन कर रही है। मैं यह भी पुन: कहना चाहता हूं कि कुछ आतंकवादी संगठनों अथवा कुछ व्यक्तियों द्वारा जो घृणापूर्ण और दुष्कर्म किए जा रहे हैं उनका इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं हैं।

(विश्व संकट तथा शान्ति पथ पृष्ठ 127)

जमाअत अहमदिया यू. के के नौवें वार्षिक अमन कान्फ्रेंस के अवसर पर फरमाया

"हम जो जमाअत अहमदिया के सदस्य हैं विश्व और मानवता को विनाश से बचाने के लिए अपना भरसक प्रयत्न करते हैं। यह इसलिए कि हमने वर्तमान युग के इमाम को माना है जिसे परमेश्वर ने मसीह मौऊद बनाकर भेजा और जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिन्हें परमेश्वर ने स्वयं मानवता पर उपकार करने वाला बनाकर भेजा था, का एक दास बनकर आया।

क्योंकि हम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा का पालन करते हैं, इसलिए हम विश्व की स्थिति पर अपने हृदयों में अत्यन्त दु:ख महसूस करते हैं। यह वही दु:ख है जो हमें मानवता को विनाश और संकटों से सुरक्षित रखने के प्रति प्रयासरत रहने की ओर अग्रसर करता है। इसलिए मैं और अन्य सभी अहमदी मुसलमान विश्व में शान्ति के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अपने दायित्वों को पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं।

(विश्व संकट तथा शान्ति पथ पृष्ठ 46)

इसी प्रकार 11 जून 2013 ई को पार्लियामेंट हाऊस लन्दन में अपने ख़िताब में फरमाया

"समय की नितान्त आवश्यकता है कि विश्व-शान्ति और एकता की स्थापना हेतु सभी लोगों को परस्पर सम्मान और एक दूसरे के धर्म का आदर करने की भावना का प्रदर्शन करना चाहिए। अन्यथा इसके परिणाम अति भयावह होंगे।

आज संसार एक विश्व-ग्राम का रूप धारण कर चुका है। अत: परस्पर आदर एवं सम्मान के अभाव और शान्ति स्थापना हेतु संगठित होने में विफलता के कारण न केवल स्थानीय क्षेत्र, शहर अथवा देश को हानि पहुंचेगी अपितु इसके फलस्वरूप अन्ततः विश्व एक भयानक विनाश की चपेट में आ जाएगा। गत दो विश्व युद्धों के विध्वंसकारी परिणामों से हम सभी परिचित हैं। कुछ देशों की गतिविधियां ऐसी हैं जो तृतीय विश्व युद्ध की सूचक हैं।

यदि तृतीय विश्व युद्ध आरम्भ हो जाता है तो पश्चिमी देश भी इसके दूरगामी और विनाशकारी परिणामों से बुरी तरह प्रभावित होंगे। हमें अपनी भावी पीढ़ियों को युद्ध के भयानक और विनाशकारी परिणामों से सुरक्षित रखने का प्रयास करना चाहिए।

स्पष्ट है कि सबसे भयानक युद्ध परमाणु युद्ध होगा और इस समय संसार जिस ओर अग्रसर है, निस्सन्देह वह एक परमाणु युद्ध के छिड़ने का सूचक है। इस विनाशकारी परिणाम को रोकने के लिए हमें न्याय, एकता एवं अखंडता और ईमानदारी के मार्ग को अपनाना होगा और संगठित रूप

से उन गुटों का दमन करना होगा जो घृणा का प्रचार करके विश्व-शान्ति का सर्वनाश करना चाहते हैं।

मैं यह आशा और प्रार्थना करता हूं कि सर्वशक्तिमान परमात्मा महाशक्तियों को अपने कर्त्तव्यों को इस सम्बन्ध में न्यायपूर्वक ढंग से निभाने का सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।"

(विश्व संकट तथा शान्ति पथ पृष्ठ 129)

प्रिय पाठको! मुहसिन इन्सानियत हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी हज जो हज्जतुल विदा के नाम से मशहूर है इस में जो ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया वह इन्सानियत का सिर ऊंचा करने वाला वह बुलंद झंडा है जो क़यामत तक स्पष्ट रंग में लहराता रहेगा और मानव जाति को इन्सानियत की शिक्षा देता रहेगा।

अत: आपने सन 9 हिज्री की 11 वीं ज़ी अलहज्जा को उस वक़्त के हाज़िर मुसलमानों के सामने खड़े हो कर जो ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया उस का कुछ हिस्सा इस प्रकार है फ़रमाया:

हे लोगो सुनो! तुम्हारा ख़ुदा एक है और इसी तरह तुम्हारा बाप एक है। (अर्थात तुम सब आदम की नस्ल से सम्बन्ध रखते हो)किसी अरबी को अजमी (यानी ग़ैर अरब)पर और किसी लाल रंग वाले को काले पर और किसी काले को लाल रंग वाले पर कोई फ़ज़ीलत नहीं। सिवाए इसके कि जो तक़्वा शिआर(अर्थात नेक इन्सान) हो। याद रखो अल्लाह के नज़दीक तुम में से ज़्यादा सम्माननीय वह है जो सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी और परहेज़गार है।

इसी तरह फ़रमाया: सारे इन्सान चाहे किसी क़ौम और किसी हैसियत के हों इन्सान होने के लिहाज़ से एक ही दर्जा रखते हैं। यह फ़रमाते हुए आपने अपने दोनों हाथ उठाए और दोनों हाथों की उंगलियां मिला दीं और फ़रमाया जिस तरह इन दोनों हाथों की उंगलियां आपस में बराबर हैं इसी तरह तुम मानव जाति इन्सान आपस में बराबर हो। तुम्हें एक दूसरे पर फ़ज़ीलत और दर्जा ज़ाहिर करने का कोई हक़ नहीं। तुम आपस में भाइयों की तरह हो।

बहरहाल एक लंबा ख़ुत्बा आपने इरशाद फ़रमाया जिस में अधीनस्थों, ग़ुलामों ,औरतों से हुस्ने सुलूक इत्यादि की नसीहत फ़रमाते हुए आख़िर पर फ़रमाया :

यह आदेश आज के लिए नहीं। कल के लिए नहीं बल्कि उस दिन तक के लिए है कि तुम ख़ुदा से जाकर मिलो। फिर फ़रमाया। ये बातें जो मैं तुम से आज कहता हूँ उनको दुनिया के किनारों तक पहुंचा दो। क्योंकि संभव है कि जो लोग आज मुझ से सुन रहे हैं उन की तुलना में वे लोग उन पर ज़्यादा अमल करें जो मुझ से नहीं सुन रहे।

(बुख़ारी ,किताबुल मग़ाज़ी बाब हज्जतुल विदा)

एक इंडियन फलास्फर मिस्टर के ऐस रामा कृष्णा राव जो कई पुस्तकों के लेखक हैं और 2011 ई में भारत सरकार ने महोदय पदम श्री के ऐवार्ड से नवाज़ा हुआ है। महोदय ने 1996 ई में आँहज़रत की सीरत तय्यबा और इन्सानियत के सम्मान में की गई कोशिशों से प्रभावित हो कर जिन शब्दों में आभार पेश किया था उसके एक दो उद्धरण का अनुवाद यह है। फ़रमाते हैं

आलमी भाईचारा के उसूल और इन्सानी बराबरी की शिक्षा जिसे आपने प्रस्तुत किया इन्सानियत के आर्थिक उन्नति में आप के महान किरदार को प्रकट करते हैं। सारे बड़े धर्मों ने यही शिक्षाए दी हैं लेकिन इस्लाम के संस्थापक ने इस दृष्टिकोण का व्यावहारिक नमूना पेश किया और शायद सदियों बाद जब धर्मों के आपसी सम्बन्धों के बारे में अन्तर्आत्मा बेदार होने से नस्ली द्वैष ख़त्म होंगे और सब इन्सान भाईचारा की लड़ी में पिरोए जाऐंगे तब इस बात के महत्व का अंदाज़ा होगा। अरबों में ये

मुहम्मद पर हमारी जाँ फिदा है

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो

मुहम्मद पर हमारी जाँ फिदा है कि वह कूए सनम का रहनुमा
मेरा दिल उसने रौशन कर दिया है अंधेरे घर का वह मेरे दिया है
ख़बर ले ऐ मसीहा दर्द दिल की तेरे बीमार का दम घुट रहा है
मेरा हर ज़र्रा हो कुरबाने अहमद मेरे दिल का यही इक मुद्दआ है
उसी के इश्क में निकले मरी जाँ कि याद यार मैं भी इक मज़ा है
मुहम्मद जो हमारा पेश्वा है मुहम्मद जो महबूबे ख़ुदा है
हो उसके नाम पर कुर्बान सब कुछ कि वह शाहनशाह हर दो सिरा है
इसी से मेरा दिल पाता है तस्कीं वही इक राह दें का राहनुमा है
मुझे इस बात पर है फख़्र महमूद
मेरा माशूक महबूबे ख़ुदा है

☆ ☆ ☆

रस्म दृढ़ थी कि ताक़तवर बाज़ू के ज़ोर से विरासत हासिल करता था। मगर इस्लाम औरतों की रक्षा की ध्वज वाहक बना और इस ने औरतों को माता पिता की जायदाद का वारिस क़रार दिया। जबकि इंग्लिस्तान में जो जमहूरीयत की आरंम्भिक पाठशाला कहलाता है 1881ई में इस्लाम का ये उसूल अपनाया गया और ये क़ानून The Married Womans Act के नाम से जाना जाता है। तारीख़ी रिकार्ड से स्पष्ट होता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सारी साथ वाले चाहे वे दोस्त हों या दुश्मन ,मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के गुणों, बेदाग़ ईमानदारी ,नेकी तथा तक़्वा और इसके इलावा ज़िन्दगी के हर मैदान में इन्सानी आदतों में आपके नमूना को बेहतरीन स्वीकार करते हैं ..... कहा जाता है कि एक दयानतदार इन्सान ख़ुदा की बेहतरीन सृष्टि है। मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) अमानत तथा दयानत में बहुत ऊंचा मुक़ाम रखते थे। इन्सानियत मानो आप में रची-बसी थी। आप की रूह मुहब्बत और सृष्टि की हमदर्दी के गीत गाती थी। इन्सान की ख़िदमत ,इन्सान को सम्मान प्रदान करना,इन्सान को पवित्र करना,इन्सान को शिक्षा देना इसी तरह आदमी को इन्सान बनाना आपका लक्ष्य और ज़िन्दगी का मकसद हयात था। आपकी ज़िन्दगी का एक नियम और रहनुमा उसूल जो आपकी सोच,शब्दों और कर्मों से साफ़ ज़ाहिर है इन्सानियत की भलाई है।

(उद्धरित उस्वा इंसाने कामिल लेखक हाफ़िज़ मुज़फ़्फ़र अहमद साहिब, पृष्ठ 628 से 629)

अहमदिया जमाअत के संस्थापक हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने अशआर में क्या ख़ूब फ़रमाते हैं

कहते हैं यूरोप के नादाँ यह नबी कामिल नहीं
वहशियों में दीं का फैलाना यह क्या ल था कार
पर बनाना आदमी वहशी को है इक मोजिज़ा
मानई राज़े नबुव्वत है उसी से आशकार

अत: यह हक़ीक़त है कि आँहज़रत के चमत्कारों में से यह एक महान चमत्कार है कि आप ने अरब की वहशी आदतों तथा बातों वाली क़ौम को इन्सानी इक़दार से परिचित कराया फिर इन्सान से अख़लाक़ वाला इन्सान और अख़लाक़ वाले इन्सान से ख़ुदा वाला इन्सान बल्कि ख़ुदा देखने वाला इन्सान बना दिया। और इन्सानियत के सम्मान को आकाश तक ऊंचाई दी।

☆ ☆ ☆

दरूद शरीफ की बरकतें तथा रूहानी प्रभाव

ताहिर अहमद चीमा (उस्ताद जामिया अहमदिया कादियान)

اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا

(सूरह अलइहज़ाब 57)

अर्थात अल्लाह और उस के फरिश्ते नबी पर दरूद भेजते हैं। हे वे लोगो जो ईमान लाए हो उस पर दरूद तथा ख़ूब ख़ूब सलाम भेजो।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

इस आयत की व्याख्या में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

रसूल अकरम के कर्म ऐसे थे कि अल्लाह तआला ने उनकी तारीफ़ या गुणों को सीमित करने के लिए कोई ख़ास लफ़्ज़ ना फ़रमाया। सीमित नहीं किया। लफ़्ज़ तो मिल सकते थे लेकिन अल्लाह तआला ने ख़ुद इस्तिमाल ना किए। अर्थात आप के नेक कर्मों की तारीफ़ सीमा से बाहर थी। अल्लाह तआला उस की हद मुक़र्रर नहीं करना चाहता था। इस किस्म की आयत किसी और नबी की शान में इस्तिमाल ना की। फ़रमाया कि आपकी रूह में वह सिदक़ तथा वफ़ा था और आप के आमाल ख़ुदा की निगाह में इस क़दर पसंदीदा थे कि अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए यह हुक्म दिया। कि आइंदा लोग शुक्रगुज़ारी के तौर पर दुरूद भेजें।

(मलफ़ूज़ात ,भाग 1,पृष्ठ 37-38, प्रकाशन1985 ई ,प्रकाशन यू के)

अल्लाह तआला का यह मोमिनों पर बहुत बड़ा एहसान है कि उसने इलाही इफ़ज़ाल और आँहज़रत के असंख्य नूरूं तथा फैज़ से बरकत और हिस्सा पाने के लिए एक माध्यम, दुरूद शरीफ़ रखा है जिस से हर मोमिन अपने सामर्थ्य और तौफ़ीक़ के अनुसार लाभ हासिल कर सकता है ।

दुरूद शरीफ़ की बरकतों के वर्णन में बेशुमार हदीसें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत हैं। उन में से कुछ हदीसें, पाठकों की ख़िदमत में पेश करता हूँ ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा रज़ि अल्लाह अपने पिता से रिवायत करते हैं कि एक बार रसूलुल्लाह तशरीफ़ लाए और ख़ुशी आपके चेहरे से झलक रही थी आपने फ़रमाया कि जब्राईल अलैहिस्सलाम मेरे पास आए और कहा कि हे मुहम्मद क्या आप इस पर ख़ुश नहीं कि आपकी उमत में से जब कोई एक भी आप पर दुरूद तथा सलाम भेजेगा तो मैं उस पर दस बार दुरूद और सलाम भेजूँगा ।

एक दूसरी रिवायत में है कि जब भी कोई मुसलमान मुझ पर दुरूद भेजता है तो ख़ुदा उस पर दुरूद भेजता है अत: अब यह बंदा पर है चाहे तो कम करे चाहे तो ज़्यादा करे

(इब्ने माजा किताब इक़ामुस्सलात बाब सलातुन्नबी)

एक रिवायत में है कि अल्लाह तआला दुरूद के नतीजे में दुरूद पढ़ने वाले की दस ग़लतियां दूर कर देता है और इस के दस दर्जात बुलंद फ़रमाता है।

(निसाई)

दुरूद शरीफ़ की बरकतों में ये शामिल है कि इस के द्वारा दुख तथा दर्द दूर होते हैं और यह गुनाहों की क्षमा का माध्यम है ।

हज़रत अबी बिन कअब रज़ि अल्लाह वर्णन करते हैं कि मैंने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह मैं आप पर बहुत अधिक दुरूद भेजता हूँ आप ख़ुद ही फ़रमाएं कि मैं आप पर कितना दुरूद भेजा करूँ आपने फ़रमाया जितना चाहो। वह कहते हैं मैंने अर्ज़ की, क्या एक चौथाई आपने फ़रमाया जितना चाहो और अगर तुम इस से भी ज़्यादा दुरूद भेजो तो वह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है। रिवायत करने वाले कहते हैं मैंने निवेदन की, क्या आधा। आपने फ़रमाया जितना चाहो और अगर तुम इस से भी ज़्यादा दुरूद भेजो तो वह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है। रिवायत करने वाले कहते हैं मैंने निवेदन किया, क्या दो तिहाई। आपने फ़रमाया जितना चाहो और अगर तुम इस से भी ज़्यादा दुरूद भेजो तो वो तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है। रिवायत करने वाले कहते हैं मैंने निवेदन किया कि आगे से मैं अपनी सारी दुआ को दुरूद से ही विशेष करूँगा। आपने फ़रमाया इस तरह तुम्हारे सब दुख दर्द दूर हो जाऐंगे और तुम्हारे गुनाह बख़्श दिए जाएंगे।

(तिर्मिज़ी किताबुस्फ)

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ि अल्लाह सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बयान फ़रमाते हैं कि यह हदीस पढ़ कर मेरे दिल में भी तमन्ना मचली कि मैं भी ऐसा ही करूँ अत: एक रोज़ कादियान में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में निवेदन किया कि मेरी यह ख़्वाहिश है कि मैं अपनी सारी ख़्वाहिशों और मुरादों के बजाय दुरूद शरीफ़ ही की दुआ मांगा करूँ ।

हज़ूर अलैहिस्सालम ने इस पर अपनी पसंदीदगी का इज़हार फ़रमाया और सारे हाज़रीन समेत हाथ उठा कर उस वक़्त मेरे लिए दुआ की। तब से मेरा इस पर अनुकरण है कि अपनी सारी ख़्वाहिशों को दुरूद शरीफ़ की दुआ में शामिल करके अल्लाह तआला से मांगता हूँ।

(सारांक्ष ज़िक्रे हबीब, पृष्ठ 236)

हज़रत अनस रज़ि अल्लाह से रिवायत है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो आदमी एक दिन में हज़ार बार मुझ पर दुरूद भेजेगा वह इसी ज़िन्दगी में जन्नत के अंदर अपना मुक़ाम देख लेगा।

इस हदीस से साबित होता है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर प्रचुरता से दुरूद भेजने वाला क़रीबी राह से इस मुक़ाम पर पहुंच जाता कि

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَ لَا تَحْزَنُوْا وَ اَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ

(हामीम सजदा: 31) के अनुसार अपनी ज़िन्दगी में जन्नत की बशारत बल्कि ख़ुद जन्नत को पा लेता है। इस से बढ़कर दुरूद शरीफ़ की बरकतों में से और कौन सी बरकत होगी।

अहमदिया जमाअत के संस्थापक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के सहाबी हज़रत शेख़ करम इलाही साहिब पटयालवी रज़ि अल्लाह का

बयान है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के ज़माना मुबारक में एक बार जब मैं कादियान से वापस आने के लिए तैयार हुआ। तो मैंने हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल रज़ि अल्लाह की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मुझे कोई वज़ीफ़ा बताया जाए। आपने फ़रमाया कि हज़रत साहिब प्राय दुरूद शरीफ़ और इस्तिग़फ़ार बहुत अधिक पढ़ने का ही इरशाद फ़रमाया करते हैं। हम इस से ज़्यादा और क्या बता सकते हैं। अत: दुरूद शरीफ़ का जितना सम्भव हो, विर्द करो और चलते फिरते इस्तिग़फ़ार पढ़ा करो। अत: यथा सामर्थ्य मैं उस का पालन करता हूं।

फिर फ़रमाते हैं:

एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम मस्जिद मुबारक में ख़ुद्दाम के साथ खाना खा रहे थे और मैं दस्तर-ख़्वान पर हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल रज़ि अल्लाह के पास बैठा था। हज़रत मौलवी साहिब ने धीरे से मुझ से पूछा कि नमाज़ मग़रिब के बाद कितना वक़्त गुज़रा होगा। मैंने कहा लगभग एक घंटा। आपने फ़रमाया कि जब हम किसी आदमी को दुरूद शरीफ़ और इस्तिग़फ़ार के लिए कहते हैं तो अक्सर लोग व्यस्तता और वक़्त की कमी का बहाना कर देते हैं मगर यह बहाना दरुस्त नहीं। देखो हम हज़रत साहिब की बातें भी ध्यान से सुनते रहे हैं और इस एक घंटा के क़रीब वक़्त में हम ने पाँच सौ बार दुरूद शरीफ़ भी पढ़ा है ..... मैंने इस सुनहरे उसूल की पाबंदी से अल्लाह तआला के फज़ल से बहुत फ़ायदा उठाया है और अगर ग़फ़लत या बुरे कर्मों का फल सामने न हो तो इस तरह से इन्सान समय के नष्ट होने से बहुत हद तक बच सकता है। वबिल्लाह तौफीक़ी ।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद पूरे ध्यान और अक़ीदत से और हक़ीक़ी मुहब्बत और दिल के मुहब्बत के साथ भेजना चाहिए और यह कि केवल अधिक गिनती होना कोई कोई ख़ास फ़ज़ीलत की बात नहीं बल्कि फ़ज़ीलत इस बात में है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर बेहतर से बेहतर तौर पर दुरूद भेजा जाए।

हज़रत अब्बू हुरैरह रज़ि अल्लाह से रिवायत है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझ पर दुरूद भेजा करो। तुम्हारा मुझ पर दुरूद भेजना ख़ुद तुम्हारी पाकीज़गी और तरक़्क़ी का माध्यम है।

इस हदीस का विषय बिल्कुल स्पष्ट है दुरूद शरीफ़ पाकीज़गी हासिल करने का माध्यम है। इस से विचार पवित्र होते हैं और कर्म पवत्रि हो जाते हैं। अगर किसी ने तजुर्बा करना हो तो ज़रूर करे,अगर प्रचुरता से हज़ारों की गिनती में दुरूद शरीफ़ तो पढ़ लिया , साथ ही रिश्वत भी ली। साथ ही बेईमानी भी की, साथ ही दूसरों को कष्ट भी दिए। तो दुरूद की बरकतें ख़ुद हम ने अपने हाथ से नष्ट कर दीं।

दुरूद शरीफ़ पढ़ने से एक तो ख़ुदा की मुहब्बत दिल में ज़ोर पकड़ती है दूसरे रसूलुल्लाह से दिली लगाव पैदा हो जाता है और इन्सान वह काम करता है जो रसूलुल्लाह ने किए थे। मानो वह सुन्नते रसूल का आशिक़ और अनुकरणकारी हो जाता है। दुरूद शरीफ़ इन्सान को रुहानी बीमारियों से पवित्र करके उच्च कमाल प्रदान करता है।

भेज दुरूद इस मुहसिन पर तो दिन में सौ सौ बार
पाक मुहम्मद मुस्तफ़ा नबियों का सरदार

दुरूद शरीफ़ की बरकतों से इन्सान को शान्ति नसीब होती है इन्सान क्या इस से तो पक्षी भी लाभ उठाते हैं।

हयात क़ुदसी भाग 4 पृष्ठ 36 में हज़रत ग़ुलाम रसूल साहिब राजेकी रज़ि अल्लाह की एक घटना आती है: कादियान निवास के दौरान एक बार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि अल्लाह ने हज़रत ग़ुलाम रसूल साहिब राजेकी रज़ि के सपुर्द लिखने का कुछ काम किया इस दौरान दुरूद शरीफ़ की बरकत की एक घटना हुई आप फ़रमाते हैं मैंने आदेशानुसार इस नेक काम को करना शुरू कर दिया और 12 बजे स्कूल से फ़ारिग़ हो कर बाक़ी सब वक़्त लिखने में व्यतीत करता इन दिनों मेरा निवास हज़रत नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब के शहर वाले मकान के एक कमरा में थी। बराबर के कमरा के बरामदा में दो जंगली कबूतरों ने अंडे दिए हुए थे एक दिन काम करने वाले ने मकान की सफाई करते हुए घोंसले को तोड़ फोड़ दिया और अंडे टूट कर गिर गए। मैं उस वक़्त लिखने में व्यस्त था जब कबूतर ने घोंसले को वीरान और अंडों को टूटा हुआ देखा तो दर्दनाक आवाज़ से फड़फड़ाना शुरू कर दिया उन की दर्दनाक आवाज़ और व्याकुलता ने मुझ पर बहुत असर किया और मैंने अपना क़लम रोक कर उनकी तरफ़ ध्यान दिया हुआ और रोते हुए उनके ग़म में शरीक हो गया में देर तक सोचता रहा कि इन बे-ज़बान परिंदों के दुख को किस तरह दूर करूँ लेकिन कोई तरीका नज़र ना आया आख़िर मुझे ख़्याल आया कि दुरूद शरीफ़ चूँकि क़बूल शूदा दुआ है इस लिए अगर मैं उसे इस नीयत से पढ़ूं कि इस का सवाब अल्लाह तआला बजाय मुझे पहुंचाने के इन परिंदों को तसल्ली की सूरत में प्रदान फ़रमाए तो हो सकता है कि इन बे-ज़बानों का कुछ ग़म दूर हो सके अत: मैंने इस नीयत से दुरूद शरीफ़ पढ़ना शुरू किया तो उन परिंदों की बेताबी दूर हो गई और वे आराम के साथ बैठ गए। उनको ख़ामोश देखकर मैंने अपना क़लम उठाया और दुरूद शरीफ़ का वज़ीफ़ा बंद करके लिखने में व्यस्त हो गया लेकिन अभी मैंने कुछ लाइनें ही लिखी थीं कि कबूतरों ने फिर बेचैनी और बेताबी का इज़हार शुरू कर दिया उनकी दर्दनाक हालत को देखकर मैंने फिर दुरूद शरीफ़ पढ़ना शुरू कर दिया जिसका नतीजा यह हुआ कि वे आराम से बैठ गए लेकिन थोड़ी देर के बाद जब मैंने लिखना शुरू किया तो उनकी हालत फिर बदल गई। तीन चार बार इस तरह घटित हुआ इसके बाद अज़ान होने पर मैं कमरा बंद करके मस्जिद में चला गया और कबूतर उड़ गए।

इस ज़माना में सबसे बढ़कर इशक़ तथा मुहब्बत से दुरूद शरीफ़ भेजने वाले आपके आशिक़ सादिक़ हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादयानी मसीह मौऊद अलैहिस्सालम थे और इसी तुलना में आप ने इस की बरकतों को भी हासिल किया।

अत: आप फ़रमाते हैं: एक बार ऐसा संयोग हुआ कि दुरूद शरीफ़ के पढ़ने में अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजने में एक ज़माना तक मुझे बहुत इस्तिग़राक़ रहा क्योंकि मेरा यक़ीन था कि ख़ुदा तआला की राहें निहायत गहरी राहें हैं। वे केवल नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से मिल सकती हैं जैसा कि ख़ुदा भी फ़रमाता है ابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ (माइद: 36)तब एक मुद्दत के बाद मैंने कशफ़ी हालत में देखा कि दो सक्के अर्थात माशकी आए और एक अंदरूनी रास्ता से और एक बाहरी राह से मेरे घर में दाख़िल हुए हैं और उनके काँधों पर नूर की मशकें हैं और कहते जाते हैं هذا بما صلّيت على محمد अर्थात यह बरकतें उस दुरूद की वजह से हैं जो तूने मुहम्मद पर भेजा था।

(हक़ीक़तुल वह्य, रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 22 , पृष्ठ 131)

फिर फ़रमाया: एक बार मैं क़ूलंज ज़हीरी से सख़्त बीमार हुआ और 16 दिन पाख़ाना की राह से ख़ून आता रहा और सख़्त दर्द था जो बयान से बाहर है .....जब मेरी बीमारी इस नौबत पर पहुंच गई तो ख़ुदा तआला ने मेरे दिल पर अलका किया कि और इलाज छोड़ दो और दरिया की रेत जिसके साथ पानी भी हो तस्बीह और दुरूद के साथ अपने

बदन पर मलो। तब बहुत जल्द दरिया से ऐसी रेत मँगवाई गई और मैंने इस कलमा के साथ कि سبحان اللہ وبحمدہٖ سبحان اللہ العظیم और दुरूद शरीफ़ के साथ इस रेत को बदन पर मलना शुरू किया। हर एक बार जो जिस्म पर वह रेत पहुँचती थी तो मानो मेरा बदन आग में से नजात पाता था। सुबह तक वह सारी बीमारी दूर हो गई।

(हक़ीक़तुल वह्य, रुहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 246 हाशिया)

इसी तरह एक और स्थान पर फ़रमाते हैं:

दुरूद जो हुसूल इस्तिक़ामत का एक बेहतरीन माध्यम है बहुत अधिक पढ़ो मगर ना रस्म तथा आदत के तौर पर बल्कि रसूलुल्लाह के हुस्न तथा एहसान को मद्देनज़र रखकर और आपके मदारिज और मुरातिब की तरक़्क़ी के लिए और आपकी कामयाबियों के लिए। इसका नतीजा यह होगा कि क़बूलियत दुआ का मीठा और लज़ीज़ फल तुमको मिलेगा।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 3 पृष्ठ 38)

हमारे मौजूदा इमाम भी जमाअत के लोगों को समय समय पर दुरूद पढ़ने की तरफ़ ध्यान दिलाते रहते हैं। ख़िलाफ़त जुबली के अवसर पर हुज़ूर अनवर ने जिन दुआओं की तरफ़ ध्यान दिलाया था उन में दुरूद शरीफ़ के बारे में फ़रमाया कि कम से कम 33 बार दुरूद शरीफ़ रोज़ाना पढ़ें। फिर 11मई 2014 ई के ख़ुत्बा जुम्आ में इन दुआओं को दोहराया तो दुरूद शरीफ़ बहुत अधिक पढ़ने की नसीहत फ़रमाई। फिर जब भी दुश्मन ने हुज़ूर की बरकतों वाली ज़ात को एतराज़ का निशाना बनाया तो हुज़ूर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने जमाअत को आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर बहुत अधिक दुरूद पढ़ने की तहरीक फ़रमाई।

हुज़ूर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर करोड़ों और अरबों बार दुरूद भेजें। अत: जब तक दुरूद पर ध्यान रहेगा तो इस की बरकत से जमाअत की तरक़्क़ी और ख़िलाफ़त से सम्बन्ध और इस की हिफ़ाज़त का प्रबन्ध रहेगा। आज दुश्मन इस्लाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम पर कीचड़ उछालने की कोशिश कर रहा है इस की यह कोशिश सिवाए इसके बुरे अंजाम के इस को कोई भी नतीजा नहीं दिला सकती लेकिन उसकी इस घृणित कोशिश के नतीजा में हम अहमदी यह अहद करें कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर करोड़ों और अरबों बार दुरूद भेजें।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 18 अप्रैल 2008 ई)

फिर फ़रमाते हैं: अत: जहां ऐसे वक़्त में जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ एक तूफ़ान बदतमीज़ी मचा हुआ है यक़ीनन अल्लाह तआला के फ़रिश्ते आप पर दुरूद भेजते होंगे,भेज रहे होंगे, भेज रहे हैं। हमारा भी काम, जिन्होंने अपने आपको आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस सच्चे आशिक़ और ज़माना के इमाम के सिलसिला और इस की जमाअत से सम्बद्ध किया हुआ है, ये है कि अपनी दुआओं को दुरूद में ढाल दें और फ़िज़ा में इतना दुरूद, सिदक़ दल के साथ बिखेरें कि फ़िज़ा का हर कण दुरूद से महक उठे। और हमारी सारी दुआएं इस दुरूद के माध्यम से ख़ुदा तआला के दरबार में पहुंच कर क़बूलीयत का दर्जा पाने वाली हूँ। यह है इस प्यार और मुहब्बत का इज़हार जो हमें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात से होना चाहिए और आप की आल से होना चाहिए।

(ख़ुत्बात मसरूर, भाग 4, पृष्ठ 115)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम दुरूद शरीफ़ की बरकतों और इस की रुहानी प्रभाव के बारे में फ़रमाते हैं:

दुरूद शरीफ़ के जितनी भी फ़ज़ीलतें बयान की जाएं कम हैं। मैं ख़ुद इसका साहिब तजुर्बा हूँ। मुझ पर जो ख़ुदा तआला के इनाम हैं। दुरूद शरीफ़ की बरकतों और तासीर का इस में ज़्यादा हिस्सा है। दुरूद शरीफ़ का विर्द करने वाला ना सिर्फ सवाब परलोक का सवाब पाता है बल्कि वह इस दुनिया में भी इज़्ज़त पाता है। लेकिन बावजूद उस के मैं किसी ऐसे दुरूद का क़ाइल नहीं कि जो इन्सान को ख़ुदा से बेनयाज़ कर दे और जिसके विर्द के बाद क़ज़ा तथा क़दर के आदेश ख़ुदा तआला के हाथ में ना रहें बल्कि दुरूद पढ़ने वाला उन पर हाकिम हो जाए। इस मुक़ाम पर हुज़ूर के कलाम में जोश के आसार नुमायां हो गए और चेहरे पर सुर्ख़ी आ गई और फ़रमाया कि बेशक दुरूद शरीफ़ की बड़ी बरकतें और प्रभाव हैं ओर उसकी प्रचुरता से इन्सान पर बरकतें नाज़िल होती हैं और उसकी बरकत से दुआएं क़बूल होती हैं और उसके बेशुमार फ़ज़ाइल हैं। लेकिन बावजूद इसके इन्सान को कभी ख़ुदा तआला की बेपरवाई और बेनियाज़ी से ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिए। कभी ऐसा भी वक़्त होता था कि जिस नबी अकरम पर दुरूद भेज कर लोग ख़ैर तथा बरकत पाते थे। ख़ुद उसे भी ख़ुदा के आदेशों के आगे स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई रास्ता ना था। अत: दुरूद ख़ूब पढ़ो और कसरत से पढ़ो। मगर इस बात को भी हमेशा सामने रखो और ख़ुदा तआला को क़ादिर और बेनयाज़ ख़ुदा समझो और तस्लीम और रज़ा पर ईमान की बुनियाद रखो।

(मक्तूबात बनाम हज़रत मौलाना मुहम्मद इस्माईल साहिब हलालपूरी मनक़ूल रिसाला दुरूद शरीफ़ 292)

आख़िर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दुआ के शब्दों के साथ अपने मज़मून को ख़त्म करता हूँ। आप फ़रमाते हैं:

हे प्यारे ख़ुदा उस प्यारे नबी पर वह रहमत और दुरूद भेज जो दुनिया के आरम्भ से तूने किसी पर ना भेजा हो। हे ख़ुदा अगर यह महान नबी दुनिया में ना आता तो फिर जितने छोटे छोटे नबी दुनिया में आए हैं उनकी सच्चाई पर हमारे पास कोई तर्क ना होता।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

पृष्ठ 1 सम्पादकीय का शेष

अलैहिस्सलाम का यही जवाब वास्तव में पाठकों की सेवा में पेश करना हमारा मक़सद है। विशेष रूप से वह हिस्सा जिस में क़ैसर रुम ने आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पैर धोने की इच्छा का इज़हार किया।

पादरी फ़तह मसीह आफ़ फ़तहगढ़ ज़िला गुरदासपुर ने एक ख़त में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर व्यभिचार का आरोप लगाया और बहुत से शब्द गाली गलौच के इस्तिमाल किए। पादरी ने हज़रत आयशा सिद्दीक़ा के बारे में लिखा कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत आयशा से नौ वर्ष की आयु में शादी की और इस को पादरी फ़तह मसीह ने व्यभिचार क़रार दिया। उस के जवाब में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लिखा :

"प्रथम तो 9 वर्ष का वर्णन आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ुबान से साबित नहीं और न उस बारे में कोई वह्ई हुई और न क्रमागत हदीसों से साहिब हुआ कि वास्तव में 9 वर्ष ही थे। केवल एक वर्णन कर्ता से वर्णन है। अरब के लोग जंत्रियाँ नहीं रखा करते थे क्योंकि अनपढ़ थे। और दो-तीन साल की कमी तथा अधिकता उनकी हालत को देखकर एक साधारण सी बात है। जैसे कि हमारे देश में भी अक्सर अनपढ़ लोग दो-चार वर्ष के अन्तर को अच्छी तरह याद नहीं रख सकते थे । फिर अगर फर्ज़ के तौर पर मान भी लें कि सचमुच दिन-दिन का हिसाब करके 9 वर्ष ही थे। लेकिन फिर भी कोई बुद्धिमान ऐतराज़ नहीं करेगा मगर मूर्ख का कोई इलाज नहीं हम आपको अपनी किताब में साबित करके दिखाएँगे कि वर्तमान के खोजी डाक्टर इस पर सहमत हैं कि ९ वर्ष तक भी लड़कियाँ व्यस्क हो सकती हैं। बल्कि सात वर्ष तक की आयु में भी सन्तान हो सकती हैं और बड़े-बड़े अनुभवों से डाक्टरों ने इसको साबित किया है और ख़ुद सैकड़ों लोगों की यह बात आँखों देखी है कि इसी देश में आठ-आठ नौ-नौ वर्ष की लड़कियों के यहाँ औलाद मौजूद है। मगर आप पर तो कुछ भी अफ़सोस नहीं और न करना ही चाहिए, क्योंकि आप केवल हठधर्म और तंगनज़र ही नहीं बल्कि पहले दर्जे के मूर्ख भी हैं।

पादरी का बुरा इरादा तो देखें कि लिखता है कि अगर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम गावर्मेंट अंग्रेज़ी की प्रजा होते तो आप से क्या व्यवहार होता। मानो नऊज़ बिल्लाह आप कैद में होते।

आपको अब तक इतना भी पता नहीं कि सरकार के कानून प्रजा की माँग के अनुसार उसकी रस्म और समाज के साधारण तौर तरीकों के आधार पर तैयार होते हैं। .... जो बार-बार गावर्नमेन्ट अंग्रेज़ी का नाम लेते हैं ....हम इसको गल्तियों से निर्दोष नहीं समझते और न उसके क़ानूनों को युक्तिपूर्ण खोजों पर बने हुए समझते हैं। बल्कि क़ानूनों के बनाने का उसूल प्रजा की बहुमत पर है। गवर्नमेन्ट पर कोई वह्ई नहीं उतरती ताकि वह अपने कानून में ग़ल्ती न करे। अगर ऐसे ही कानून सुरक्षित होते तो हमेशा नए-नए क़ानून क्यों बनते रहते। ब्रिटेन में लड़कियों के वयस्क होने की आयु 18 वर्ष ठहराई गई है मगर गर्म देशों में तो लड़कियाँ बहुत जल्द व्यस्क हो जाती हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने फरमाया

अगर सरकार के कानून ख़ुदा की किताबों की तरह त्रुटि से खाली नहीं तो उनका वर्णन करना या तो मूर्खता के कारण है या धार्मिक द्वेष के कारण से। मगर आप विवश हैं। अगर सरकार को अपने क़ानून पर विश्वास था तो क्यों उन डाक्टरों को सज़ा नहीं दी जिन्होंने अभी निकट ही यूरोप में बड़ी जाँच पड़ताल से 9 वर्ष बल्कि 7 वर्ष कई औरतों के व्यस्क होने का समय ठहराया है।

नौ वर्ष की आयु के बारे में आप ऐतराज़ करके फिर तौरैत या इन्जील का कोई प्रमाण न दे सके केवल गवर्नमेन्ट के क़ानून का वर्णन किया। इससे ज्ञात हुआ कि आप का तौरात और इन्जील पर ईमान नहीं रहा। अन्यथा नौ वर्ष का निषेध या तो तौरात से साबित करते या इन्जील से साबित करना चाहिए था। पादरी साहिब यही तो दजल (झूठ) है कि इल्हामी किताबों के विषय विवाद में आपने गवर्नमेन्ट के कानून को प्रस्तुत कर दिया।

आपकी ईमानदारी यह थी कि आप इंजील से इसको साबित करते। इन्जील ने आपको धक्के दिए और वहाँ कुछ न मिला तो गवर्नमेन्ट के पैरों पर पड़े । याद रखें कि यह गालियाँ केवल पैशाचिक द्वेष से हैं। पवित्र नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुराचार का आरोप लगाना यह पैशाचिक प्रवृत्ति लोगों का काम है। इन दो पवित्र नबियों अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम पर कुछ नीच और दुष्ट प्रकृति लोगों ने बहुत झूठे आरोप लगाए हैं। अत: उन अधर्मियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को व्यभिचारी कहा जैसा कि आप ने और दूसरे को अवैध संतान कहा जैसा कि अधर्मी यहूदियों ने। आपको चाहिए कि ऐसे ऐतराज़ों से बचें।

पादरी की इस बात पर कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस समय अगर गवर्नमेन्ट की प्रजा होते तो नऊज़ बिल्लाह आप को सज़ा दी जाती इस का जवाब में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कुछ इस तरह के इल्ज़ामी जवाब से पादरी की सेवा की है कि निसन्देह उस के दिमाग़ की सारी गर्मी दूर हो गई होगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने फरमाया

अगर आप के निकट गवर्नमेन्ट को कानून का सारी बातें ग़लतियों से पाक हैं और इल्हामी किताबों की तरह बल्कि इस से उत्तम हैं तो मैं आप से पूछता हूं कि जनि नबियों ने अंग्रेज़ी कानून के ख़िलाफ कई लाख दूध पीते बच्चों को कत्ल किया अगर वे इस समय होते है तो गवर्नमेन्ट उन से क्या मामला करती।

अगर वे लोग गावर्मेन्ट के सामने चालान हो कर आते जिन्होंने दूसरे खेतों से बालियां तोड़ कर खा लीं थीं गावर्मेन्ट उन को और उन की आज्ञा देने वालों को क्या क्या सज़ा देती।

फिर मैं पूछता हूं कि वह आदमी जो इंजीर का फल तोड़ने वाला था और इन्जील से प्रमाणित है कि वह वृक्ष उस का नहीं था बल्कि दूसरे का था। अगर वह आदमी गावर्मेन्ट के सामने यह हरकत करता तो गावर्मेन्ट उस को क्या सज़ा देती।

इन्जील से यह भी प्रमाणित है कि बहुत से सूअर जो बेगाना माल थे और जिन का संख्या पादरी कलार्क के अनुसार 2 हज़ार थी मसीह ने मारे अब आप ही बताऐं कि कानून का दृष्टि से उस की क्या सज़ा थी। इस समय केवल इतना लिखना ही काफी है जवाब ज़रूर दें ताकि और बहुत से सवाल किए जाएं।

पादरी साहिब का यह प्रश्न के अगर आज इस प्रकार का आदमी जैसे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे गावर्मेन्ट अंग्रेज़ी के ज़माना में होता तो गवर्नमेन्ट इस से क्या करती। आपको विदित हो कि अगर वह सैयदुल कौनेन इस गवर्नमेन्ट के ज़माने में होते तो यह भाग्यशाली गवर्नमेन्ट उनके जूते उठाने को अपना गर्व समझती जैसे कि रोम का बादशाह केवल फोटो देखकर उठ खड़ा हुआ था। आपकी यह मूर्खता और दुर्भाग्य है कि इस गवर्नमेन्ट पर ऐसी बद्गुमानी रखते हैं कि मानो वह ख़ुदा के अवतारों की दुश्मन है। यह गवर्नमेन्ट इस ज़माने में छोटे-छोटे मुसलमान लीडरों का सम्मान करती है। देखो नसरुल्ला खान जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुलामों जैसा भी दर्जा नहीं रखता। देखो हमारी तेजस्वी महारानी विक्टोरिया ने उसका कैसा सम्मान किया। फिर वह महामान्य पवित्र अस्तित्व रखने वाला जिसका इस संसार

में वह स्थान था कि बादशाह उसके चरणों पर गिरते थे अगर वह इस समय में होता तो यह गवर्नमेन्ट नि:सन्देह उससे सेवकाना और आवभगत का व्यवहार करती। ख़ुदा की गवर्नमेन्ट के आगे इन्सानी गवर्नमेन्टों को विनम्रता और विनीतता के अलावा कुछ नहीं बन पड़ता। क्या आपको ज्ञात नहीं कि कैसर रोम जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में ईसाई बादशाह था और इस गवर्नमेन्ट से प्रताप में कुछ कम न था । वह कहता है कि यदि मुझे यह सौभाग्य प्राप्त होता कि मैं उस महान नबी की संगति में रह सकता तो मैं उनके पाँव धोया करता। अत: जो रोम के बादशाह ने कहा नि:सन्देह यह भाग्यवान गवर्नमेन्ट भी वही बात कहती, बल्कि इससे बढ़कर कहती। अगर हज़रत मसीह के बारे में उस समय के किसी छोटे से जागीरदार ने भी यह बात कही हो जो रोम के बादशाह ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में कहा था जो आज तक स्पष्ट रूप से इतिहास और हदीसों में मौजूद है, तो हम आपको अभी एक हज़ार रुपया नकद इनाम के तौर पर देंगे अगर आप साबित कर सकें। और अगर आप यह सुबूत न दे सकें तो इस लज्जाजनक ज़िन्दगी से आपके लिए मरना अच्छा है। क्योंकि हमने साबित कर दिया कि रोम का बादशाह इस बड़ी गवर्नमेन्ट के समतुल्य था। बल्कि इतिहास से ज्ञात होता है कि उस ज़माने में उसकी ताक़त के बराबर दुनिया में और कोई ताक़त मौजूद न थी, हमारी गवर्नमेन्ट तो इस दर्जे तक नहीं पहुँची। फिर जब रोम का बादशाह राजा होते हुए आह भर कर यह बात कहता है कि अगर मैं उस महामान्य की सेवा में पहुँच सकता तो उस पवित्रात्मा के पाँव धोया करता। तो क्या यह गवर्नमेन्ट उससे कम सम्मान करती। मैं दावे से कहता हूँ कि अवश्य यह गवर्नमेन्ट भी ऐसे महान नबी के पाँव में गिरना अपना गर्व समझती। क्योंकि यह गवर्नमेन्ट उस आसमानी बादशाह की इन्कारी नहीं जिसकी ताक़तों के आगे इन्सान एक मरे हुए कीड़े के बराबर भी नहीं। हमने एक विश्वस्त सूत्र से सुना है कि हमारी महारानी विक्टोरिया वास्तव में इस्लाम से मुहब्बत रखती है और उसके दिल में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बड़ा सम्मान है। ..... अत: यह बहुत बड़ी ग़लती है कि आप लोग इस मर्तबाशनास गवर्नमेन्ट को भी एक नीच और कमीना पादरी की तरह सोचते हैं। जिन को ख़ुदा राजपाट और धन दौलत देता है उनको विवेक और बुद्धि देता है। हाँ अगर यह सवाल प्रस्तुत हो कि यदि कोई ऐसा व्यक्ति इस गवर्नमेन्ट के साम्राज्य में यह शोर मचाता है कि मैं खुदा हूँ या खुदा का बेटा हूँ तो गवर्नमेन्ट उसका निवारण क्या करती ? तो इसका जवाब यही है कि यह मेहरबान गवर्नमेन्ट उसको किसी डाक्टर के सुपुर्द करती ताकि उसके दिमाग का उपचार हो या उस बड़े घर में क़ैद रखती जैसा कि लाहौर में इस प्रकार के बहुत से लोग एकत्रित हैं ।

अगर यह कहो कि किस किताब में लिखा है कि क़ैसर-ए-रोम ने यह इच्छा की थी कि यदि मैं महामान्य नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पहुँच सकता तो मैं एक नाचीज़ सेवक बनकर पाँच धोया करता। इसके जवाब में आपके लिए क़ुरआन शरीफ के बाद दूसरी सर्वमान्य किताब बुखारी शरीफ की इबारत लिखता हूँ ज़रा आँखें खोल कर पढ़ो और वह यह है :-

وَقَدْ كُنْتُ اَعْلَمُ اَنَّهٗ خَارِجٌ وَلَمْ اَكُنْ اَظُنُّ اَنَّهٗ مِنْكُمْ فَلَوْ اَنِّيْ اَعْلَمُ اِنِّيْ اَخْلُصُ اِلَيْهِ لَتَجَشَّمْتُ لِقَاءَهٗ وَلَوْ كُنْتُ عِنْدَهٗ لَغَسَلْتُ عَنْ قَدَمَيْهِ

अर्थात यह तो मुझे ज्ञात था कि नबी आख़िरुज्ज़मान आने वाला है मगर मुझ को यह पता नहीं था कि वह तुम में से ही (हे अरब वालो) पैदा होगा। अत: यदि मैं उसकी सेवा में पहुँच सकता तो मैं बहुत ही कोशिश करता कि उसका दर्शन मुझे प्राप्त हो और अगर मैं उसकी सेवा में होता तो मैं उसके पाँव धोया करता। अब अगर कुछ ग़ैरत और शर्म है तो मसीह के लिए यह सम्मान किसी बादशाह की ओर से जो उस काल में था प्रस्तुत करो और नकद एक हज़ार रुपया हम से लो और कोई आवश्यक नहीं कि इन्जील से ही प्रस्तुत करो बल्कि चाहे गन्दगी में पड़ा हुआ कोई पन्ना ही दिखा दो और अगर कोई बादशाह या मुखिया नहीं तो कोई छोटा सा नवाब ही प्रस्तुत कर दो और याद रखो कि कभी भी प्रस्तुत न कर सकोगे। अत: यह दु:ख भी जहन्नुम (नर्क) के दु:ख से कुछ कम नहीं कि ख़ुद ही बात को उठाकर ख़ुद ही मुल्ज़िम हो गए । शाबाश ! शाबाश ! खूब पादरी हो।

आज भी सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात अक़्दस पर आरोपों की सिलसिला जारी है। मुसलमानों की भी बड़ी बदक़िस्मती है कि वह भी ख़ुदा के एक बुज़ुर्ग नबी मसीह मौऊद तथा महदी मौऊद अलैहिस्सालम की तौहीन में सब से बढ़ कर हैं। अल्लाह तआला ऐसे लोगों को अक़ल और समझाता करे जो ख़ुदा के नबी की तौहीन करके अपनी दुनिया तथा आख़िरत तबाह करते हैं।

(मंसूर अहमद मस्त्ररूर)

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

पृष्ठ 18 का शेष

आप सल्लल्लाहो घर वालों को कैसे हक देते थे।

फिर आप अपने घर वालों के हक़ अदा कैसे करते थे। वह काम जो पत्नियों के करने वाले थे उनमें भी उनका हाथ बंटाते थे। अत: हज़रत आयशा ही फरमाती हैं कि जितना समय आप घर पर होते थे घर वालों की मदद और सेवा में व्यस्त रहते थे यहाँ तक कि आप को नमाज़ का बुलावा आ जाता और आप मस्जिद पधारते।

(सहीह अल्बुख़ारी हदीस 676)

अत: यह है वह उस्वा जो हम ने अपनाना है और हमें अपनाना चाहिए न कि पत्नियों ऐसा व्यवहार जो अत्याचार के बराबर हो। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहो अन्हा अपने घरेलू कार्यों का विवरण बयान फरमाते हुए फरमाती हैं कि इसी तरह अपने कपड़े भी ख़ुद सी लेते थे जूते टांक लिया करते थे घर का डोल आदि मरम्मत कर लिया करते थे।

(उमदतुल कारी शरह सहीह अल्बुख़ारी हदीस 676 जिल्द 5 पृष्ठ 298)

अत: इन नमूनों को सामने रखते हुए बहुत से परिवारों को अपना आत्मनिरीक्षण करना चाहिए और इस पर ध्यान देना चाहिए कि क्या इनके घरों में यह व्यवहार हैं यह व्यवहार है?

अपने सहाबा को पति के कर्तव्यों और उसके व्यवहार की गुणवत्ता के बारे में एक अवसर पर फरमाया जो हजरत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि मोमिनों में पूर्ण ईमान वह है जिस की चरित्र अच्छे हैं और तुम में से चरित्र के अनुसार सबसे अच्छा वह है जो अपनी औरतों के लिए बेहतर है।

(सुनन अत्तिरमज़ी हदीस 1162)

अत: हर व्यक्ति जो अपनी पत्नियों से अच्छा व्यवहार नहीं है समीक्षा करनी चाहिए कि अच्छे आचरण और पत्नियों से अच्छे व्यवहार का प्रदर्शन केवल ज़हरी अच्छा चरित्र नहीं है बल्कि आपने फ़रमाया कि ईमान की गुणवत्ता की ऊंचाई का भी संकेत है।

☆ ☆ ☆

☆ ☆